विविधा

भाग 1

कक्षा 11 (आधार पाठ्यक्रम) की हिंदी की पूरक पाठ्यपुस्तक

संपादक

सत्येंद्र वर्मा



राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

प्रथम संस्करण
सितम्बर 2002
भाद्रपद 1924

ISBN 81-7450-081-2

PD 200T DRH

एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन विभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. कैम्पस	108, 100 फीट रोड, होस्डेकेरे	नवजीवन ट्रस्ट भवन	सी.डब्ल्यू.सी. कैम्पस
श्री अरविंद मार्ग	हेली एक्सटेंशन बनाशंकरी III इस्टेज	डाकघर नवजीवन	32, बी.टी. रोड सुखचर
नई दिल्ली-110 016	**बेंगलूर 560 085**	**अहमदाबाद 380 014**	**24 परगना 743 179**

प्रकाशन सहयोग

संपादन : दयाराम हरितश
उत्पादन : प्रमोद रावत
राजेन्द्र चौहान

आवरण
अमित श्रीवास्तव

रु. 11.00

एन.सी.ई.आर.टी. वाटर मार्क 70 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित ।

प्रकाशन विभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविन्द मार्ग, नई दिल्ली 110016 द्वारा प्रकाशित तथा न्यू भारत ऑफसेट प्रिंटर्स, बी -124, सैक्टर -VI, नोएडा 201301 द्वारा मुद्रित।

आमुख

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के तत्त्वावधान मे विद्यालयी स्तर पर विभिन्न शैक्षिक विषयों के लिए पाठ्यचर्या एवं तदनुरूप पाठ्यक्रम तथा पाठ्यपुस्तकों के निर्माण का कार्य लगभग चार दशको से हो रहा है। इसी क्रम में राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) के लागू होने पर तर्दार्निहित सिद्धांतों, सुझावों और उद्देश्यों के अनुसार उपयुक्त शिक्षण सामग्री एवं पाठ्यपुस्तकों का निर्माण किया गया, जिनमें बाल-केंद्रित शिक्षा एवं शिक्षार्थियों के सर्वांगीण विकास के उद्देश्यों पर विशेष ध्यान दिया गया ।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) में यह सुझाव भी दिया गया था कि कुछ समय के पश्चात् ज्ञान-विज्ञान के विकास, सामाजिक रचना और नवीन दृष्टिकोण तथा मूल्यपरक शैक्षिक आवश्यकताओ को देखते हुए पाठ्यचर्या, पाठ्यक्रम एवं पाठ्यपुस्तकों में यथावश्यक संशोधन और परिवर्तन अवश्य किया जाए। इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए 'विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2000' का निर्माण हुआ। तत्पश्चात् नवीन पाठ्यचर्या में सुझाए गए नवीन उद्देश्यो, जीवन मूल्यों, सूचना-संसाधनों एवं शिक्षा के व्यावहारिक पक्ष की दृष्टि से अपेक्षित शैक्षिक बिंदुओं को समाहित करते हुए विविध विषयों का नवीन पाठ्यक्रम तैयार किया गया। तदनुसार नवीन पाठ्यपुस्तकों के निर्माण का कार्य हाथ में लिया गया। इसी शृंखला में ग्यारहवी कक्षा के 'आधार पाठ्यक्रम' के लिए प्रस्तुत पूरक पाठ्यपुस्तक **विविधा** का प्रणयन किया गया है।

इस पूरक पाठ्यपुस्तक की प्रमुख विशेषताएँ इस प्रकार हैं :

1. ऐसी पाठ्यसामग्री एवं शैक्षिक क्रियाओं का समावेश, जिनसे विद्यार्थियों में राष्ट्रीय लक्ष्यों– जनतांत्रिकता, पंथनिरपेक्षता, समाजवाद, सामाजिक न्याय, समतावाद, संवैधानिक दायित्वों, मूल कर्तव्यों तथा राष्ट्रीय एकता के प्रति चेतना एवं आस्था उत्पन्न हो सके और उनमें तर्कसंगत वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास हो।

2. पाठ्यचर्या एवं पाठ्यसामग्री वर्तमान भारतीय जीवन-परिस्थितियों, समस्याओं (पर्यावरण, प्रदूषण, जनसंख्या विस्फोट आदि) तथा सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवेश पर आधारित हो और उसमें वांछित भावी विकास की दिशा भी परिलक्षित हो।

3. पाठ्यपुस्तके विद्यार्थियों के भावात्मक एवं बौद्धिक उत्कर्ष, चरित्र-निर्माण तथा स्वस्थ मनोवृत्ति के विकास की दृष्टि से प्रेरणादायी सिद्ध हों, उनके द्वारा बच्चों में अधिकाधिक ज्ञानार्जन की उत्कंठा जाग्रत हो और वे निर्धारित पाठ्यविषय तक ही सीमित न रह कर विशद एवं व्यापक अध्ययन के लिए जिज्ञासु तथा तत्पर बने रहें।

प्रस्तुत पुस्तक के निर्माण में हमें अनेक शिक्षाविदों, भाषाशास्त्रियों एवं अध्यापकों का सहयोग मिला है। मै इन सभी के प्रति हृदय से कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ। जिन लेखकों और साहित्यकारों ने अपनी रचनाएं इस पूरक पाठ्यपुस्तक में सम्मिलित किए जाने की अनुमति दी है, उनके प्रति मैं विशेष रूप से अपना आभार व्यक्त करता हूँ।

इस पुस्तक के परिष्कार के लिए शिक्षाविदों, अध्यापकों और विद्यार्थियों द्वारा व्यक्त प्रतिक्रियाओं और सुझावों का हम सदैव स्वागत करेंगे।

जगमोहन सिंह राजपूत

जनवरी 2002 — *निदेशक*

नई दिल्ली — राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

संपादकीय

उपयुक्त पाठ्यक्रम का निर्धारण एवं तदनुरूप पाठ्यपुस्तक की रचना राष्ट्रीय महत्त्व का कार्य है। राष्ट्रीय शैक्षिक योजना के क्रियान्वयन एवं शैक्षिक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए ये मूल उपादान हैं। इस महत्त्व को दृष्टि में रखते हुए राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के तत्त्वावधान में विद्यालय स्तर की शिक्षा के लिए उपयुक्त पाठ्यक्रमों एवं पाठ्यपुस्तकों के प्रणयन का कार्य होता रहा है। पर यह कार्य एक सतत विकासशील प्रक्रिया है। बदलती हुई राष्ट्रीय परिस्थितियों, आवश्यकताओं, नूतन जीवन-मूल्यों तथा वांछित विकास की दिशाओं के अनुरूप इनमें संशोधन और परिवर्तन आवश्यक हो जाता है।

इसी परिप्रेक्ष्य में परिषद् ने सन् 2000 में 'विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या' की रूपरेखा का निर्माण किया। इस पाठ्यचर्या के आधार पर विविध विषयों के पाठ्यक्रम निर्धारित किए गए। उनके अनुसार परिषद् ने सभी विषयों की नवीन पाठ्यपुस्तकों के निर्माण का काम हाथ में लिया। इसी कार्यक्रम के अंतर्गत कक्षा ग्यारह के लिए 'आधार पाठ्यक्रम' के अनुसार हिंदी की यह पूरक पाठ्यपुस्तक तैयार की गई है। इसमें ऐसे पाठों का समावेश किया गया है जिनसे विद्यार्थियो में स्वयं पढ़कर समझने की प्रवृत्ति का विकास हो और उनकी पठन रुचि का विस्तार भी।

1. इस पुस्तक में कहानी, लघुकथा, संस्मरणात्मक वर्णन, जीवनी तथा एकांकी से संबंधित पाठ संकलित हैं। इनके चयन में इस बात का ध्यान रखा गया है कि प्रत्येक विधा से संबंधित ऐसे पाठ चुने जाएँ, जिनसे उस विधा की साहित्यिक विशेषताओं का परिचय विद्यार्थियों को प्राप्त हो और वह पाठ उस विधा का प्रतिनिधित्व करने वाला भी हो।

2. पाठों के चयन में हिंदी के प्रतिनिधि साहित्यकारों का भी ध्यान रखा गया है। इनसे कृति के साथ-साथ लेखक की विधागत शैली का भी परिचय विद्यार्थियों को मिलेगा।

3. इन पाठों के चयन में विषय-सामग्री की विविधता का भी ध्यान रखा गया है। इनके माध्यम से जीवन के विविध संदर्भों और दिशाओं से विद्यार्थियों का परिचय हो सकेगा, जैसे –

   क. इस पुस्तक में तीन कहानियाँ रखी गई हैं– प्रेमचंद रचित 'जुलूस', आशापूर्णा देवी रचित 'मुक्तिदाता' (अनूदित) और शिवानी कृत 'मेरा भाई'। इन तीनों कहानियों का कथ्य जीवन के विविध पक्षों से संबंधित है। 'जुलूस' में त्याग, बलिदान और देशभक्ति के साथ-साथ दमन करने वाले अधिकारी के हृदय परिवर्तन का भी मर्मस्पर्शी चित्रण है। इसमें अहिंसात्मक सत्याग्रह आंदोलन की झलक मिलती है। आशापूर्णा देवी की कहानी 'मुक्तिदाता' में यह चित्रित किया गया है कि व्यक्ति के अवगुणों को न देखकर पहले उस पर विश्वास करो। कहानी की परिणति भी इसकी सत्यता को सिद्ध करती है। तीसरी कहानी 'मेरा भाई' में धर्म, जाति से ऊपर उठकर मानवीय संबंधों और संवेदनाओं की सार्थकता पर बल दिया गया है।

   ख. इस पुस्तक के एक पाठ में चुनी हुई चार लघुकथाएँ रखी गई हैं, जिनसे जीवन के विविध पक्षों पर प्रकाश पड़ता है। लघुकथा स्वयं एक स्वतंत्र साहित्यिक विधा के रूप में विकसित हुई है, जिसमें किसी कथा-सूत्र को लेकर अत्यंत संक्षेप में जीवन के किसी एक मनोभाव या प्रवृत्ति का वर्णन इस रूप में रहता है कि पाठक को वह प्रभावित कर लेता है।

   'रिश्ता' लघुकथा में मानवमात्र के प्रति बड़े ही स्नेह व निष्ठा के साथ निःस्वार्थ सेवा भावना का अपूर्व परिचय मिलता है। दूसरी लघुकथा 'खबर जो छप न सकी' में सांप्रदायिक दंगों के बीच प्रेम और आत्मीयता से भरे पारिवारिक जीवन का अद्भुत चित्रण है। 'अच्छा कौन' लघु कथा में संपर्क भाषा के रूप में हिंदी की सार्वदेशिक प्रकृति को बड़े ही चुटीले ढंग से व्यक्त किया गया है। 'समझ' लघुकथा में आज नौकरशाही में फैले भ्रष्टाचार का खुले रूप में पर्दाफ़ाश हुआ है।

   ग. 'मास्को से आँखो देखा हाल' पाठ संस्मरणात्मक वर्णन विधा में लिखा गया पाठ है, जिसमें भाषा की सजीवता, रोचकता और प्रवाह देखते ही बनता है।

घ. 'कर्मयोगी लाल बहादुर शास्त्री' मे लेखक ने उन्हें एक सच्चे कर्मयोगी के रूप में चित्रित किया है, जिनका जीवन स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद देश का निर्माण करने में ही व्यतीत हुआ।

ङ. 'दो कलाकार' हास्य प्रधान एकांकी हे जिसमें दो अभावग्रस्त कलाकारों (कवि और चित्रकार) के अद्भुत वाक् चातुर्य तथा सामान्य परिस्थितियों को भी हास्यपूर्ण बना देने की अद्भुत क्षमता का सुंदर चित्रण है।

4. प्रत्येक पाठ के अंत में कुछ बोधपरक प्रश्न दिए गए हैं। उनके परिप्रेक्ष्य में पाठ पढ़ने पर छात्र-छात्राओं को उसके प्रमुख भाव और विचारों को ग्रहण करने में सहायता मिलेगी और वे स्वतंत्र रूप से उनके संबंध में चिंतन और मनन भी कर सकेगे।

इस पुस्तक के निर्माण में हमें अनेक शिक्षाविदों ओर भाषाशास्त्रियों का सहयोग मिला है। इसके लिए हम उनके आभारी हैं। परिषद् के सामाजिक विज्ञान और मानविकी शिक्षा विभाग के अध्यक्ष तथा हिंदी पाठ्यपुस्तकों के प्रणयन से संबंधित सदस्यों का हमें जो अमूल्य सहयोग प्राप्त हुआ है, उसके लिए हम उनके प्रति कृतज्ञ हैं।

हिंदी भाषा का स्तर ऊँचा करने तथा विद्यार्थियों में साहित्यिक अभिरुचि का विकास करने में यदि इस पुस्तक का योगदान हो सका तो हम अपना श्रम सार्थक समझेंगे।

पाठ्यपुस्तक-निर्माण-समिति

सत्येंद्र वर्मा
प्रोफेसर (संयोजक)

सुरेश चंद्र पाण्डेय
प्रोफेसर

स्नेह लता प्रसाद
रीडर

सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली

पांडुलिपि-समीक्षा-संशोधन कार्यगोष्ठी के सदस्य

1. निरंजन कुमार सिंह
अवकाश प्राप्त रीडर
सा.वि.मा.शि.वि.
एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली

2. माणिक गोविंद चतुर्वेदी
अवकाश प्राप्त प्रोफ़ेसर
केंद्रीय हिंदी संस्थान, 'सूर्यमुखी'
श्री अरविंद मार्ग, नई दिल्ली

3. आनंद प्रकाश व्यास
अवकाश प्राप्त रीडर
शिक्षा विभाग,
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

4. कृष्ण कुमार गोस्वामी
प्रोफ़ेसर
केंद्रीय हिन्दी संस्थान, 'सूर्यमुखी'
श्री अरविंद मार्ग, नई दिल्ली

5. लोकेंद्र चतुर्वेदी
प्राचार्य
शासकीय विद्यालय
कनाडिया, इंदौर, म.प्र.

6. अमर गोस्वामी
लेखक
एफ-12, सेक्टर-12
नोएडा, गौतमबुद्ध नगर, उ.प्र.

7. दिनेश गुप्त
रीडर
पत्राचार पाठ्यक्रम एवं अनुबर्ती शिक्षा
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

8. सुरेश पंत
अवकाश प्राप्त प्रवक्ता
रा.उ.मा. बाल विद्यालय,
जनकपुरी, नई दिल्ली

9. कुसुम लता अग्रवाल
हिंदी अध्यापिका
सर्वोदय बाल विद्यालय,
रमेश नगर, नई दिल्ली

10. लक्ष्मी मुकुंद
वरिष्ठ हिंदी अध्यापिका
डी.टी.ई.ए. स्कूल, सेक्टर-4
आर.के.पुरम, नई दिल्ली

पाठ-सूची

भारत का संविधान

भाग 4अ

नागरिकों के मूल कर्त्तव्य

अनुच्छेद 51अ

मूल कर्त्तव्य- भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्त्तव्य होगा कि वह -

(क) संविधान का पालन करे और उसके आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान का आदर करे,

(ख) स्वतन्त्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आंदोलन को प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों को हृदय में सजोए रखे और उनका पालन करे,

(ग) भारत की सम्प्रभुता, एकता और अखंडता की रक्षा करे और उसे अक्षुण्ण बनाए रखे,

(घ) देश की रक्षा करे और आह्वान किए जाने पर राष्ट्र की सेवा करे,

(ङ) भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करे जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग पर आधरित सभी भेदभावों से परे हो, ऐसी प्रथाओं का त्याग करे जो महिलाओं के सम्मान के विरूद्ध हो,

(च) हमारी सामासिक संस्कृति की गौरवशाली परंपरा का महत्त्व समझे और उसका परिरक्षण करे,

(छ) प्राकृतिक पर्यावरण की, जिसके अंतर्गत वन, झील, नदी और वन्य जीव हैं, रक्षा करे और उसका संवर्धन करे तथा प्रणिमात्र के प्रति दयाभाव रखे,

(ज) वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करे,

(झ) सार्वजनिक संपत्ति को सुरक्षित रखे और हिंसा से दूर रहे, और

(ञ) व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियो के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का सतत् प्रयास करे, जिससे राष्ट्र निरंतर बढ़ते हुए प्रयत्न और उपलब्धि की नई ऊंचाइयों को छू सके।

1. जुलूस

❑ प्रेमचंद

पूर्ण स्वराज्य का जुलूस निकल रहा था। कुछ युवक, कुछ बूढ़े, कुछ बालक झंडियाँ और झंडे लिए वंदेमातरम् गाते हुए माल के सामने से निकले। दोनों तरफ़ दर्शकों की दीवारें खड़ी थीं, मानो उन्हें इस लक्ष्य से कोई सरोकार नहीं है, मानो यह कोई तमाशा है और उनका काम केवल खड़े-खड़े देखना है।

शंभूनाथ ने दुकान की पटरी पर खड़े होकर अपने पड़ोसी दीनदयाल से कहा – सब के सब काल के मुँह में जा रहे हैं। आगे सवारों का दल मार-मार भगा देगा।

दीनदयाल ने कहा – महात्मा भी सठिया गए हैं। जुलूस निकालने से स्वराज्य मिल जाता तो अब तक कब का मिल गया होता। और, जुलूस में हैं कौन लोग, देखो – लौंडे, लफंगे, सिर-फिरे। शहर का कोई बड़ा आदमी नहीं।

मैकू चट्टियों और स्लीपरों की माला गरदन में लटकाए खड़ा था। इन दोनों सेठों की बातें सुनकर हँसा।

शंभू ने पूछा – क्यों हँसे मैकू? आज रंग चोखा मालूम होता है।

मैकू – हँसा इस बात पर जो तुमने कही कि कोई बड़ा आदमी जुलूस में नहीं है। बड़े आदमी क्यों जुलूस में आने लगे, उन्हें इस राज में कौन आराम नहीं है? बँगलों और महलों में रहते हैं, मोटरों पर घूमते हैं, साहबों के साथ दावत खाते हैं, कौन तकलीफ है? मर तो

हम लोग रहे हैं, जिन्हें रोटियों का ठिकाना नहीं। इस बखत कोई टेनिस खेलता होगा, कोई चाय पीता होगा, कोई ग्रामोफ़ोन लिए गाना सुनता होगा, कोई पारिक की सैर करता होगा, यहाँ आए पुलिस के कोड़े खाने के लिए? तुमने भी भली कही!

शंभू – तुम यह सब बातें क्या समझोगे मैकू, जिस काम में चार बड़े आदमी अगुआ होते हैं, उसकी सरकार पर भी धाक बैठ जाती है। लौंडों-लफंगों का गोल भला, हाकिमों की निगाह में क्या जँचेगा?

मैकू ने ऐसी दृष्टि से देखा, जो कह रही थी – इन बातों के समझने का ठेका कुछ तुम्हीं ने नहीं लिया है और बोला – बड़े आदमी को तो हमीं लोग बनाते-बिगाड़ते हैं या कोई और? कितने ही लोग जिन्हें कोई पूछता भी न था, हमारे ही बनाए बड़े आदमी बन गए और अब मोटरों पर निकलते हैं और हमें नीच समझते हैं। यह लोगों की तकदीर की खूबी है कि जिसकी जरा बढ़ती हुई और उसने हमसे आँखें फेरी। हमारा बड़ा आदमी तो वही है, जो लँगोटी बाँधे नंगे पाँव घूमता है, जो हमारी दशा को सुधारने के लिए अपनी जान हथेली पर लिए फिरता है। और हमें किसी बड़े आदमी की परवाह नहीं है। सच पूछो तो इन बड़े आदमियों ने हमारी मिट्टी खराब कर रखी है। इन्हें सरकार ने कोई अच्छी-सी जगह दे दी, बस उसका दम भरने लगे।

दीनदयाल – नया दरोगा बड़ा जल्लाद है। चौरास्ते पर पहुँचते ही हंटर लेकर पिल पड़ेगा। फिर देखना, सब कैसे दुम दबाकर भागते हैं। मज़ा आएगा।

जुलूस स्वाधीनता के नशे में चूर चौरास्ते पर पहुँचा तो देखा, आगे सवारों और सिपाहियों का एक दस्ता रास्ता रोके खड़ा है।

सहसा दरोगा बीरबल सिंह घोड़ा बढ़ाकर जुलूस के सामने आ गए और बोले – तुम लोगों को आगे जाने का हुक्म नहीं है।

जुलूस के बड़े नेता इब्राहीम अली ने आगे बढ़कर कहा – मैं आपको इतमीनान दिलाता हूँ, किसी किस्म का दंगा-फ़साद न होगा। हम दुकानें लूटने या मोटरें तोड़ने नहीं निकले हैं। हमारा मकसद इससे कहीं ऊँचा है।

बीरबल – मुझे यह हुक्म है कि जुलूस यहाँ से आगे न जाने पाए।

इब्राहीम – आप अपने अफ़सरों से ज़रा पूछ न लें।

बीरबल – मैं इसकी कोई ज़रूरत नहीं समझता।

इब्राहीम – तो हम लोग यही बैठते हैं। जब आप लोग चले जाएँगे तो हम निकल जाएँगे।

बीरबल – यहाँ खड़े होने का भी हुक्म नहीं है। तुमको वापस जाना पड़ेगा।

इब्राहीम ने गंभीर भाव से कहा – वापस तो हम न जाएँगे। आपको या किसी को भी, हमें रोकने का कोई हक नही। आप अपने सवारों, संगीनों और बंदूकों के ज़ोर से हमें रोकना चाहते हैं, रोक लीजिए; मगर आप हमें लौटा नहीं सकते। न जाने वह दिन कब आएगा, जब हमारे भाई-बंद ऐसे हुक्मों की तामील करने से साफ़ इनकार कर देंगे, जिनकी मंशा महज़ कौम को गुलामी की ज़ंजीरों में जकड़े रखना है।

बीरबल ग्रैजुएट था। उसका बाप सुपरिंटेंडेंट पुलिस था। उसकी नस-नस में रोब भरा हुआ था। अफ़सरों की दृष्टि में उसका बड़ा सम्मान था। खासा गोरा-चिट्टा, नीली आँखों और भूरे बालों वाला तेजस्वी पुरुष था। शायद जिस वक्त वह कोट पहनकर ऊपर से हैट लगा लेता, तो भूल जाता था कि मैं भी यहाँ का रहने वाला हूँ। शायद वह अपने को राज्य करने वाली जाति का अंग समझने लगता था; मगर इब्राहीम के शब्दों में जो तिरस्कार भरा हुआ था, उसने ज़रा देर के लिए उसे लज्जित कर दिया। पर मुआमला नाज़ुक था। जुलूस को रास्ता दे देता है, तो जवाब तलब हो जाएगा; वहीं खड़ा रहने देता है, तो यह सब न जाने कब तक खड़े रहें। इस संकट में पड़ा हुआ था कि उसने डी.एस.पी. को घोड़े पर आते देखा। अब सोच-विचार का समय न था। यही मौका था कारगुज़ारी दिखाने का। उसने कमर से बेटन निकाल लिया और घोड़े को एड़ लगाकर जुलूस पर चढ़ाने लगा। उसे देखते ही और सवारों ने भी घोड़ों को जुलूस पर चढ़ाना शुरू कर दिया। इब्राहीम दरोगा के घोड़े के सामने खड़ा था। उसके सिर पर एक बेटन ऐसे ज़ोर से पड़ा कि उसकी आँखें तिलमिला गई। खड़ा न रह सका। सिर पकड़कर बैठ गया। उसी वक्त दरोगाजी के घोड़े ने दोनों पाँव उठाए और ज़मीन पर बैठा हुआ

इब्राहीम उसके टापों के नीचे आ गया। जुलूस अभी तक शांत खड़ा था। इब्राहीम को गिरते देखकर कई आदमी उसे उठाने के लिए लपके, मगर कोई आगे न बढ़ सका। उधर सवारों के डंडे बड़ी निर्दयता से पड़ रहे थे। लोग हाथों पर डंडों को रोकते थे और अविचलित रूप से खड़े थे। हिंसा के भावों में प्रवाहित न हो जाना उनके लिए प्रतिक्षण कठिन होता जाता था। जब आघात और अपमान ही सहना है, तो फिर हम भी इस दीवार को पार करने की क्यों न चेष्टा करें? लोगों को खयाल आया, शहर के लाखों आदमियों की निगाहें हमारी तरफ़ लगी हुई हैं। यहाँ से यह झंडा लेकर लौट जाएँ, तो फिर किस मुँह से आज़ादी का नाम लेंगे; मगर प्राण-रक्षा के लिए भागने का किसी को ध्यान भी न आता था। यह पेट के भक्तों, किराए के टट्टुओं का दल न था। यह स्वाधीनता के सच्चे स्वयंसेवकों का, आज़ादी के दीवानों का *संगठित दल था। अपनी ज़िम्मेदारियों को खूब समझता था। कितने ही के सिरों से खून जारी* था, कितने ही के हाथ ज़ख्मी हो गए थे। एक हल्ले में यह लोग सवारों की सफ़ों को चीर सकते थे, मगर पैरों में बेड़ियाँ पड़ी हुई थी – सिद्धांत की, धर्म की, आदर्श की।

दस-बारह मिनट तक यों ही डंडों की बौछार होती रही और लोग शांत खड़े रहे।

इस मार-धाड़ की खबर एक क्षण में बाज़ार में जा पहुँची। इब्राहीम घोड़े से कुचल गए, कई आदमी ज़ख्मी हो गए, कई के हाथ टूट गए; मगर न वे लोग पीछे फिरते हैं और न पुलिस उन्हें आगे जाने देती है।

मैकू ने उत्तेजित होकर कहा – अब तो भाई, यहाँ नहीं रहा जाता। मैं भी चलता हूँ।

दीनदयाल ने कहा – हम भी चलते हैं भाई, देखी जाएगी।

शंभू एक मिनट तक मौन खड़ा रहा। एकाएक उसने भी दुकान बढ़ाई और बोला – एक दिन तो मरना ही है, जो कुछ होना है, हो। आखिर वे लोग सभी के लिए तो जान दे रहे हैं। देखते-देखते अधिकांश दुकानें बंद हो गईं। वह लोग, जो दस मिनट पहले तमाशा देख रहे थे, इधर-उधर से दौड़ पड़े और हज़ारों आदमियों का एक विराट दल घटनास्थल की ओर चला। यह उन्मत्त, हिंसामद से भरे हुए मनुष्यों का समूह था, जिसे सिद्धांत और आदर्श की

परवाह न थी, जो मरने के लिए ही नहीं, मारने के लिए भी तैयार थे। कितनों ही के हाथों में लाठियाँ थी, कितने ही जेबों में पत्थर भरे हुए थे। न कोई किसी से कुछ बोलता था, न पूछता था। बस, सब-के-सब मन में एक दृढ़ संकल्प लिए लपके चले जा रहे थे, मानो कोई घटा उमड़ी चली आती हो।

इस दल को दूर से देखते ही सवारों में कुछ हलचल पड़ी। बीरबल सिंह के चेहरे पर हवाइयाँ उड़ने लगीं। डी.एस.पी. ने अपनी मोटर आगे बढ़ाई। शांति और अहिंसा के व्रतधारियों पर डंडे बरसाना और बात थी, एक उन्मत्त दल से मुकाबला करना दूसरी बात। सवार और सिपाही पीछे खिसक गए।

इब्राहीम की पीठ पर घोड़े ने टाप रख दी। वह अचेत ज़मीन पर पड़े थे। इन आदमियों का शोर-गुल सुनकर आप ही आप उनकी आँखें खुल गईं। एक युवक को इशारे से बुलाकर कहा — क्यों कैलाश, क्या कुछ लोग शहर से आ रहे है?

कैलाश ने उस बढ़ती हुई घटा की ओर देखकर कहा — जी हाँ, हज़ारों आदमी हैं।

इब्राहीम — तो अब खैरियत नहीं है। झंडा लौटा दो। हमें फ़ौरन लौट चलना चाहिए, नहीं तूफ़ान मच जाएगा। हमें अपने भाइयों से लड़ाई नहीं करनी है। फ़ौरन लौट चलो।

यह कहते हुए उन्होंने उठने की चेष्टा की, मगर उठ न सके।

इशारे की देर थी। संगठित सेना की भाँति लोग हुक्म पाते ही पीछे फिर गए। झंडियों के बाँसों, साफ़ों और रूमालों से चटपट एक स्ट्रेचर तैयार हो गया। इब्राहीम को लोगों ने उस पर लिटा दिया और पीछे फिरे। मगर क्या वह परास्त हो गए थे? अगर कुछ लोगों को उन्हें परास्त मानने में ही संतोष हो तो हो, लेकिन वास्तव में उन्होंने एक युगांतकारी विजय प्राप्त की थी। जानते थे, हमारा संघर्ष अपने ही भाइयों से है, जिनके हित परिस्थितियों के कारण हमारे हितों से भिन्न हैं। हमें उनसे वैर नहीं करना है। फिर वह यह भी नहीं चाहते कि शहर में लूट और दंगों का बाज़ार गर्म हो जाए और हमारे धर्मयुद्ध का अंत लुटी हुई दुकानें, फूटे हुए सिर हों। उनकी विजय का सबसे उज्ज्वल चिह्न यह था कि उन्होंने जनता की सहानुभूति प्राप्त

कर ली थी। वही लोग, जो पहले उन पर हँसते थे, उनका धैर्य और साहस देखकर उनकी सहायता के लिए निकल पड़े थे। मनोवृत्ति का यह परिवर्तन ही हमारी असली विजय है। हमें किसी से लडाई करने की ज़रूरत नही, हमारा उद्‌देश्य केवल जनता की सहानुभूति प्राप्त करना है, उसकी मनोवृत्तियों को बदल देना है। जिस दिन हम इस लक्ष्य पर पहुँच जाएँगे, उसी दिन स्वराज्य का सूर्य उदय होगा।

तीन दिन गुज़र गए थे। बीरबल सिंह अपने कमरे में बैठे चाय पी रहे थे और उनकी पत्नी मिट्‌ठनबाई शिशु को गोद में लिए सामने खड़ी थी।

बीरबल सिंह ने कहा – मैं क्या करता उस वक्त। पीछे डी.एस.पी. खड़ा था। अगर उन्हें रास्ता दे देता, तो अपनी जान मुसीबत में फँसती।

मिट्‌ठनबाई ने सिर हिलाकर कहा – तुम कम से कम इतना तो कर ही सकते थे कि उन पर डंडे न चलाने देते। तुम्हारा काम आदमियों पर डंडे चलाना है? तुम ज़्यादा से ज़्यादा उन्हें रोक सकते थे। कल को तुम्हें अपराधियों को बेंत लगाने का काम दिया जाए, तो शायद तुम्हें बड़ा आनंद आएगा, क्यों?

बीरबल सिंह ने खिसियाकर कहा – तुम तो बात नहीं समझती हो।

मिट्‌ठनबाई – मै खूब समझती हूँ। डी.एस.पी. पीछे खड़ा था। तुमने सोचा होगा, ऐसी कारगुज़ारी दिखाने का अवसर शायद फिर कभी मिले या न मिले। क्या तुम समझते हो, उस दल में कोई भला आदमी न था? उसमें कितने आदमी ऐसे थे, जो तुम्हारे जैसों को नौकर रख सकते हैं। विद्‌या में तो शायद अधिकांश तुमसे बढ़े हुए होंगे। मगर तुम उन पर डंडे चला रहे थे और उन्हें घोड़े से कुचल रहे थे, वाह री जवाँमर्दी!

बीरबल सिंह ने बेहयाई की हँसी के साथ कहा – डी.एस.पी. ने मेरा नाम नोट कर लिया है। सच!

दरोगाजी ने समझा था कि यह सूचना देकर वह मिट्‌ठनबाई को खुश कर देंगे। सज्जनता और भलमनसी आदि ऊपर की बातें हैं, दिल से नहीं, ज़बान से कही जाती हैं। स्वार्थ दिल की गहराइयों में बैठा होता है। वह गंभीर विचार का विषय है।

मगर मिट्ठनबाई के मुख पर हर्ष की कोई रेखा न नज़र आई, ऊपर की बातें शायद गहराइयों तक पहुँच गईं थीं! बोली – ज़रूर कर लिया होगा और शायद तुम्हें जल्द तरक्की भी मिल जाए। मगर बेगुनाहों के खून से हाथ रँगकर तरक्की पाई, तो क्या पाई! यह तुम्हारी कारगुज़ारी का इनाम नही, तुम्हारे देशद्रोह की कीमत है। एकाएक एक सिपाही ने बरामदे में खड़े होकर कहा – हुज़ूर, यह लिफ़ाफ़ा लाया हूँ। बीरबल सिंह ने बाहर निकलकर लिफ़ाफ़ा ले लिया और भीतर की सरकारी चिट्ठी निकालकर पढ़ने लगे। पढ़कर उसे मेज़ पर रख दिया।

मिट्ठनबाई ने पूछा – क्या तरक्की का परवाना आ गया?

बीरबल सिंह ने झेंपकर कहा – तुम तो बनाती हो! आज फिर कोई जुलूस निकलने वाला है। मुझे उसके साथ रहने का हुक्म हुआ है।

मिट्ठन – फिर तो तुम्हारी चाँदी है, तैयार हो जाओ। आज फिर वैसे ही शिकार मिलेंगे। खूब बढ़-बढ़कर हाथ दिखलाना! डी.एस.पी. भी ज़रूर आएँगे। अबकी तुम इंस्पेक्टर हो जाओगे। सच!

बीरबल सिंह ने माथा सिकोड़कर कहा – कभी-कभी तुम बेसिर-पैर की बातें करने लगती हो। मान लो, मैं जाकर चुपचाप खड़ा रहूँ तो, क्या नतीजा होगा। मैं नालायक समझा जाऊँगा और मेरी जगह कोई दूसरा आदमी भेज दिया जाएगा। कही शुबहा हो गया कि मुझे स्वराज्यवादियों से सहानुभूति है, तो कहीं का न रहूँगा। अगर बर्खास्त न भी हुआ, तो लैन की हाज़िरी तो हो ही जाएगी। आदमी जिस दुनिया में रहता है, उसी का चलन देखकर काम करता है। मैं बुद्धिमान न सही; पर इतना जानता हूँ कि ये लोग देश और जाति का उद्धार करने के लिए ही कोशिश कर रहे हैं। यह भी जानता हूँ कि सरकार इस खयाल को कुचल डालना चाहती है। ऐसा गधा नहीं हूँ कि गुलामी की ज़िंदगी पर गर्व करूँ लेकिन परिस्थिति से मज़बूर हूँ।

बाजे की आवाज़ कानों में आई। बीरबल सिंह ने बाहर जाकर पूछा। मालूम हुआ, स्वराज्य वालों का जुलूस आ रहा है। चटपट वरदी पहनी, साफ़ा बाँधा और जेब में पिस्तौल रखकर बाहर आए। एक क्षण में घोड़ा तैयार हो गया। कांस्टेबल पहले ही से तैयार बैठे थे। सब लोग डबल मार्च करते हुए जुलूस की तरफ़ चले।

वे लोग डबल मार्च करते हुए कोई पंद्रह मिनट में जुलूस के सामने पहुँच गए। इन लोगों को देखते ही अगणित कंठो से 'वंदेमातरम्' की एक ध्वनि निकली, मानो मेघमंडल में गर्जन का शब्द हुआ हो, फिर सन्नाटा छा गया। उस जुलूस में और इस जुलूस में कितना अंतर था! वह स्वराज्य के उत्सव का जुलूस था, यह एक शहीद के मातम का। तीन दिन के भीषण ज्वर और वेदना के बाद आज उस जीवन का अंत हो गया, जिसने कभी पद की लालसा नही की, कभी अधिकार के सामने सिर नहीं झुकाया। उन्होंने मरते समय वसीयत की थी कि मेरी लाश को गंगा में नहलाकर दफ़न किया जाए और मेरे मज़ार पर स्वराज्य का झंडा खड़ा किया जाए। उनके मरने का समाचार फैलते ही सारे शहर पर मातम का परदा-सा पड़ गया। जो सुनता था, एक बार इस तरह चौंक पड़ता था, जैसे उसे गोली लग गई हो और तुरंत उनके दर्शनों के लिए भागता था। सारे बाज़ार बंद हो गए, इक्कों और तॉगों का कहीं पता न था, जैसे शहर लुट गया हो। देखते-देखते सारा शहर उमड़ पड़ा। जिस वक्त जनाज़ा उठा, लाख-सवा-लाख आदमी साथ थे। कोई आँख ऐसी न थी, जो आँसुओं से लाल न हो।

बीरबल सिंह अपने कांस्टेबलों और सवारों को पॉच-पॉच गज़ के फ़ासले पर जुलूस के साथ चलने का हुक्म देकर खुद पीछे चले गए। पिछली सफ़ों में कोई पचास गज़ तक महिलाएँ थीं। दरोगा ने उनकी तरफ़ ताका। पहली ही कतार में मिट्ठनबाई नज़र आई। बीरबल को विश्वास न आया। फिर ध्यान से देखा, वही थीं। मिट्ठन ने उनकी तरफ़ एक बार देखा और ऑखें फेर ली, पर उसकी एक चितवन में कुछ ऐसा धिक्कार, कुछ ऐसी लज्जा, कुछ ऐसी व्यथा, कुछ ऐसी घृणा भरी हुई थी कि बीरबल सिंह की देह में सिर से पाँव तक सनसनी-सी दौड़ गई। वह अपनी दृष्टि में कभी इतने हलके, इतने दुर्बल, इतने ज़लील न हुए थे।

सहसा एक युवती ने दरोगाजी की तरफ़ देखकर कहा – कोतवाल साहब कहीं हम लोगों पर डंडे न चला दीजिएगा। आपको देखकर भय हो रहा है!

दूसरी बोली – आप ही के कोई भाई तो थे, जिन्होंने उस माल के चौरास्ते पर इस पुरुष पर आघात किए थे।

मिट्ठन ने कहा – आपके कोई भाई न थे, आप खुद थे।

बीसियों की मुँह से आवाज़ें निकली – अच्छा, यह वही महाशय हैं? महाशय आपको नमस्कार है। यह आप ही की कृपा का फल है कि आज हम भी आपके डंडे के दर्शन के लिए आ खड़ी हुई हैं!

बीरबल ने मिट्ठनबाई की ओर आँखों का भाला चलाया; मुँह से कुछ न बोले। एक तीसरी महिला ने फिर कहा – हम एक जलसा करके आपको जयमाला पहनाएँगे और आपका यशोगान करेंगे।

चौथी ने कहा – आप बिलकुल अंग्रेज़ मालूम होते हैं, तभी इतने गोरे हैं!

एक बुढ़िया ने आँखें चढ़ाकर कहा – मेरी कोख में ऐसा बालक जन्मा होता, तो उसकी गरदन मरोड़ देती!

एक युवती ने उसका तिरस्कार करके कहा – आप भी खूब कहती हैं, माताजी, कुत्ते तक तो नमक का हक अदा करते हैं, यह तो आदमी हैं!

बुढ़िया ने झल्लाकर कहा – पेट के गुलाम, हाय पेट! हाय पेट!

इस पर कई स्त्रियों ने बुढ़िया को आड़े हाथों ले लिया और वह बेचारी लज्जित होकर बोली – अरे मैं कुछ कहती थोड़े ही हूँ। मगर ऐसा आदमी भी क्या, जो स्वार्थ के पीछे अंधा हो जाए।

बीरबल सिंह अब और न सुन सके। घोड़ा बढ़ाकर जुलूस से कई गज़ पीछे चले गए। मर्द लज्जित करता है, तो हमें क्रोध आता है; स्त्रियाँ लज्जित करती हैं, तो ग्लानि उत्पन्न होती

है। बीरबल सिंह को इस वक्त इतनी हिम्मत न थी कि फिर उन महिलाओं के सामने जाते। अपने अफ़सरों पर क्रोध आया। मुझी को बार-बार क्यों इन कामों पर तैनात किया जाता है? ओर लोग भी तो हैं, उन्हें क्यों नहीं लाया जाता? क्या मैं ही सबसे गया-बीता हूँ! क्या मैं ही सवसे भावशून्य हूँ!

मिट्ठी इस वक्त मुझे दिल में कितना कायर और नीच समझ रही होगी? शायद इस वक्त मुझे कोई मार डाले, तो वह ज़बान भी न खोलेगी। शायद मन में प्रसन्न होगी कि अच्छा हुआ। अभी कोई जाकर साहब से कह दे कि बीरबल सिंह की स्त्री जुलूस में निकली थी, तो कही का न रहूँ! मिट्ठी जानती है, समझती है, फिर भी निकल खड़ी हुई। मुझसे पूछा तक नही। कोई फ़िक्र नही है न, तभी ये बातें सूझती हैं। यहाँ सभी बेफ़िक्र हैं, कॉलेजों और स्कूलों के लड़के, मज़दूर पेशेवर, इन्हें क्या चिंता? मरन तो हम लोगों का है, जिनके बाल-बच्चे हैं और कुल-मर्यादा का ध्यान है। सबकी सब मेरी तरफ़ कैसा घूर रही थीं, मानो खा जाएँगी।

जुलूस शहर की मुख्य सड़कों से गुज़रता हुआ चला जा रहा था। दोनों ओर छतो पर, छज्जों पर, जँगलों पर, वृक्षों पर दर्शकों की दीवारें-सी खड़ी थीं। बीरबल सिंह को आज उनके चेहरों पर एक नई स्फूर्ति, एक नया उत्साह, एक नया गर्व झलकता हुआ मालूम होता था। स्फूर्ति थी वृद्धों के चेहरे पर, उत्साह युवकों के और गर्व रमणियों के। यह स्वराज्य के पथ पर चलने का उल्लास था। अब उनकी यात्रा का लक्ष्य अज्ञात न था, पथभ्रष्टों की भाँति इधर-उधर भटकना न था, दलितों की भाँति सिर झुकाकर रोना न था। स्वाधीनता का सुनहला शिखर सुदूर आकाश में चमक रहा था। ऐसा जान पड़ता था कि लोगों को बीच के नालों और जंगलों की परवाह नहीं है। सब उस सुनहले लक्ष्य पर पहुँचने के लिए उत्सुक हो रहे हैं।

ग्यारह बजते-बजते जुलूस नदी के किनारे जा पहुँचा, जनाज़ा उतारा गया और लोग शव को गंगा-स्नान कराने के लिए ले चले। उसके शीतल, शांत, पीले मस्तक पर लाठी की चोट साफ़ नज़र आ रही थी। रक्त जमकर काला हो गया था। सिर के बड़े-बड़े बाल खून जम जाने से किसी चित्रकार की तूलिका की भाँति चिमट गए थे। कई हज़ार आदमी इस शहीद के अंतिम दर्शनों के लिए खड़े हो गए। बीरबल सिंह पीछे घोड़े पर सवार खड़े थे। लाठी की

चोट उन्हें भी नज़र आई। उनकी आत्मा ने ज़ोर से धिक्कारा। वह शव की ओर न ताक सके। मुँह फेर लिया। जिस मनुष्य के दर्शनों के लिए, जिसके चरणों की रज मस्तक पर लगाने के लिए लाखों आदमी विकल हो रहे हैं, उसका मैंने इतना अपमान किया! उनकी आत्मा इस समय स्वीकार कर रही थी कि उस निर्दय प्रहार में कर्तव्य के भाव का लेश भी न था, केवल स्वार्थ था, कारगुज़ारी दिखाने की हवस और अफ़सरों को खुश करने की लिप्सा थी। हज़ारों आँखें क्रोध से भरी हुई उनकी ओर देख रही थीं; पर वह सामने ताकने का साहस न कर सकते थे।

एक कांस्टेबल ने आकर प्रशंसा की – हुज़ूर का हाथ गहरा पड़ा था। अभी तक खोपड़ी खुली हुई है। सबकी ऑखें खुल गईं।

बीरबल ने उपेक्षा की – मैं इसे अपनी जवाँमर्दी नही, अपना कमीनापन समझता हूँ।

कांस्टेबल ने फिर खुशामद की – बड़ा सरकश आदमी था हुज़ूर!

बीरबल ने तीव्र भाव से कहा – चुप रहो! जानते भी हो, सरकश किसे कहते हैं? सरकश वे कहलाते हैं, जो डाके मारते हैं, चोरी करते हैं, खून करते हैं, उन्हें सरकश नहीं कहते, जो देश की भलाई के लिए अपनी जान हथेली पर लिए फिरते हों। हमारी बदनसीबी है कि जिनकी मदद करनी चाहिए, उनका विरोध कर रहे हैं। यह घमंड करने और खुश होने की बात नहीं है, शर्म करने और रोने की बात है।

स्नान समाप्त हुआ। जुलूस यहाँ से फिर रवाना हुआ।

शव को जब ख़ाक के नीचे सुलाकर लोग लौटने लगे तो दो बज गए थे। मिट्ठनबाई स्त्रियों के साथ-साथ कुछ दूर तक तो आई, पर क्वीन्स पार्क में आकर ठिठक गई। घर जाने की इच्छा न हुई। वह जीर्ण, आहत, रक्तरंजित शव, मानो उसके अंतस्तल में बैठा उसे धिक्कार रहा था। पति से उसका मन इतना विरक्त हो गया था कि अब उसे धिक्कारने की भी उसकी इच्छा न थी। ऐसे स्वार्थी मनुष्य पर भय के सिवा और किसी चीज़ का असर हो सकता है, इसका उसे विश्वास ही न था।

वह बड़ी देर तक पार्क में घास पर बैठकर सोचती रही, पर अपने कर्तव्य का कुछ निश्चय न कर सकी। मायके जा सकती थी, किंतु वहाँ से महीने-दो महीने में फिर इसी घर आना पड़ेगा। नहीं, मैं किसी की आश्रित न बनूँगी। क्या मैं अपने गुज़र-बसर को भी नहीं कमा सकती? उसने स्वयं भाँति-भाँति की कठिनाइयों की कल्पना की; पर आज उसकी आत्मा में न जाने इतना बल कहाँ से आ गया था। इन कल्पनाओं को ध्यान में लाना ही उसे अपनी कमज़ोरी मालूम हुई।

सहसा उसे इब्राहीम अली की वृद्धा विधवा का खयाल आया। उसने सुना था, उनके लड़के-बाले नहीं हैं। बेचारी बैठी रो रही होगी। कोई तसल्ली देनेवाला भी पास न होगा। वह उनके मकान की ओर चली। पता उसने पहले ही अपने साथ की औरतों से पूछ लिया था। वह दिल में सोचती जाती थी – मैं उनसे कैसे मिलूँगी, उनसे क्या कहूँगी, उन्हें किन शब्दों में समझाऊँगी? इन्हीं विचारों में डूबी हुई वह इब्राहीम अली के घर पर पहुँच गई।

मकान एक गली में था, साफ़-सुथरा, लेकिन द्वार पर हसरत बरस रही थी। उसने धड़कते हुए हृदय से अंदर कदम रखा। सामने बरामदे में एक खाट पर वह वृद्धा बैठी हुई थी, जिसके पति ने आज स्वाधीनता की वेदी पर अपना बलिदान दिया था। उसके सामने सादे कपड़े पहने एक युवक खड़ा, आँखों में आँसू भरे वृद्धा से बातें कर रहा था। मिट्ठन उस युवक को देखकर चौंक पड़ी – वह बीरबल सिंह थे।

उसने क्रोधमय आश्चर्य से पूछा – तुम यहाँ कैसे आए?

बीरबल सिंह ने कहा – उसी तरह जैसे तुम आईं। अपने अपराध क्षमा कराने आया हूँ।

मिट्ठन के गोरे मुखड़े पर आज गर्व, उल्लास और प्रेम की जो उज्ज्वल विभूति नज़र आई, वह अकथनीय थी! ऐसा जान पड़ा, मानो उसके जन्म-जन्मांतर के क्लेश मिट गए हैं। वह चिंता और माया के बंधनों से मुक्त हो गई है।

बोध-प्रश्न

1. मैकू ने किसे बड़े आदमी का दर्जा दिया और क्यों?
2. शहर से लोगों के आने की खबर सुनकर इब्राहीम ने तुरंत लौट चलने को क्यों कहा?
3. 'अबकी तुम इंस्पेक्टर हो जाओगे। सच!' मिट्ठनबाई के इस कथन में कौन-सा भाव छिपा है? बीरबल सिंह ने इस पर क्या स्पष्टीकरण दिया?
4. पठित अंश के आधार पर शहीद के मातम पर निकले जुलूस का ऑखों देखा हाल सुनाइए।
5. इब्राहीम अली की वृद्धा विधवा के समक्ष बीरबल को देखकर मिट्ठनबाई की मनोदशा का चित्रण कीजिए।
6. नारी प्रतिकूल परिस्थितियों में भी न केवल अपना मार्ग तय कर सकती है, वह परिवेश को बदल भी सकती है – इस परिप्रेक्ष्य में मिट्ठनबाई का चरित्र-चित्रण कीजिए।

2. मुक्तिदाता

❑ आशापूर्णा देवी

"आदमी के ऊपर भरोसा करना सीखो, देबू, दुनिया में हर चीज़ अविश्वसनीय नहीं होती। शायद परिस्थितियों के दबाववश..."

सत्यव्रत अपने स्वभाव के अनुसार भारी और मद्‌धिम स्वर में बोले -- "मैं कह रहा हूँ न, बच्चा है, अपराधी नहीं है। परिस्थिति के दबाववश..."

देवव्रत के स्वर में एक व्यंग्य उतर आया। उसके होठों के कोने में एक व्यंग्यात्मक हँसी उतर आई।

वह बोला -- "अगर कोई बच्चा पक्के चोर की तरह पाइप के सहारे ऊपर चढ़कर घर में घुस आए, फिर भी!"

"वो तो मैं देख ही चुका हूँ कि वह आया है। लेकिन बात यह है कि...," बात क्या है, सत्यव्रत पूरा न कर सके। रसोईघर की तरफ़ से नीहारकणा आ गई। पिता-पुत्र की बातों का कुछ अंश उनके कानों में पड़ चुका था। तभी इस रंगमंच पर उनका आविर्भाव हुआ था।

नीहारकणा के हाथों में एक गीला गमछा था और वे उसे ही झाड़ते-झाड़ते चली आ रही थीं और वे उसे झाड़ते-झाड़ते ही बीच में बोल पड़ी थीं -- "क्या बात है रे देबू? उस अभागे लड़के को पुलिस को न देकर वैसे ही छोड़ देना होगा?"

देवव्रत व्यंग्य और क्षोभ के स्वर में बोला -- "अगर छोड़ देना होता तब तो फिर भी अच्छा था। उसे घर में रखना होगा और अपने अच्छे व्यवहारों से उसको बदलना होगा।"

नीहारकणा लगभग चिल्लाने जैसी आवाज़ में बोलीं – "और तुम सुने जा रहे हो? इनकी बात छोड़ो। इस मुँहझौंसे लड़के को थाने में दे आओ। क्या पता, इसी के सहारे किसी बड़े गैंग का पता चल जाए। नही, तुम चाय पीकर संतोष को साथ लेकर तुरंत निकल जाओ। हाथ का बंधन खोलने से पहले उसकी जेब टटोल लेना, कहीं कोई चाकू-फाकू न रखा हो!"

सत्यव्रत चौंक पड़े – "क्या! उसका हाथ बाँध रखा है?"

नीहारकणा तेज़ स्वर में बोली – "नहीं? हाथ खुला छोड़ देने पर पता नहीं क्या कर बैठे, कुछ पता है?"

सत्यव्रत एकदम धीमे स्वर में बोले – "उस कमरे में बाहर से ताला लगा दिया है कि नही?"

"वो तो लगा दिया था। क्या पता, ताला खुला छोड़ देने से वो चाकू-फाकू लेकर मारने को दौड़ पड़े। साँप पर विश्वास किया जा सकता है? जा, देबू! बहू चाय लेकर बैठी है। पीकर उस पाप को विदा कर आओ।"

देवव्रत माँ के इस ज़ोरदार निर्देश पर भी छूटते ही बोल पड़ा था – "जब तक घर के मालिक की आज्ञा नहीं होगी, तब तक यह कैसे संभव हो सकेगा?"

बोलकर चला गया था।

समस्या बहुत जटिल हो गई थी।

पिछली रात, लगभग आधी रात के आस-पास अचानक नीहारकणा की नींद खुली तो उन्हें महसूस हुआ कि खिड़की से ठंडी-ठंडी हवा आ रही है और बारिश होने वाली है। इसी के साथ उन्हें याद आया कि कल शाम को अचार का बरतन तो वे छत पर से लाई ही नहीं थीं। अगर कहीं पानी बरस गया तो सारा अचार चौपट हो जाएगा। तब फेंकने के सिवा और कोई रास्ता भी नहीं बचेगा। यही सोचते-सोचते नीहारकणा आलस त्यागकर बिछौने से उठकर छत पर आईं।

सीढ़ी के दरवाज़े में भीतर से सिटकिनी लगी थी। अचानक उन्होंने देखा कि कोई एक आदमी उसे फटाक से खोलकर निकला चला जा रहा है।

नीहारकणा इतनी डरपोक नहीं हैं जो वे भूत के बारे में सोचेंगी।

फटाक से उन्होंने छत पर की सामने की बत्ती का स्विच ऑन कर दिया और ज़ोर से बोली -- "कौन है रे? कौन है वहाँ?"

वहाँ जो भी था, जब उसकी कोई आवाज़ नही आई कि "मैं हूँ" तब उन्होंने रक्षार्थ चिल्लाना शुरू कर दिया -- "चोर!चोर!"

अतएव आस-पास की खिड़कियाँ खुल गईं और लोग जग गए। शब्दों को लक्ष्य कर सभी लोग आश्चर्य से उसी घर की तरफ़ देखने लगे और अपनी-अपनी छतों पर चढ़ आए। सभी के हाथों में कुछ-न-कुछ हथियार था। मालिक की बहू और नौकर संतोष ने मिलकर उसे घेर लिया।

बेचारे चोर को भागने की कोई गुंजाइश नही रह गई। हाथों-हाथ पकड़ लिया गया।

बारह-तेरह साल का एक लड़का। फटी हुई एक सूती हाफ़ पैंट और पीठ पर फटी हुई एक बनियान पहने हुए।

संतोष ने उसका हाथ पकड़कर खींचते हुए रोशनी के सामने ले आकर खड़ा कर दिया। और, उसी समय सबको लगा कि यह चेहरा कुछ पहचाना-पहचाना-सा लग रहा है।

"तू कौन है?"

लड़के ने संतोष की वज्रमुट्ठी की पकड़ को छुड़ाने की कोशिश करते हुए कहा- "कोई नहीं।"

"कोई नहीं? बेटा, बदमाश, शैतान! बोल, कौन है तू?"

उससे कुछ नहीं बोला गया। तभी नीहारकणा की तेज़ और खोजी निगाह ने सवाल का जवाब तलाश लिया। उनकी तेज़ आवाज़ ने रात के आसमान को भी चीर डाला – "तुम पारुल के बेटे कन्हाई हो न?"

लड़का कुछ देर तक वैसे ही गरदन झुकाए हुए खड़ा रहा और हाथ छुड़ाने की कोशिश करते हुए अपना परिचय छिपाने की कोशिश भी करता रहा। "किसी पारुल को मैंने कभी नहीं देखा," बोला, फिर वह रो पड़ा – "हाथ तोड़ डालोगे क्या? मैं कह रहा हूँ न, छोड़ दो।"

सत्यव्रत बोले – "छोड़ दो, संतोष। उसकी हड्डी भी टूट सकती है।"

अंततः संतोष ने छोड़ ही दिया।

लड़का हाथ पर फूँक मारकर सहलाते हुए बोला – "ओह !ऐसा मरोड़ दिया, जैसे स्क्रू टाइट कर दिया हो। उँगलियाँ तो खुल ही नहीं रही हैं।"

पारुल कभी इसी घर में बरतन माँजने आया करती थी। कन्हाई नाम के अपने ढाई-तीन साल क बच्चे को साथ लेकर काम करने आती थी एवं बच्चे के हाथ में बासी रोटी अथवा पावरोटी का टुकड़ा थमाकर काम में लग जाती थी। किंतु बच्चा रोना बंद नही करता था। सत्यव्रत अपने हाथ का अखबार नीचे रखते हुए बोलते– "ओ रे बाबा – ये कन्हाई तो चुप ही नहीं हो रहा! इसे कुछ और दो न, भाई।"

नीहारकणा गुस्से में बोलतीं – "आते ही दे दिया था।"

फिर भी मूढ़ी या बिस्कुट ले आकर दे जातीं। न देने से भी काम नहीं चलता। बच्चे के रोने से तंग आकर अगर काम अधूरा छोड़कर पारुल जाने को मजबूर हो तो? पारुल निहारकणा की बहुत प्यारी थी। जितना ही अच्छा काम करती थी उतना ही उसका नम्र व्यवहार था। काम में मन लगाती थी। कभी तबीयत भी नहीं खराब होती थी उसकी।

नीहारकणा बोलतीं – "तुम्हारा बेटा थोड़ा और बड़ा हो जाए, पारुल, तो मैं उसे स्कूल में भरती करा दूँगी, रोना-धोना कम कर देगा।"

बड़े होने पर उसका रोना-धोना कम हो गया। फिर भी स्कूल में भरती नहीं हो सका। स्कूल के नाम पर कन्हाई सैकड़ों मील दूर भागता। किंतु वही कन्हाई घरों में खोज-खोजकर कामों में हाथ बँटाता।

"ओह! दादू के जूतों पर इतनी धूल! घर में कोई ब्रश नहीं है?" वह ब्रश खोजकर ले आता और जूतों को झाड़कर साफ़ कर देता।

"ओह, सीढ़ियों पर पता नहीं किसने अखबार फैला रखा है?" और वह बैठे-बैठे सीढ़ियों पर बिखरे अखबार को इकट्ठा करके सीढ़ी की खिड़की पर रख देता।

बहुत फुरती से काम करता।

तो इस लड़के को कौन स्कूल भेजने जाए? यह तो अपने-आप नौकर का दर्जा पाता जा रहा था और तब तक संतोष इस घर में नहीं आया था। बहू भी नहीं आई थी। नीहारकणा को उसकी वजह से बहुत आराम मिलता था। अचानक जवानी में ही हैज़े के कारण पारुल की मृत्यु हो गई।

नीहारकणा माथे पर हाथ मारती हुई लोगों से कहती फिरतीं – "मैंने यह तो ज़रूर सुना था कि बरतन माँजनेवाली, कपड़े धोनेवाली छोड़कर चली गई है, लेकिन यह कहीं नहीं सुना था कि मर गई है। मन-ही-मन सोच रही थी कि इस बार का उसका महीना उसके घर भेज दूँगी।"

कन्हाई की माँ के मर जाने के बाद उसकी बुआ आकर उसे उठा ले गई। तब कन्हाई सात साल का था।

इतने दिनों बाद वही कन्हाई!

कठोर गठन वाला। प्रबल तार्किक चेहरा।

"चोर हो गया है, बदमाश कहीं का? और इसी घर में चोरी करने घुसा था? नमकहराम, पाजी।"

वह बदमाश यह प्रतिवाद कर रहा था कि वह चोरी करने की नीयत से नहीं घुसा था बल्कि...

"क्या बल्कि? बोल! बोल शैतान, क्या बल्कि?"

"उन सबों ने कहा कि तू इस घर की एक-एक चीज़ के बारे में जानता है, किसी भी तरह इस घर में घुसकर बीच का दरवाज़ा खोल दे, पाँच रुपए देंगे। ओह! बहुत सिखाया था। पैसा तो खाक मिलेगा, उलटा पकड़े ही गए।"

ऐसा नहीं कि इतनी बात बता देने से उसको मार पड़नी बंद हो जाएगी। और वह भी तब जबकि देवव्रत और संतोष दोनों वहाँ उपस्थित हों। बल्कि और ज़ोरदार-ज़ोरदार थप्पड़ पड़ने लगे और साथ ही पुलिस के हाथ में सौंप देने की धमकी भी मिल रही थी।

मार की अतिशयता सहन न कर पाने के बाद सत्यव्रत बोले – "अगर इस अभागे को यही 'फिनिश' कर दोगे तो फिर पुलिस को क्या दोगे? तुम्हें यह तो पता है न कि कानून को अपने हाथ में लेना अपराध है! पुलिस अगर उसके बदन पर मार के निशान देखेगी तो हम लोगों का भी चालान कर सकती है।"

पुलिस के डर से नहीं, बल्कि पिताजी के प्रतिवाद के कारण देबू ने उसे पीटना बंद कर दिया। संतोष भी पीछे हट गया। तभी नीहारकणा ने आज्ञा दी कि इस नमकहराम को सीढ़ी के नीचे कोयलेवाले कमरे में बंद करके ताला लगा दो। सुबह पुलिस को दे आना।

तभी कन्हाई ने प्रतिवाद किया – "पुलिस को क्यों? मैंने आपका कुछ चुराया तो नहीं है!"

इस समय सत्यव्रत बोले – "चोरी नही की है, लेकिन चोरों की सहायता तो की है! दरवाज़ा खोलने का मतलब क्या है? मतलब नहीं समझते? छिः, सिर्फ पाँच रुपए के लिए तुमने..."

कन्हाई के आक्रोश पर जैसे पानी पड़ गया। और उस पानी से कहीं ज़्यादा उसकी आँखों से पानी झरने लगा।

"सिर्फ़ पाँच रुपए। आहा! तीन दिन से कुछ खाया नहीं था, इसीलिए।"

"ओह! बातें तो बहुत ऊँची कर लेते हो। तुम्हारी उम्र तो काम करने की हो ही गई है, करते क्यों नहीं?"

कन्हाई अवज्ञा के स्वर मे बोला – "ओह, काम। जैसे मेरे लिए ही पूरे देश में काम फैला पड़ा है। कहीं दिलवा दो न काम। देखूँ ज़रा, कितनी ताकत है आप में!"

यह वाचालता और किसी को चाहे जैसी लगी हो लेकिन नीहारकणा की बहू को सहन नहीं हो पाई।

वह उस भीड़ को लक्ष्य करके अथवा शायद आत्मगत भाव से ही बोली – "इस मुक्तांगन में यह नाटक रात-भर ऐसे ही चलता रहेगा क्या? अब मेरा धैर्य जवाब दे रहा है। मैं सोने जा रही हूँ," और इतना कहकर जम्हाई लेती हुई वह नीचे उतर गई।

उसी क्षण नाटक का पटाक्षेप हुआ। देबू जल्दी-जल्दी संतोष के साथ उसे ले जाकर सीढ़ी के नीचे कोयलेवाले कमरे में बंद करके ताला लगा आया। उस कमरे में कभी कोयला रखा जाता था, इसलिए उस कमरे का नाम ही कोयलेवाला कमरा पड़ गया था।

उस कमरे में अब क्या है?

क्या नहीं है? कोयले के अलावा सब कुछ है अर्थात् घर के जितने भी फालतू सामान हैं, सब। हालाँकि वे सब सामान कभी काम नहीं आएँगे, फिर भी पता नही किस ज़माने से जान से लगाकर रखे गए हैं। इस कमरे में जो सबसे अधिक मात्रा में हैं वो हैं – तिलचट्टे।

सत्यव्रत एक बार दबे स्वर में बोले – "उस लड़के को उस कमरे में रातों-रात तिलचट्टे साफ़ कर जाएँगे।"

देवव्रत बोला – "तो ऐसा है कि आप ही ले जाकर उसे अपने कमरे में सुला लीजिए।"

सत्यव्रत फिर भी बेहया होकर (यद्यपि दबी आवाज़ में ही) नीहारकणा से आग्रह करते हुए बोले – "बोल रहा था कि तीन दिन से कुछ खाया नहीं है, घर में कुछ है नहीं?"

नीहारकणा भस्म कर देनेवाली नज़रों से देखते हुए बोलीं – "क्या? उसे इस समय रोटी बना के खिलानी पड़ेगी? बलिहारी जाऊँ! तीन दिन से खाया नहीं। उसकी बात पर विश्वास कर लिया तुमने? उसे खाने की कमी है?"

यह थी पिछली रात की कहानी।

और सुबह की कहानी यों है – सत्यव्रत ने अपने बेटे के सामने इच्छा प्रकट की कि कन्हाई को थाना-पुलिस के हाथों में मत दो। इसे पहले की ही तरह काम पर लगाकर देखना ठीक रहेगा।

देवव्रत एकदम से गुस्से में बोल पड़ा – "क्या देखेंगे? किसी दिन अपने गैंग को बुलाकर पूरा घर साफ़ करवा देगा कि नहीं?"

और संतोष ने झट से जवाब दिया – "उसको अगर रखेंगे तो मैं यह घर छोड़कर चला जाऊँगा, दादा बाबू। बाद में कुकर्म वो करेगा और लगेगा मुझको।"

फिर भी बिना किसी संकोच के सत्यव्रत बोले – "आदमी के ऊपर विश्वास करना सीखो, देबू। दुनिया में हर चीज़ अविश्वसनीय नही होती। शायद परिस्थितियों के दबाववश..."

और फिर बोले – "मैं कहता हूँ कि वो अभी बच्चा है, अपराधी नहीं है। उसे एक चांस दिया जाना चाहिए। शायद उसका जीवन सुधर जाए।"

नीहारकणा ने तो इस बात को एक पागल आदमी का प्रलाप कहकर उड़ा दिया था, किंतु देबू ने घोषणा कर दी थी कि जब तक घर के मालिक का हुक्म नहीं मिलता, वह कुछ भी नहीं कर सकता।

किंतु किसी ने यह सोचा तक नहीं था कि इस कठिन समय में भी सत्यव्रत इस तरह की दुःसाहसिक बात बोल जाएँगे। किंतु वे बोल गए। हलका-सा हँसते हुए बोले – "घर के मालिक का बदनाम उत्तरदायित्व निर्वाह करना ही पड़ेगा, एक बार ही सही, कुछ तो वसूल हो।"

"अर्थात्?"

"क्या मतलब?"

"इसका मतलब ये कि कन्हाई इसी घर में रहेगा।"

"ओ! लेकिन इसके बाद अगर..."

"अगर इस तरह के झंझट में दुबारा तुम लोग फँसते हो तो मुझे भी चोर, गुंडा करार देकर थाने में चालान करवा देना।"

नीहारकणा ने अनुभव किया कि वे एक इस्पात के दरवाज़े के सामने खड़ी हैं। अतएव अब वे कुछ नहीं कर सकतीं, उस दर्पहारी के सामने एकमात्र प्रार्थना करने के अलावा।

कन्हाई रह गया।

उसके परिवार के लिए कुछ देना भी तय हो गया एवं सबके साथ उसे भी भर पेट चाय और पावरोटी खाने को दिया गया। उसके हड्डियों-भरे चेहरे पर परितृप्ति का भाव देखा गया।

पराजिता नीहारकणा ने दर्पहारी के सामने कितनी प्रार्थनाएँ करने के बाद संतोष को निर्देश दिया कि वह उसे अपनी आँखों के सामने ही रखे।

संतोष उदासीन स्वर में बोला – "मैं क्या उसे अपनी आँखों के सामने रखूँगा। मैं तो देख रहा हूँ कि वो तो बाबू की आँख की पुतली हो गया है। दिन भर 'कन्हाई-कन्हाई' आवाज़ सुनाई देती रहती है।"

"और मेरे कहने पर विश्वास नहीं होगा" – कन्हाई ने अभियोग के स्वर में कहा – "मेरी खाने की थाली नहीं है। तुमने फेंक दी है? क्या वो तुम्हें काट रही थी, दीदी माँ? लाओ, अब मुझे दूसरी थाली ढूँढ़कर दो। उस अपने कोयलेवाले कमरे में रखे टूटे-फूटे बरतनों में से छाँटकर दो। ठीक-ठीक काम लायक लाना।"

यही है कन्हाई की वाक्य-भंगिमा।

सत्यव्रत नाम का वह आत्मस्थ प्रौढ़ व्यक्ति क्या उसकी इसी वाक्य-भंगिमा पर आकृष्ट हुआ है? या यह उसकी परीक्षण-निरीक्षण की कोई शैली है?

क्या इतने समय में जल्दी से पहचान जाने का दु:साहस उनमें नही है? और इधर नीहारकणा तो अपने दर्पहारी की क्षमता देखकर उल्लसित हो रही हैं। पीछे-पीछे बेटे-बहू मज़ाक उड़ाते हैं। और, वह बदमाश संतोष का बच्चा तो सामने ही दाँत बाहर निकालकर बोलता है –

"कच्चे खीरे खाने के लिए अभी आपको बहुत इंतज़ार करना पड़ेगा, मौसा। आपको अभी खीरा बोना पड़ेगा, फिर पानी देना पड़ेगा और पौधे को बढ़ाने के लिए मचान बाँधना पड़ेगा। तब इसके बाद कच्चे खीरे खाने को मिलेंगे।"

हाँ। बात कुछ कच्चे खीरे की-सी ही है। तीन-चार दिन बाद ही कन्हाई को बुलाकर सत्यव्रत ने पूछा – "तुमने खीरा देखा है, कन्हाई? कच्चा है कि पका, तुम पहचान सकते हो?"

"ओ माँ! लो सुन लो बात। पहचान क्यों नहीं पाऊँगा? अगर कच्चा होगा तो नाखून से दबाने पर उसमें से दूध निकलेगा और पका होगा तो नहीं निकलेगा।"

"अच्छा-अच्छा, ठीक है। मैं समझ गया कि तुम पहचान जाओगे। जादवपुर बाज़ार तो देखा है न?"

"सुन लो बात। वहीं तो जम्मो-कम्मो को बुलाने गया था।"

"ठीक है। देर तो नहीं लगाओगे?"

"बिलकुल नहीं। यूँ जाऊँगा और यूँ आऊँगा। लाओ, पैसा लाओ।"

सत्यव्रत ने उसके उत्फुल्ल चेहरे की तरफ़ देखते हुए बीस का नोट आगे बढ़ा दिया।

कन्हाई थोड़ी देर ठिठककर बोला– "अरे बापरे! ये तो बहुत सारे रुपए हैं। इतने खीरे कौन खाएगा, दादू?"

"धत्, मूर्ख-कहीं का। पूरे पैसे का थोड़े न ले आना है। पाँच रुपए का लेना। बाकी हिसाब करके वापस लेते आओगे न?"

"क्यों नहीं लाऊँगा। पहले दुकानदार से बाएँ हाथ में पंद्रह रुपए ले लूँगा, तब दाहिने हाथ से उसे यह नोट दूँगा।"

"कहीं दुकानदार तुम्हें बच्चा समझकर ठग तो नहीं लेगा?"

"इस्स। ठगाने के लिए मैं ही बचा हूँ?"

वह तेज़ी से बाहर निकल गया और तुरंत ही वापस आकर खड़ा हो गया – "दादू, ज़रा एक मज़बूत थैली हो तो दे दो न, दुकानदार बहुत कमज़ोर थैली देते हैं। आधे रास्ते में ही फट जाती हैं।"

सत्यव्रत बोले- 'मैं कहाँ से थैली लाऊँगा?'

इसके बाद उन्होंने एक विदेशी मैगज़ीन के मोटे ब्राउन पेपर की थैली कन्हाई के हाथों में पकड़ा दी।

दूसरे ही पल कन्हाई हवा हो गया।

यह नाटकीय दृश्य नीहारकणा से छिपा न रह सका। वे उसे देख ही रही थी। लड़के के बाहर निकलते ही वे बहुत शांत स्वर में बोलीं- 'अचानक कच्चा खीरा खाने की इतनी इच्छा कैसे जाग गई?'

सत्यव्रत हँसते हुए बोले – "ऐसे ही। मन में आया कि मूढ़ी के साथ खीरा खाया जाए।"

"इसीलिए पाँच रुपए का खीरा..."

"ओहो! मैं क्या अकेले खाऊँगा? सभी खाएँगे। पाँच रुपए का बहुत तो मिलेगा नहीं!"

नीहारकणा अग्राह्य स्वर में बोलीं – "सबके खाने की अगर बात थी तो संतोष भी तो ले आ सकता था!"

"हाँ, सकता क्यों नहीं था? मैंने सोचा, लड़के को थोड़ी-सी तालीम देने की भी तो ज़रूरत है!"

"हॉ, तो उसके लिए पाँच रुपए का नोट नहीं था?"

"मेरे पास नहीं था।"

"ठीक है। देखते रहना, दो ठो खीरा ले आकर रख देगा और बोलेगा कि दुकानदार ने बाकी पैसे वापस ही नहीं किए।"

बस। वह गया तो वापस ही नहीं लौटा। सुबह बीत गई, शाम बीत गई, रात बीत गई, न तो खीरे लौटे, न तो कन्हाई।

इस बीच संतोष दो-तीन बार जादवपुर बाज़ार में देख आया। पूरा बाज़ार ढूँढ़ मारा। और वह खुशीपूर्वक बूढ़े की तरफ़ उँगलियाँ दिखाते हुए बोला – "अरे मौसी माँ, मुझे तो कन्हाई बाबू कही भी नहीं दिखे।"

इस डेढ़ दिन में सत्यव्रत अपने घर में हँसी का पात्र बनकर रह गए।

किंतु सत्यव्रत ने उन बातों का बुरा नही माना। उन्होंने सोचा कि इतनी बड़ी हार होनी थी उनकी! एक विश्वासघात हुआ है उनके साथ। यह तो मानना ही पड़ेगा कि सत्यव्रत ने एक बहुत बड़ी भूल की है।

बड़ी हैरानी की बात है। बीस रुपए के सामान्य-से लालच में एक आश्रय और एक निश्चित भोजन का ठिकाना, सब कुछ गँवा बैठा! इसे क्या मूर्ख कहेंगे या अपराधी? या इसकी समूची जाति को ही अपराधी कहेंगे।

सत्यव्रत भीतर से बहुत टूट गए थे। जब देबू भी पिता की तरफ देखकर विद्रूप हँसी हँसता तो वे और भी कुंठित हो उठते। नीहारकणा बार-बार बोलतीं – "आखिर देख लिया न मुँहझौंसे को? तुम्हारे बीस रुपए कितने दिन चलेंगे! आँय! मौज करके खाता था। नखरे के साथ रहता था।"

कन्हाई की कहानी यहीं समाप्त हो सकती थी। किंतु यह तो कुछ नया नहीं है। ऐसी घटनाएँ तो बहुत होती रहती हैं।

किंतु वह मोटे ब्राउन पेपर का लिफ़ाफ़ा कहानी को दूसरे पृष्ठ पर उतार लाया, शायद इसे ही कहते हैं 'संयोग'।

गाड़ी के नीचे आ गए एक असहाय बच्चे को मानवतावश जिन लोगों ने रास्ते से उठाकर अस्पताल पहुँचाया था, उन लोगों ने यह भी काम किया कि बच्चे की छाती से चिपके लिफ़ाफ़े और धूल में पड़े चार खीरों को भी उठाकर उसके साथ ही अस्पताल में जमा करा दिया था।

फिर अस्पताल के कर्मचारियों में इतनी एनर्जी थी कि उस लिफ़ाफ़े के पते से सत्यव्रत सेन का घर ढूँढ़कर उनको ये सूचित कर दिया कि 'अगर आप इस बच्चे को देखना चाहते हैं तो जल्दी आ जाइए। अब यह बहुत देर तक ज़िंदा नहीं रह पाएगा।'

यह सब संयोग नहीं तो और क्या है!

बहुत कम समय रह गया था।

सत्यव्रत कातर भाव से बोले– "तुम जादवपुर बाज़ार न जाकर 'ठाकुर' कैसे चले गए, कन्हाई?"

कन्हाई पीड़ा में ही बोला – "वहाँ कच्चे खीरे नहीं थे, दादू। तो एक लारी पाजी..."

सत्यव्रत अपना माथा पकड़कर बैठ गए। निःश्वास छोड़ते हुए।

जब वह वेदना से तड़फड़ाने लगता तब भी सत्यव्रत के चेहरे पर एक प्रशांति की स्पष्ट चमक दिखाई देती थी। शायद यह चमक कृतज्ञता की थी। शायद उस लड़के के ऊपर किए गए विश्वास की।

बोध-प्रश्न

1. कन्हाई सारे परिवार का कोपभाजन क्यों हो गया था?
2. माँ के ज़ोरदार निर्देश पर भी देवव्रत ने कन्हाई को घर से क्यो नहीं निकाला?
3. कन्हाई के किन-किन गुणों से सत्यव्रत उसकी ओर आकृष्ट हुए?
4. सत्यव्रत अपने ही घर में हँसी का पात्र क्यों बन गए?
5. अस्पताल के अधिकारी बालक की दुर्घटना की खबर सत्यव्रत तक पहुँचाने में कैसे सफल हुए?
6. कन्हाई के प्रति नीहारकणा के रूखे व्यवहार के पीछे परिवार के प्रति उसके उत्तरदायित्व की भावना भी एक कारण हो सकती है— इस दृष्टि से नीहारकणा का चरित्र-चित्रण कीजिए।
7. 'अविश्वास भरे वातावरण में भी मानवता जीवित है'— इस कथन के परिप्रेक्ष्य में कहानी के संदेश को स्पष्ट कीजिए।

3. मास्को से आँखों देखा हाल

❑ जसदेव सिंह

सन 1980 मे 19 जुलाई से 3 अगस्त तक तत्कालीन सोवियत संघ की राजधानी मास्को में आयोजित बाईसवें ओलंपिक खेलों की 'कवरेज' के लिए जाने के आदेश जब मुझे मिले, मैं रोमांचित था। मास्को तब उस देश की राजधानी था, जिसे सारी दुनिया 'आइरन कर्टेन' (लोहे के आवरण) से ढका देश मानती थी। इस बार भी सूचना और प्रसारण मंत्रालय ने दो और कमेंटेटरों के नाम जोड़ दिए थे। अर्थात् चार कमेंटेटरों का दल था हमारा – दो हिंदी और दो अंग्रेज़ी। 1976 में मांट्रियल खेलों के लिए पाँच कमेंटेटर भेजे गए थे, जबकि उसका कोई विशेष लाभ नहीं था। कमेंटेटरों की संख्या बढ़ाए जाने के बावजूद 'कवरेज' उतनी ही रहती थी, जितनी 1964 से 1972 तक दो कमेंटेटर कर दिया करते थे -- वही प्रतिदिन आधे घंटे की एक रिपोर्ट, जिसमें कुछ खेलों, विशेषकर जिनमें भारतीय खिलाड़ी भाग लेते थे और उनके पराजित हो बाहर हो जाने की स्थिति में फिर जो महत्त्वपूर्ण स्पर्धाएँ बचती थीं, उनके आँखों देखे विवरण के अंश और जहाँ-जहाँ संभव होता था, कुछ छोटी-छोटी भेंटवार्ताएँ सम्मिलित की जाती थीं। 1972 के म्यूनिख ओलंपिक्स से हॉकी के उन तमाम 'पूल' मैचों की कमेंट्री, जिनमें भारतीय हॉकी टीम खेलती थी, और दोनों सेमी-फ़ाइनल और फ़ाइनल (भले ही उनमें भारतीय टीम हो या न हो), की कमेंट्री सीधे प्रसारित की जाने लगी थी। हॉकी कमेंट्री के सीधे प्रसारण से व्यक्तिगत रूप से मुझे अवश्य ही लोकप्रियता मिली। कारण शायद यही कि मैदान में गेंद कहाँ है, किस टीम के पाले में है, कब किस खिलाड़ी से किस खिलाड़ी को मिली आदि के साथ-साथ जिस नगर में खेल हो रहा होता है, मैं बीच-बीच में अवसर मिलने पर उस नगर

या देश की खेल परंपराओं, नामी खिलाड़ियों, इतिहास, बिख्यात इमारतों, मौसम, रीति-रिवाज आदि की जानकारी भी दे दिया करता हूँ।

1972 में म्यूनिख ओलंपिक 'कवर' करने के बाद दिल्ली लौटने पर एक भेंट के दौरान मेरा परिचय मिलने पर अपने दूतावास में कार्यरत एक जर्मन महिला श्रीमती बासाक ने समस्त औपचारिकताओं को परे रख सीधे ही मुझसे आदेशात्मक स्वर में कहा था, 'ओपन योर माउथ' (अपना मुँह खोलो)। मुझे बड़ा अजीब लगा, बुरा भी। वहाँ कुछ जर्मन और भारतीय भी खड़े थे। मेरे दिमाग में एक बात आई, 'कहीं मेरे मुँह से बदबू तो नहीं आ रही थी?' इतने में फिर उस महिला ने ज़िद पकड़ ली, 'ओपन योर माउथ। आई वाँट टु सी इट'। मुझे थोड़ा गुस्सा भी आ रहा था। तभी पास ही खड़े जर्मन दूतावास के पुस्तकालय के एक भारतीय अधिकारी जगदीश प्रसाद ने हिंदी में कहा, 'जसदेव जी, मुँह खोल दीजिए, देखें तो क्या चाहती है?' मैंने पूरा मुँह खोल दिया। मेरे और निकट आकर उस महिला ने मेरे मुँह में झाँकते हुए जो कुछ कहा, उसे सुन सारा स्थल उपस्थित लोगों के कहकहों से गूँज उठा। महिला के शब्द थे, 'हाउ यू स्पोक सो फास्ट, नो मोटर इन योर माउथ'। आखिर बात खुली। उन दिनों देश में टी.वी. तो था नही। महिला सहित दूतावास के सभी जर्मन कर्मचारी आकाशवाणी से हॉकी की हिंदी-अंग्रेज़ी कमेंट्री सुना करते थे। जर्मनी उस बार चैंपियन रहा था। उस महिला को हिंदी तो समझ में आती नहीं थी, पर मेरी कमेंट्री की गति से वह आश्चर्यचकित अवश्य थी।

बात मास्को ओलंपिक्स से शुरू हुई थी। औरों की तरह मुझे भी उस देश को देखने और जानने की उत्सुकता थी। सोवियत संघ से तब भी और अब उसके विघटन के बाद भी, अलग-अलग बँटे उसके देशों से हमारे संबंध बराबर मधुर और मैत्रीपूर्ण बने हुए हैं। उन दिनों सोवियत संघ में कौन मित्र है, कौन नहीं, वहाँ के लोग ही आपस में नहीं जान पाते थे, तो हम तो विदेशी थे। मास्को हवाई अड्डे पर ही जिस तरह के अनुभव हुए, उसी से उस देश की सुरक्षा व्यवस्था का ज्ञान हो गया था। भारतीय दूतावास में कार्यरत अपने कुछ मित्रों के लिए मैं चाय, राजमा और कुछ दालें आदि ऐसी चीज़ें ले गया था, जो उन दिनों वहाँ नहीं मिलती

थीं। हवाई अड्डे के अधिकारियों ने सिवाय डिब्बाबंद चाय के सभी चीज़ें रोक ली। आश्वासन दिया कि निरीक्षण के बाद मुझे मेरे होटल में वापस भेज देंगे, पर वैसा नहीं हुआ। अन्य कुछ खिलाड़ी भी ऐसा कुछ खाने का सामान दालें आदि ले गए थे, वह सब हवाई अड्डे पर ही रोक लिया गया।

सोवियत संघ ने उन दिनों वहाँ आनेवाले खेल प्रेमियों और पर्यटकों के लिए अपने नियमों में काफ़ी नरमी कर दी थी। रेडियो मास्को ने अपने घरेलू प्रसारणों में अंग्रेज़ी समाचार और कार्यक्रमों की संख्या बढ़ा दी थी। उन दिनों ज़मीन के नीचे चलनेवाली मैट्रो रेलगाड़ियों में रूसी भाषा के साथ-साथ स्टेशनों के नामों की घोषणा अंग्रेज़ी में भी की जाने लगी थी। हालत यह थी कि विभिन्न खेलों के प्रारंभिक मुकाबलों को देखने के लिए सभी स्टेडियम दर्शकों से पूरी तरह भरे रहते थे। हाँ, सुरक्षा व्यवस्था बहुत ही कड़ी कर दी गई थी – साधारणतः जैसी होती थी उससे भी बहुत अधिक। शायद ऐसा इस आशंका से भी किया जा रहा था कि बहिष्कार करने वाले देशों में से कोई उन खेलों को भंग करने के लिए कोई ऐसी-वैसी कार्यवाही न कर दे। हमें लगभग हर दिन ही कड़ी सुरक्षा व्यवस्था का सामना करना होता था। कभी-कभी जब हम भारतीय पत्रकार अपना पीछा करते किसी को देखते या अपनी तलाशी के समय सोवियत संघ के सर्वोच्च सुरक्षा विभाग के.जी.बी. की चर्चा एक-दूसरे से करते तो बजाय के.जी.बी. कहने के, उसका उल्लेख 'कृष्ण-गोविंद-बलदेव' कहकर किया करते थे। ऐसा इसलिए कि हमें बता दिया गया था कि सुरक्षा व्यवस्था में लगे अनेक लोग हिंदी जानते थे। इसका अनुभव मुझे भी हुआ। यदि हम अपने होटल से दो मिनट के लिए भी बाहर जाते, तो वापसी पर फिर सुरक्षा जाँच की पूरी 'कवायद' दोहराई जाती। उस दिन तो अति हो गई। रात को रेडियो मास्को के उर्दू विभाग में कार्यरत एक भारतीय मित्र जसवंत सिंह के यहाँ भोजन पर जाना था। वह मुझे लिवाने आया था और होटल से बाहर जानेवाले दरवाज़े के ठीक सामने मेरी प्रतीक्षा कर रहा था। अभी मैंने होटल के दरवाज़े से एक पाँव ही बाहर रखा था – एक अभी भी अंदर था कि याद आया, कमरे से जसवंत के लिए लाई गई भेंट का पैकेट तो ऊपर 24वीं मंजिल पर अपने कमरे में ही भूल आया। उसे वहीं द्वार

पर पाँच-सात मिनट इंतज़ार करने को कहकर मैं उलटे पाँव वापस घूमा, तभी वहाँ नियुक्त सुरक्षा अधिकारियों में से एक ने हाथ आड़े लगा 'नीष्त-नीष्त' (नहीं-नहीं) कहकर मुझे इशारे से रूसी भाषा में बोलते हुए समझाया कि अब मुझे 'प्रवेश' द्वार से अंदर आना होगा। प्रवेश द्वार काफ़ी घूमकर था। यही नहीं, मुझे पता था कि वहाँ अंदर आनेवालों की लंबी कतार लगी होगी। होटल हो या ब्रॉडकास्ट सेंटर (जहाँ हम अपनी रिपोर्ट तैयार कर दिल्ली को टेलीफ़ोन लाइनों पर देते थे), हर प्रवेश करनेवाले की सुरक्षा जाँच करने में कम-से-कम तीन-तीन, चार-चार मिनट तो लगते ही थे। शारीरिक जॉच तो तुरंत हो जाती थी, पर झोलों, ब्रीफ़केसों आदि की एक्स-रे जाँच के बाद भी उनमें से एक-एक चीज़, एक-एक कागज़ निकालकर देखा जाता था। कैमरे, टेप रिकॉर्डर और उनके उपकरणों की जाँच बड़ी बारीकी से की जाती थी। यह कसरत प्रवेश के समय हर बार दोहराई जाती थी। मेरे पास उस समय कुछ नहीं था इसलिए भी मैं उस कसरत से बचना चाह रहा था। जसवंत सिंह ने भी रूसी भाषा में उन्हें समझाने की बहुत कोशिश की पर जवाब में वही दो शब्द 'नीष्त-नीष्त'। मजबूरी में और कोई चारा भी नहीं था।

'अजीब लोग हैं, इतनी भी क्या सख़्ती, रोज़ तो मुझे देखते हैं, पहचानते हैं। फिर एक पाँव तो अभी अंदर ही था, वैसे 'रूसी-हिंदी भाई-भाई' की बात करते हैं,' बड़बड़ाते हुए मैं प्रवेश द्वार पर गया। मेरे स्वर में थोड़ी कड़वाहट तो थी ही। यूँ मेरी बात समझने वाला वहाँ जसवंत के अलावा और कोई था भी नही, लेकिन यह मेरा मुगालता था। चार-पॉच दिन बाद अपने होटल के प्रवेश द्वार पर जब मैं पंक्ति में खड़ा अपनी बारी की प्रतीक्षा कर रहा था, एक सुरक्षा अधिकारी मेरे पास आया और बहुत ही सुंदर संस्कृत-निष्ठ हिंदी में बोला, 'सिंह जी, उस दिन आप बहुत रुष्ट हो गए थे।' मैं उसे पहचान गया। जसवंत के घर जाते समय जो तीन-चार सुरक्षा अधिकारी चुपचाप एक ओर खड़े थे, यह उन्ही में से एक था — शायद उन सबका अफ़सर था। उसकी हिंदी सुनकर मैं पानी-पानी हो गया। वह कहे जा रहा था, "यह सब आप अतिथियों की सुरक्षा के लिए है। हम तो उसी के लिए अपने कर्तव्य का पालन कर रहे हैं।" मैं केवल यही बोल पाया, "आप हिंदी जानते हैं?" उसका विनम्र उत्तर था, "बस, थोरी-थोरी!"

बाद में ज्ञात हुआ कि सोवियत सुरक्षाकर्मियों में विश्व की विभिन्न भाषाएँ जानने वाले लोग थे। साथ ही उन्हें लगातार एक स्थान पर नही रखा जाता था। बदल-बदलकर हवाई अड्डे, अन्य होटलों, ब्रॉडकास्ट सेंटर आदि में तैनात किया जाता था। हाँ, उस दिन से मैंने एक शिक्षा अवश्य ले ली। सुरक्षा नियमों का सदा पालन करना चाहिए।

अपने देश में भी हवाई अड्डे या विभिन्न समारोहों के दौरान कभी-कभार यदि कोई सुरक्षाकर्मी मुझे पहचानकर मेरी जॉच नहीं करना चाहता और कह देता है, 'आपको तो जानते ही हैं', मैं उससे विनम्रता से अनुरोध कर अपनी सुरक्षा जॉच अवश्य करवाता हूँ। मेरी समझ में यह हर नागरिक का कर्तव्य है कि अपने पद या लोकप्रियता के बल पर सुरक्षा जाँच से न बचे।

सुरक्षा और अनुशासन के मामले में मास्को ओलंपिक्स में मेरा एक और अनुभव हुआ। एक दिन हम लोगों के पास सवेरे ही खेल प्रतियोगिताओं से संबंधित काफी सामग्री इकट्ठा हो गई थी। मैंने सोचा इसे पहले से ही संपादित करके रख लिया जाए। दोपहर बाद एकत्र की जाने वाली सामग्री बाद में संपादित करके पूरी रिपोर्ट थोड़ा जल्दी बना लेंगे। मैंने अपने दुभाषिये सर्गे और नताशा (यों यह रूस में हर तीसरे पुरुष और महिला के नाम से जुड़े होते हैं) से अनुरोध कर दिया कि उस दिन वह दोपहर से पहले हमारा स्टूडियो खुलवा दें, जिससे हम काम थोड़ा जल्दी निपटा दें। स्टूडियो तो खुलवा दिया गया लेकिन अगले ही दिन उन दोनों को बदल भी दिया गया। एक दिन संयोग से सर्गे मिला, तो धीमे से बता गया कि नियत समय से पहले स्टूडियो खुलवाने को कर्तव्य के प्रति कोताही माना गया था। हमारा अपना अनुमान था कि नियत समय से पहले स्टूडियो खुलवाना कोताही से ज़्यादा, सुरक्षा नियमों को तोड़ना माना गया था क्योंकि उस दिन अनेक रेडियो अधिकारी हमसे बार-बार पूछते रहे थे कि स्टूडियो नियत समय से पहले क्यों खुलवाया गया।

मास्को ओलंपिक्स के चार वर्ष बाद 1984 में मुझे एक बार फिर सोवियत संघ जाने का अवसर मिला था। दूसरी बार मैं भारत-सोवियत संघ अंतरिक्ष उड़ान की कवरेज के लिए गया था। दोनों ही दफ़ा मुझे उस देश की कड़ी सुरक्षा व्यवस्था के कई अनुभव हुए लेकिन

जो बात अच्छी लगी, वह थी भारतीयों के प्रति उस देश के लोगों का प्यार। भारतीय नेताओं के प्रति सम्मान-भावना तो देखने को मिली ही, पर भारतीय सिनेमा के साथ-साथ कुछ जाने-माने फ़िल्म कलाकारों और संगीत ने जिस तरह से उन्हें मोह लिया था, उसे देख कर तो असीम आश्चर्य होता था।

मेरे साफ़े से ही लोग पहचान जाते थे कि मैं भारतीय हूँ। कई बार ऐसा हुआ कि सामने से आ रहा व्यक्ति मेरे पास पहुँचकर कुछ क्षण रुक जाता, मुसकराता और हाथ जोड़कर बोलता, 'नमस्ते'। किसी भारतीय से अभिवादन का एक और निराला तरीका भी देखा वहाँ। पास से निकले, देखा और धीमे से 'ओह' कहकर महात्मा गांधी, जवाहरलाल नेहरू, लालबहादुर शास्त्री, इंदिरा गांधी आदि सभी या इनमें से दो-तीन का नाम बोलते हुए निकल गए। कई लोग तो राजकपूर, नर्गिस आदि अभिनेताओं का नाम भी जपने लगते। कुछ थे जो हमें देखते ही तान छेड़ देते, 'आवारा हूँ, आवारा हूँ', या 'मेरा जूता है जापानी, यह पतलून इंगलिस्तानी, सिर पे लाल टोपी रूसी, फिर भी दिल है हिंदुस्तानी', और जब आश्चर्यचकित हो हम उनका चेहरा ताकने लगते तो वे खिल-खिलाकर हँस देते। बहुत खुश होते। कुछ तो पूछ भी लेते, 'टीक है, आच्छा है।' ज़ाहिर है, हिंदी फिल्मों से यह दो-चार शब्द उन्होंने सीख लिए होंगे।

अन्य भारतीय साथियों की तरह मुझे भी यह सब सुनना बहुत अच्छा लगता। यही नही, यूँ महसूस होता जैसे उस दूर देश में मेरे वतन की सौंधी-सौंधी मिट्टी की सुगंध महक रही हो। उस ज़माने में सोवियत संघ में कड़ी जासूसी, सुरक्षा व्यवस्था, अनुशासन और विदेशी तो विदेशी, अपने ही देशवासियों पर शक करने की प्रवृत्ति के बावजूद वहाँ के आम लोगों का भारत के प्रति यह स्नेहभाव बहुत निष्कपट और निश्छल होता था।

सोवियत लोगों की भारत में इस दिलचस्पी की जानकारी मैं कभी-कभी अपनी कमेंट्री के दौरान भी दे दिया करता था। हमारे हॉकी मैचों के मध्यांतर में भारतीय फ़िल्मों के लोकप्रिय गीत बजाए जाते थे। एक दिन तो जब लाउडस्पीकर पर एक फिल्मी गाना 'झूठ बोले कव्वा काटे' बज रहा था, मैंने अपनी कमेंट्री के दौरान यह गाना भी हज़ारों मील दूर बैठे अपने

श्रोताओं को सुनवा दिया था – यह बताने को कि हमारे देश का संगीत विशेषकर कुछ फ़िल्मी गाने सोवियत संघ में कितने लोकप्रिय हैं।

बोध-प्रश्न

1. आप कैसे कह सकते है कि पाठ का 'आँखों देखा हाल' उस 'आँखों देखा हाल' से भिन्न है जिसके लिए जसदेव सिंह प्रसिद्ध थे।
2. हॉकी के ऑखों देखा हाल के प्रसारण में जसदेव को लोकप्रियता मिलने के क्या कारण थे?
3. म्यूनिख ओलंपिक के दौरान जर्मन महिला सबके सामने जसदेव को मुँह खोलने का आदेश क्यों दे रही थी?
4. सुरक्षा व्यवस्था में कड़ाई बरते जाने का क्या कारण था? लेखक ने इससे क्या सीख ली?
5. भारतीय जनों के प्रति सोवियत जनता का कैसा व्यवहार रहता था? वे इसे कैसे प्रदर्शित करते थे?

4. लघु कथाएँ
क. रिश्ता

❑ चित्रा मुद्‌गल

लगभग बाईस दिनों तक 'कोमा' में रहने के बाद जब उसे होश आया था तो जिस जीवनदायिनी को उसने अपने करीब, बहुत निकट पाया था, वे थीं, मारथा मम्मी। अस्पताल के अन्य मरीज़ों के लिए सिस्टर मारथा। वह पुणे जा रहा था ... खंडाला घाट की चढ़ाई पर अचानक वह दुर्घटनाग्रस्त हो गया। ज़ख्मी अवस्था में नौ घंटे तक पड़े रहने के बाद एक यात्री ने अपनी गाड़ी से उसे सुसान अस्पताल में दाखिल करवाया ... पूरे चार महीने बाद वह अस्पताल से डिस्चार्ज किया गया। चलते समय वह मारथा मम्मी से लिपटकर बच्चे की तरह रोया। उन्होंने उसके माथे पर ममत्व के सैकड़ों चुंबन टाँक दिए – 'गॉड ब्लेस यू माय चाइल्ड..।' डॉ. कोठारी से उसने कहा भी था, "डॉक्टर साहब! आज अगर इस अस्पताल से मैं ज़िंदा लौट रहा हूँ तो आपकी दवाइयों और इंजक्शनों के बल पर नहीं, मारथा मम्मी के प्यार के बल पर।"

उस रोज़ वे उसे गेट तक छोड़ने आई थी और जब तक उसकी गाड़ी अस्पताल के गेट से बाहर नहीं हो गई, वे अपलक खड़ी विदाई में हाथ हिलाती रही थी ...

वही मारथा मम्मी ... आज जब अरसे बाद वह उनसे वार्ड में मिलने पहुँचा तो उन्हें देखकर खुशी से पगला उठा। वे एक मरीज़ के पलंग से सटी उसकी कलाई थामे धड़कनों का अंदाज़ा लगा रही थीं। उन्होंने मरीज़ की कलाई हौले से बिस्तर पर टिकाई कि उसने उन्हें अचानक पीछे से बाजुओं में उठा लिया।

"अरे, अरे, क्या करता है तुम ... इडियट ... छोड़ो मेरे को! ये अस्पताल है ना।"

वह सकपका उठा। उन्हें फ़र्श पर खड़ा करते हुए उसने अचरज से मारथा मम्मी को देखा, "मैं आपका बेटा अशोक, मम्मी पहचाना नहीं आपने मुझे ...!"

"पेचाना, पेचाना... पन अभी मेरे को टाइम नई ... डियूटी पर ऐसा नई आने का मिलने कू। अब्बी जाओ तुम ... देखता नई पेशेंट कितना तकलीफ़ में हय ..." उन्होंने उसे तिक्त स्वर में झिड़का।

वह उनके अनपेक्षित व्यवहार से स्तब्ध हो उठा, तिलमिलाया-खिसियाया-सा फ़ौरन मुड़ने लगा कि तभी उसी मरीज़ की प्राणवेला कराह सुनकर क्षणांश को ठिठक गया। मरीज़ के पपड़ियाए होंठ पीड़ा से बिलबिलाते बुदबुदा रहे थे, "माँ... ओ... माँ...हा...आ..."

"माय चाइल्ड ऑय अंम विद यू। हैव पेशन्स ... हैव पेशन्स ..." उसकी मारथा मम्मी अत्यंत स्नेहिल स्वर में उस मरीज़ का सीना सहला रही थीं।

वह मुड़ा और तेज़ी से वार्ड से बाहर हो गया।

ख. खबर, जो छप न सकी ❑❑

❑ ज्ञान प्रकाश विवेक

नगर में कर्फ़्यू लगा था। सन्नाटा ऐसा था जैसे किसी कब्रिस्तान से उठाकर रख गया हो कोई। सड़कों और गलियों में गश्त करती पुलिस के अतिरिक्त और कोई न था। यह सब हिंदू-मुस्लिम फ़साद के कारण हुआ था।

नगर की एक गली में मकान की ऊपरी मंज़िल की खिड़की खुली। एक दबी-सी आवाज़ उभरी – "ऐ हामिदा! हामिदा की बच्ची! सुन!"

दूसरे मकान की खिड़की खुली – "क्या है री निर्मला!"

"क्या कर रही है हामिदा?"

"नोट्स तैयार कर रही हूं।"

"अच्छा, यह बता, आज तूने क्या बनाया है?"

"बनाया है तेरा सिर। बिरयानी है। भेज दूँ?"

"हाँ।"

"तूने क्या बनाया है री?"

"काबली और पूरियाँ। मैं राजू के हाथ भेज रही हूँ। उसी के हाथ तू बिरयानी भेज देना।"

"नहीं, तू राजू को मत भेज। मैं असगर को भेजती हूँ। राजू को गली में किसी ने नुकसान पहुँचाया तो?"

"और असगर को रास्ते में किसी ने चोट पहुँचाई तो क्या अच्छा होगा?"

"बक मत! राजू को तू मत भेज। वह छोटा है और फिर मैं उसे अपना भाई भी तो मानती हूँ!"

"तो क्या असगर को मैं राखी नही बाँधती?"

राजू अपने घर से निकला, असगर अपने घर से। दोनों गली में मिले। गले लगे।

अगले दिन अखबार में खबर छपी – "नगर में स्थिति काबू में है किंतु तनाव बना हुआ है।"

काश! कोई अखबार इस गली में पनप रही मुहब्बत की खबर भी प्रकाशित करता।

❑ ❑

ग. अच्छा कौन

❑ चितरंजन 'भारती'

एक ट्रेन में चार यात्री यात्रा कर रहे थे। उनमें एक बंगाली, एक तमिल, एक एंग्लो-इंडियन तथा एक हिंदी भाषी था। वे लोग अपनी-अपनी भाषा पर बात कर रहे थे।

बंगाली महोदय बोले, "बांग्ला सबसे मीठी भाषा है। इसने भारतीय साहित्य को अत्यंत उच्चकोटि के साहित्य से समृद्ध किया है।"

तमिल-भाषी महोदय बोले, "तमिल भाषा बहुत प्राचीन है। इसका साहित्य बहुत उच्चकोटि का है। इसका प्रादुर्भाव तब हुआ था, जब आर्य-भाषा निम्न स्तर में थी।"

एंग्लो-इंडियन महोदय भला कैसे चुप रहते, वह बोले, "अंग्रेज़ी सबसे अच्छी, सबसे सरल भाषा है। यह लगभग पूरे विश्व में बोली एवं जानी जाती है। इसका साहित्य अत्यंत समृद्ध है। इसका दूसरी भाषाओं से क्या मुकाबला!"

अब चौथे यात्री की बारी थी। वह किसी हिंदी-भाषी क्षेत्र के ग्रामीण रहे होंगे, बोले, "आप लोगों की बातें सही हैं, मगर आप लोग बातें तो हिंदी में कर रहे हैं!"

बाकी तीनों एक-दूसरे का मुँह देखने लगे।

❑ ❑

घ. समझ

❑ बीर राजा

सेठजी गाँव में सूद और सुनार का धंधा कर रहे थे। एक बार उनके यहाँ डाका पड़ा। रुपया, ज़ेवर, सोना-चाँदी के साथ घर-गृहस्थी का सारा सामान भी चला गया।

लड़की तथा दामाद गाँव पहुँचे। दामाद ने एफ.आई.आर. लिखवाने पर ज़ोर दिया। सेठजी तैयार न थे, बराबर टालते रहे, किंतु दामाद के रूठने पर किसी तरह तैयार हुए।

दस कोस दूर थाने पहुँचे। दरोगा पलंग पर बैठा हुक्का गुड़गुड़ा रहा था। सेठजी को देखते ही खिल उठा। फौरन दो कुरसियाँ और चाँदी की तश्तरियों में मिठाई मँगवाई।

"कैसे तकलीफ की सेठजी?" दरोगा ने नम्रता से पूछा।

"दामाद आए हैं। सोचा, आपसे मिला दूँ। शहरी आदमी हैं ... यहाँ इनका मन नहीं लगता।" सेठजी ने हँसते हुए कहा।

लेकिन सेठजी ने रपट नही लिखवाई।

इतने शालीन दरोगा के पास रपट न लिखवाने पर दामाद ससुर से लड़ पड़ा।

सेठजी ने उसे समझाते हुए कहा, "जिस पलंग पर दरोगा बैठा था, जो हुक्का वह पी रहा था, जिन प्लेटों में हमने खाया और जिन कुरसियों पर हम बैठे थे, वे उसकी नही थीं, हमारी थीं, जो डाके में चली गई थी।"

दामाद उन्हें हैरानी से देखने लगा।

"यह मैं पहले ही समझ चुका था। गलती मेरी ही थी। दरोगा की लड़की की शादी में बने गहनों के मैं पैसे माँग बैठा था।" सेठजी ने आगे

"अब क्या होगा?"

"घबराने की ज़रूरत नहीं। आस-पास के सभी गाँव गरीब हैं। लोगों को हमेशा पैसों की ज़रूरत रहती है। तीन-चार बरसों में इनसे सब वसूल लूँगा। लेकिन दरोगा से दुश्मनी मोल लेकर तो मैं एक फूटी कौड़ी भी नहीं कमा सकूँगा!"

❑❑

बोध-प्रश्न

1. अशोक अपने स्वस्थ होने का श्रेय चिकित्सा से अधिक मारथा को क्यो देता है?
2. आप किस आधार पर कह सकते है कि मारथा की ममता, मानव-मात्र के प्रति है, किसी व्यक्ति विशेष के प्रति नहीं।
3. छपी हुई खबर की अपेक्षा न छपी खबर क्यों अधिक महत्त्वपूर्ण है?
4. सब भाषाएँ अपने-अपने स्थान पर श्रेष्ठ हैं, फिर भी अंतर्भाषीय संपर्क के लिए हिंदी को ही चुनना क्या सिद्ध करता है?
5. थाने पहुँचकर भी सेठजी बिना रिपोर्ट लिखवाए क्यों लौट आए?
6. अपने नुकसान की भरपाई का सेठ ने क्या उपाय सोचा और क्यों?

5. मेरा भाई

☐ शिवानी

इस बार लखनऊ लौटने के दूसरे ही दिन ईद पड़ी। मैं बड़ी देर तक उनकी राह देखती रही। ऐसा क्या कभी हुआ था कि वे मुझे ईदी देने न आएँ? साथ में रहता रूमाल में बँधा सेवइयों से भरा कटोरा। उनके यहाँ क्या कभी चूल्हा जलता था! होटल में रहते थे, पर इष्ट मित्र सेवइयाँ भेजते तो मेरे हिस्से को सहेज कर कटोरे में रख लेते। घर-घर की विभिन्न स्वाद, रंग, रस की सेवइयों की दुर्लभ सौगात शायद ही किसी के लिए जुटती होगी। इस बार वे नहीं आए, न उन्होंने मुंबई से लिखे गए मेरे पत्र का उत्तर ही दिया था। मेरा माथा ठनका और मैंने एक परिचित मित्र को फ़ोन किया। "अरे क्या आपने नहीं सुना? उनका तो मई में इंतकाल हो गया। सोए थे, बस सोते ही रहे।"

गहन अपराध भावना ने मुझे दिन-भर क्षुब्ध रखा। एक ही पत्र लिखकर मैंने भी तो चुप्पी साध ली थी। किसी और को लिख कर उनकी कुशल तो पूछ सकती थी। वह व्यक्ति जो सहोदर नहीं था, पर जिसकी मृत्यु की सूचना आज मानस की पंक्ति बन कानों में बज रही थी – 'मिलहि न जगत सहोदर भ्राता।'

मेरा भाई चला गया, ऐसा भाई जो प्रत्येक होली पर मेरे यहाँ होली की गुझिया खाने आता था, जबकि उन्हें इस त्योहार से बेहद चिढ़ थी, "लाहौल विला कूवत, देख रहे हैं कि हम सफ़ेद चिट्ट शेरवानी पहने हैं, फिर भी रंग डाल दिया कमबख़्तों ने।" मेरे पति की बीमारी में वे नित्य आकर उनके सिरहाने बैठ जाते, "जा, तुझे जो काम करना है निपटा ले, हम बैठे हैं।" मैं कई

बार उन्हें घंटों बिठाए रखती। कभी दवा लानी है, और दवाएँ भी कैसी दुर्लभ, आयुर्वेद के कष्टसाध्य उपचार के लिए कभी नीमचढ़ी गिलोय, कभी पुनर्रवा और कभी अश्वगंधा। कभी-कभी मुझे भटकते घंटों लग जाते। प्रायः ही ये जड़ी-बूटियाँ जुटाने रकाबगंज जाना पड़ता। खिसियाकर लौटती तो देखती हामिद भाई ऋषि-मुनियों के से अडिग धैर्य से मेरे रुग्ण पति के सिरहाने बैठे हैं। किंतु जब ये संजीवनी बूटियाँ भी यम को पराजित नही कर पाईं, तो अंधकारपूर्ण भविष्य मुझे आतंकित कर मेरा मेरुदंड झनझना गया। सगे-संबंधी उस तत्परता से चलते बने थे जैसे सड़क के चौराहे पर मदारी का तमाशा देख रही भीड़ पैसा देने के क्षण से मुक्ति पाने त्वरित फुरती से सटक जाती है। एक हामिद भाई ही विपत्ति के उस कठिन क्षण में मेरे साथ खड़े रहे। "देख बच्ची", मेरे कंधे पर उन्होंने हाथ धरकर कहा था, "हिम्मत हारेगी तो काम नहीं चलेगा। कमर कस और आगे बढ़। इंशा अल्ला, मियाँ खुद हाथ बढ़ा देगा।"

कभी-कभी सोचती हूँ, विपत्ति से जूझने का ज़िरहबख़्तर मुझे मिला था हामिद भाई से, हथियार नागर जी से, जिन्होंने कहा था,"बहन, हम तुम्हें तप कर जीते देखना चाहते हैं, घुल कर नहीं।" और धैर्य की मंजूषा थमाई थी गुरुवर हजारीप्रसाद जी ने, "विपदि धैर्य मथाभ्युदये क्षमा।" यद्यपि स्वयं उनकी आँखों से झरझर आँसू बह रहे थे, किंतु उनके गुरु गंभीर कंठस्वर से निकली वह पंक्ति उसी क्षण मेरा पाथेय बन गई थी।

हामिद भाई की पहली याद रामपुर की ही आती है। रामपुर जहाँ आज भी मेरे बचपन की स्मृतियों की सुवर्ण मुद्रा खचित गगरी धरा में धँसी रह गई है। हमारी कोठी 'मुस्तफ़ा लॉज' एक आलमगीर बुलंद इमारत थी और मेरे पिता रियासत के पहले हिंदू गृहमंत्री थे। हामिद भाई के चचा सर अब्दुल समद खॉ की कोठी 'रोज़ विला' हमारी कोठी से गज़-भर के फ़ासले पर थी। उन्हीं के भाई अब्दुल वाहिद खान के मँझले बेटे थे, हामिद। उनकी अपनी कोई बहन नहीं थी। इसी से हम बहनों पर उनका अनन्य स्नेह था। मैं तब आठ या दस वर्ष की रही हूँगी। जब कभी छुट्टियों में आते, मेरे लिए एक-न-एक उपहार अवश्य लाते — कभी फ्रॉक और कभी बड़ी-सी गुड़िया और कभी आर्मी नेवी स्टोर के वे बड़े-बड़े रंगीन क्रैकर, जो दोनों

ओर से खींचे जाने पर खंडित शिवधनु की-सी गर्जना से हमारे नन्हे हृदय को दहला देते। ईद के तो कहने ही क्या! हामिद भाई दुनिया के किसी कोने में क्यों न हो, उनका भेजा दस रुपए का मनीऑर्डर मुझे बड़ी तत्परता से ढूँढ़ ही लेता। उन दिनों उनका जैसा ओहदा था, वैसा ही रोब भी था। "साहजादा साहब तशरीफ़ ला रहे हैं।" सूचना मिलते ही हमारे पूरे घर में हड़कंप मच जाता। "देखो भई, चाय ज़रा कायदे से भिजवाना," मेरे पिता अम्मा से कहते,"हामिद अभी-अभी विलायत से लौटा है, साहब आदमी है।"

देखने में हामिद भाई अपने सुदर्शन पिता के विपरीत थे — साँवला रंग, बेहद लंबी नाक, भरे-भरे कल्ले, निरंतर अधमुँदी रहने वाली बहुत बड़ी आँखें, बेहद मोटे कुछ लटके से ओंठ और बित्ते-भर का कद, उस पर मेदबहुल शरीर। बैठते तो सोफ़ा धँस जाता, हँसते तो लगता किसी ने कोरे लट्ठे का थान फाड़ दिया हो। उनकी चमचमाती मॉरिस गाड़ी सदा दर्पण-सी चमकती। स्वामी की ही भाँति चालक की भी वरदी ठसकेदार रहती। और फिर इन्ही आँखों ने एक दिन उस प्रखर सूर्य का अवसान भी देख लिया। लखनऊ के बर्लिंग्टन होटल के उस दो नंबर के कमरे में बंद उसी शाहजहाँ को जब-जब देखती मन विचलित हो उठता। दीवारों का उखड़ा पलस्तर, रोशनदान में लटकी मकड़ी के जालों की झालरें, झूला-सा बन गया पलंग, उस पर बेतरतीबी से बिछा ढाई गज़ी बेडकवर, और पूरे कमरे में एक मनहूस सीलनभरी घुटन। एक बार गई तो वे खाना खा रहे थे। रंग उड़ी तामचीनी की प्लेट पर धरी चमड़े-सी चपातियाँ, नन्ही चिलमचीनुमा कटोरियों में दाल, सालन-दाल अलग और पानी अलग।

"खाओगी?" उन्होंने पूछा, फिर स्वयं ही एक लंबी साँस लेकर बोले, "अल्लाह, रहम कर, किस मुँह से कहें तुमसे बच्ची, कि ये चरी-भूसा खा लो।"

हर इतवार को वे मेरे यहाँ दोपहर का खाना खाने आते। पहाड़ में रहे थे, इसी से पहाड़ी खाना उन्हें बहुत पसंद था। प्रायः ही फ़रमाइश करते, गरम पानी वाला खाना बनाना — गरम पूड़ी, पीले आलू और पीला रायता। धीरे-धीरे शरीर की शक्ति घटती गई, हृदय जीर्ण हो चला, घुटनों में पानी भर गया। पहले तो गिरते-पड़ते मेरे घर की सीढ़ियाँ चढ़ लेते थे, फिर रिक्शा से उतरना भी दूभर हो गया। उधर अनेक आघातों ने उन्हें तोड़ कर रख दिया था। जिन भतीजों

को नैनीताल के नामी स्कूलों में पढ़ाया था, उन सबके पंख उग आए और वे फुर्र-से उड़ गए। पिता की एक दुर्घटना में मृत्यु हो गई, वर्षों से पागलखाने में बंदी छोटे भाई की मृत्यु हो गई। अचानक उन्हें लगने लगा, वे इतने बड़े संसार में एकदम अकेले रह गए है। सबने उन्हे भुनाया मात्र था। काम निकलते ही एक-एक ने अँगूठा दिखा दिया। मन की इसी कुंठा ने उन्हें अंतिम दिनों में मनुष्य द्रोही बना दिया था। जितनी देर बैठे रहते, उतनी देर एक-एक को चुनकर गालियाँ देते रहते।

हामिद भाई ने आजन्म कुँवारे रहने का व्रत क्यों धारण किया था! जिससे वे विवाह करना चाहते थे, उसने उन्ही के शब्दों में उन्हें 'डिच' किया था। बराबर उन्हें यही उम्मीद दिलाती रही कि उन्हीं से विवाह करेगी। फिर सहसा किसी ओर की बेगम बन पाकिस्तान चली गई। हामिद भाई के अंतिम दिनों में उस व्यर्थ प्रेम की स्मृति फॉस बनकर चुभने लगी थी। एक दिन, वर्षों के बाद, बिना किसी सूचना के वह उनसे मिलने आ गई। उसे विदा कर वे सबसे पहले सीधे मेरे यहाँ ही आए थे, "बच्ची, आज वो आई थी।" उनके झुर्रियों-भरे, धँसे गालों पर पल-भर को अबीरी लाली उभर आई।

"कौन?" मैंने पूछा।

"और कौन?" फिर हँसकर बोले।

"वही — अब समझी।" पाकिस्तान से आई थी। मैं भला कैसे न समझती!

"आपने रोक क्यों नही लिया हामिद भाई? अब तो सुना उनके शौहर भी नहीं रहे।"

"बच्ची, जब हमारी आवाज़ में कड़क और दिल में धड़क थी, तब ही नही रोक पाए तो अब क्या ख़ाक रोक पाते!"

कौन कह सकता था कि कभी दूल्हे-से सज-धजकर निकलने वाले हामिद भाई यह वही हामिद भाई थे जिनके सूट फेल्प्स से सिलकर आते थे, घंटे-भर को कहीं जाते तो चमड़े के बैग में पालिश की डिबिया और ब्रश लिए सरकारी चोबदार पीछे-पीछे भागता, दस

कदम भी चले और फटाफट जूता फिर दर्पण-सा चमका दिया जाता। और अब? उधड़े फटे मोजे, न जाने किस ज़माने के जीर्ण दस्ताने जिनमें से पाँच में से तीन अँगुलियों का अर्धांग बाहर निकला रहता।

इधर एक वर्ष से वे रिक्शा से भी नहीं उतर पाते थे। मैं वहीं थाली परोसकर ले जाती। कौर मुँह में ले जाने की भी शक्ति उनमें नहीं रही थी। मुझे बार-बार यही भय रहता था कि कही मेरे दरवाज़े इन्हें कुछ हो गया तो मैं क्या करूँगी? उस पर कुछ विक्षिप्त-से भी हो गए थे। जो वर्षो पहले जा चुके थे, उन्हें याद करते। मुझसे कहते, "जा, बुला ला उन्हें, त्रिभी कहाँ है? शुकदेव कहाँ है? हम इतनी दूर से आए हैं और वे ज़नानी बने परदे में दुबके हैं!"

जब मैं कहती कि मेरे बड़े भाई और पति जिन्हें वे बुलाने को कह रहे हैं, वे तो कब के जा चुके हैं तो वे कहते, "कहाँ जा चुके हैं? तुम क्यों नही जा सकती उन्हें बुलाने?"

"काश, मैं जा सकती!"

"हम हुकुम दे रहे है।" उनका पठानी रक्त फिर रगों में दौड़ने लगता।

"वहाँ किसी का हुकुम नहीं चलता, हामिद भाई।" मुझे हँसी आ गई और वे बौखला गए।

"हँसती है। दाँत भीतर कर दूँगा। मैं कहता हूँ बुला ला उन्हें।" वे गरजते ओर आसपास की खिड़कियों से प्रतिवेशियों के कौतूहली चेहरे झाँकने लगते। फिर आरंभ होता उनकी गालियों का दौर। मेरे जी में आता, धरती फट जाए और मैं धँस जाऊँ।

दिनभर लखनऊ की अली-गलियों में इसी रिक्शा में घूमते रहते — कभी महानगर, कभी निशातगंज, कभी नक्खास, कभी अमीनाबाद। लखनऊ के हर गली-कूचे में तो उनके परिचित थे। फिर धीरे-धीरे वहाँ से भी दुरदुराए जाने लगे। एक दिन मेरे पास आए तो मैं पूजा कर रही थी। उतरने में विलंब हुआ। मैं डर रही थी कि देखते ही देखते बरस पड़ेंगे। पर उस दिन आग का दरिया जैसे बर्फ़ की ही माला बन गया था। उनका उतरा चेहरा, डबडबाई आँखें देख

स्वयं मेरा अपराधी अंतःकरण मुझे धिक्कार उठा। एक दिन क्या पूजा संक्षिप्त नही कर सकती थी? कभी जिनकी कार का शब्द सुनते ही सीढ़ियॉ धड़धड़ाती, उनसे लिपटकर पूछती थी, "क्या लाए हैं, हामिद भाई? क्या लाए हैं हमारे लिए?" आज उसी बुज़ुर्ग को सडक पर इतनी देर खड़ा रखा। "माफ़ कीजिएगा, हामिद भाई, पूजा कर रही थी।" वे कुछ नहीं बोले।

मैं पास गई तो मेरा हाथ थामते ही बड़ी देर से रोका गया कंठ का गह्वर ऑखों से फूट चला। मैंने उन्हें ऐसे बच्चों-सा सुबकते इससे पूर्व कभी नहीं देखा था। लगता था, कहीं गहरी चोट खाई है। "खैरियत तो है हामिद भाई?" "क्या कहें बच्ची, एक तुम्हारा और एक चची का घर ही तो बचा था हमारे लिए। आज वहाँ से भी दुरदुरा दिए गए। चची ने साफ़ कह दिया – "हामिद, अब ऐसी हालत में तुम हमारे यहाँ मत आया करो।"

उनकी एक प्रिय चचेरी बहन कुछ दिन पहले ही लिख चुकी थी, "अब तुम अलीगढ़ मत आना हामिद। कहीं ट्रेन में कुछ हो गया तो? यहाँ आ भी गए तो अब हम तुम्हारी देखभाल नहीं कर पाएँगी। तुम जानते ही हो, हमें अपने मरीज़ों से ही फुरसत नहीं मिलती। एक और मरीज़ की देखभाल करना अब हमारे लिए नामुमकिन है।"

"लीजिए, यानी कि अपनी बहन के लिए हम एक और मरीज़ बन गए।" पर आहत होने पर भी वह अपनी विनोदप्रियता का छौंक लगाना नहीं भूले :

दीवार क्या गिरी मेरे कच्चे मकान की,
लोगों ने मेरे सहन में रास्ते बना लिए।

पाकिस्तान के विदेशमंत्री साहबज़ादा याकूब खान उनके सगे चचेरे भाई थे। एक दिन मैंने कहा,"कितनी शक्ल मिलती है आपसे, कल टेलीविजन पर देखा था।"

"शक्ल ही तो मिलती है बच्ची, किस्मत तो नहीं मिलती।"

मैं जब भी लखनऊ से बाहर जाती, वे उदास हो जाते, "तुम जाती हो तो हमें लगता है हम एकदम अकेले हो गए हैं, कही कुछ हो गया तो कौन पहुँचाएगा हमें कब्र तक।"

"हामिद भाई," मैंने हँसकर उन्हें छेड़ दिया था, "मैं तो वैसे भी चिता तक ही पहुँचा सकती हूँ। आप भूल जाते हैं कि मैं हिंदू, आप मुसलमान।"

उन्होंने लाहौल पढ़कर मुझे फटकार दिया था, "फिर वही बेहूदा बात। न तुम हिंदू न हम मुसलमान, न तुम्हारे मंदिर न हमारी मस्जिद। बस यह याद रखना बच्ची, तुम हमारी बहन हो, हम तुम्हारे भाई। यही एक रिश्ता है हमारा और यही हमेशा रहेगा।"

उस रिश्ते को तो उन्होंने मरते दम तक निभाया। मेरी हर बेटी की शादी पर आए। मेरे हर दामाद ने उनके पैर छुए। मेरे बेटे ने सगे भानजे का रिश्ता निभाया। बहू तो बहू, बहू की माँ भी जब उनके लिए लैंब ऊन का दामी स्वेटर भेजना नहीं भूलीं, तो उनकी आँखें अकपट अश्रुजल से छलक उठीं।

फिर इसी मार्च में जब मुझसे मिलने आए तो देखा कि उनके दोनों पैर बुरी तरह सूजे थे। बहकी-बहकी बातों में कहीं कोई तुक नहीं था। फिर भी बीच-बीच में अतीत की स्मृतियाँ जैसे चाबुक लगाकर उन्हें सचेत कर रही थीं, "बच्ची, अब हमारी यह आखिरी मुलाकात है। अब हम तुम्हें कभी नहीं देखेंगे।"

फिर अपनी सूजी उँगलियों से मेरा हाथ थाम उन्होंने माथे से लगाया। शब्द मेरे कंठ में सटे जा रहे थे। फिर भी स्वर को संयत कर कहा, "कैसी बाते करते हैं आप! देख लीजिएगा, ईदी लेने ठीक वक्त पर ही पहुँच जाऊँगी।"

पर कहाँ पहुँच पाई मैं! कभी उन्होंने कहा था, "कभी मौत से मत डरना। हमें देख, दोनों पैर कब से कब्र में लटकाए बैठे हैं। अल्ला मियाँ ने पुकारा और हम उतर पड़े कब्र में। याद रख, बुज़दिलों को ही मौत तड़पा-तड़पा कर मारती है — चूहा, बिल्ली से डरता है, तभी तो बिल्ली उसे पटक-पटक कर मारती है। जो मौत से नहीं डरते, मौत उन्हें कंधे पर बैठाकर ले जाती है।"

सच, मौत उन्हें कंधे पर बैठाकर ही ले गई। लखनऊ के न जाने किस कूचे की दोगज़ी जमीन में मेरा वह भाई चैन की नीद सो रहा है। किसी न किसी दिन तो वह जगह ढूँढ़ ही

लूँगी और यह भी जानती हूँ कि उस फ़रिश्ते की कब्र से यही सदा गूँजेगी – न तुम हिंदू, न हम मुसलमान, न तुम्हारे मंदिर, न हमारी मस्जिद। बस, यह याद रखना बच्ची, कि तुम हमारी बहन और हम तुम्हारे भाई – एक यही रिश्ता है हमारा और यही हमेशा रहेगा!

बोध-प्रश्न

1. लेखिका ने रामपुर को बचपन की स्मृतियों की स्वर्णमुद्रा खचित गगरी क्यों कहा है?
2. हामिद भाई ने आजन्म कुँवारे रहने का व्रत क्यों लिया था?
3. 'शक्ल ही तो मिलती है बच्ची, किस्मत तो नहीं मिलती' – ये शब्द हामिद भाई ने किस संदर्भ में और क्यों कहे?
4. लेखिका ने हामिद भाई की रूपाकृति का चित्र किन शब्दो में खींचा है?
5. हामिद भाई की युवावस्था और वृद्धावस्था की स्थितियो में आए अंतर का अपने शब्दों में वर्णन कीजिए।
6. कहानी के उन प्रसंगों को चुनिए जिनसे यह व्यक्त होता है कि लेखिका और हामिद भाई के रिश्ते में धर्म का अंतर कभी आड़े नहीं आया।
7. 'स्नेह का रिश्ता खून के रिश्ते से बढकर है।' कहानी में वर्णित स्थितियों के आधार पर टिप्पणी कीजिए।

6. कर्मयोगी लाल बहादुर शास्त्री

❑ डॉ. शंकरदयाल शर्मा

शास्त्रीजी के नाम के साथ 'कर्मयोगी' विशेषण जोड़ना बिलकुल उपयुक्त है, क्योंकि मुझे तो उनका सारा जीवन ही कर्म से भरा हुआ मालूम पड़ता है। शास्त्री जी सामान्य परिवार से ऊपर उठकर देश के प्रधानमंत्री के जिस महत्त्वपूर्ण पद तक पहुँचे, उसका रहस्य उनके कर्मयोगी होने मे ही छिपा हुआ है। वह उन लोगों में से नही थे, जिन्हें जीवन का बना बनाया आसान रास्ता मिल जाता है। वह उन लोगों में से भी नहीं थे, जो भाग्य पर भरोसा करके बैठे रहते हैं और अचानक कभी सफलता मिल जाती है। बल्कि वह उन लोगों में से थे, जिनको अपनी हथेली की लकीरों के बजाय अपने चिंतन और कर्म की शक्ति पर अधिक भरोसा होता है और वे क्रमशः अपने जीवन का रास्ता बनाते हुए आगे बढ़ते हैं। शास्त्री जी के लिए कर्म ही ईश्वर था और इसके प्रति वह बिना किसी फल की आशा किए संपूर्ण भाव से समर्पित रहते थे। यहाँ तक कि जब भी उन्हें फल की प्राप्ति के अवसर मिले, तब ही उन्होंने उस ओर हमेशा उपेक्षित दृष्टि ही रखी। उनका जीवन-दर्शन 'गीता' के निष्काम कर्मयोगी का प्रतिरूप था। इसलिए मैं समझता हूँ कि उन्हें केवल कर्मयोगी के बजाय 'निष्काम कर्मयोगी' कहना कहीं अधिक उपयुक्त होगा।

अपने उद्देश्य के प्रति दृढ़ आस्था, उस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए कर्म का भाव तथा उस कर्म के प्रति संपूर्ण समर्पण – ये तीन बातें – मुझे उनके संपूर्ण चरित्र तथा जीवन-दर्शन में दिखाई पड़ती हैं। अपने एक भाषण में उन्होंने इसी तरह के विचार व्यक्त करते हुए कहा था, "यहाँ तक कि भले ही आप राजनीतिक क्षेत्र या सामाजिक क्षेत्र या किसी अन्य

क्षेत्र में कार्य करते हैं, यदि आप उसमें सफल होना चाहते हैं, अपने दायित्वों का पूरी तरह से निर्वाह करना चाहते हैं, तो आपके कार्य और समर्पण तथा भक्ति और कर्म में समन्वय होना चाहिए।"

मैं शास्त्री जी की सफलता का रहस्य उनके इसी महत्त्वपूर्ण चिंतन में मानता हूँ। साथ ही यह भी मानता हूँ कि किसी भी व्यक्ति, समाज और देश के विकास का रहस्य इसी भक्ति और कर्म के सिद्धांत में निहित है।

शास्त्री जी का संपूर्ण जीवन श्रम, सेवा, सादगी और समर्पण का अनुपम उदाहरण है। उनके ये गुण केवल उनके कार्यों और विचारों में ही अभिव्यक्ति नही पाते थे, बल्कि उनको देखने से ही इन सभी भावों का अहसास हो जाता था। उनके अपने व्यक्तित्व में विचारों का अनोखा समन्वय था। वह जो कुछ कहते थे, वही करते थे। जो कुछ भी करते थे, वह एकमात्र राष्ट्र-लाभ की भावना से प्रेरित होकर करते थे। मुझे लगता है कि यह उनके चरित्र की एक बहुत बड़ी विशेषता थी, जिसके कारण देशवासी उन पर इतना अधिक विश्वास करते थे और उन्हें चाहते भी थे। पंडित नेहरू की समृद्ध राजनीतिक विरासत को सँभालना और उसे आगे ले जाने का काम कम कठिन नहीं था। लेकिन देश ने उस समय यह साफ़-साफ़ देखा कि इसे सँभालने की ताकत शास्त्री जी में ही है और शास्त्री जी ने अपने निर्मल चरित्र और दृढ़ संकल्प शक्ति द्वारा देश की इस आकांक्षा को पूरा किया।

शास्त्री जी की एक सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि 'वे एक सामान्य परिवार में पैदा हुए थे, सामान्य परिवार में ही उनकी परवरिश हुई और जब वे देश के प्रधानमंत्री जैसे महत्त्वपूर्ण पद पर पहुँचे, तब भी वह सामान्य ही बने रहे।' विनम्रता, सादगी और सरलता उनके व्यक्तित्व में एक विचित्र प्रकार का आकर्षण पैदा करती थी। इस दृष्टि से शास्त्री जी का व्यक्तित्व बापू के अधिक करीब था और कहना न होगा कि बापू से प्रभावित होकर ही सन 1921 में उन्होंने अपनी पढ़ाई छोड़ी थी। शास्त्री जी पर भारतीय चिंतकों, डॉ. भगवानदास तथा बापू का कुछ ऐसा प्रभाव रहा कि वह जीवन-भर उन्हीं के आदर्शों पर चलते रहे तथा

औरों को इसके लिए प्रेरित करते रहे। शास्त्री जी के संबंध में मुझे बाईबिल की वह उक्ति बिलकुल सही जान पड़ती हे कि विनम्र ही पृथ्वी के वारिस होंगे।

शास्त्री जी ने हमारे देश के स्वतंत्रता-संग्राम में तब प्रवेश किया था, जब वे एक स्कूल में विद्यार्थी थे और उस समय उनकी उम्र 17 वर्ष की थी। गांधीजी के आह्वान पर वे स्कूल छोड़कर बाहर आ गए थे। इसके बाद काशी विद्यापीठ में उन्होंने अपनी शिक्षा पूरी की। उनका मन हमेशा देश की आज़ादी और सामाजिक कार्यों की ओर लगा रहा। परिणाम यह हुआ कि सन 1926 में वे 'लोक सेवा मंडल' में शामिल हो गए, जिसके वे जीवन-भर सदस्य रहे। इसमें शामिल होने के बाद से शास्त्री जी ने गांधीजी के विचारों के अनुरूप अछूतोद्धार के काम में अपने आपको लगाया। यहाँ से शास्त्री जी के जीवन का एक नया अध्याय प्रारंभ हो गया। सन 1930 में जब 'नमक कानून तोड़ो आंदोलन' शुरू हुआ, तो शास्त्री जी ने उसमें भाग लिया जिसके परिणामस्वरूप उन्हें जेल जाना पड़ा। यहाँ से शास्त्री जी की जेल यात्रा की जो शुरूआत हुई तो वह सन 1942 के, 'भारत छोड़ो' आंदोलन तक निरंतर चलती रही। इन 12 वर्षों के दौरान वे सात बार जेल गए। इसी से यह अंदाज़ा लगाया जा सकता है कि उनके अंदर देश की आज़ादी के लिए कितनी बड़ी ललक थी। दूसरी जेल यात्रा उन्हें सन 1932 में किसान आंदोलन में भाग लेने के लिए करनी पड़ी। सन 1942 की उनकी जेल यात्रा 3 वर्ष की थी, जो सबसे लंबी जेल यात्रा थी।

इस दौरान शास्त्री जी जहाँ एक ओर गांधीजी द्वारा बताए गए रचनात्मक कार्यों में लगे हुए थे, वहीं दूसरी ओर पदाधिकारी के रूप में जनसेवा के कार्यों में भी लगे रहे। सन 1935 में वे संयुक्त प्रांतीय कांग्रेस कमेटी के सचिव बनाए गए, जिस पद पर वे 1938 तक रहे। किसानों के प्रति उनके मन में विशेष लगाव था। इसीलिए उनको सन 1936 में किसानों की दशा का अध्ययन करनेवाली एक कमेटी का अध्यक्ष बनाया गया। पूरी लगन के साथ काम करके उन्होंने अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की, जिसमें जमींदारी उन्मूलन पर विशेष ज़ोर दिया। इसके बाद के 6 वर्षों तक वे इलाहाबाद की नगरपालिका से किसी-न-किसी रूप में जुड़े रहे। मैं समझता हूँ कि इस अनुभव ने भी शास्त्री जी के व्यक्तित्व और चिंतन को नागरिकों की

समस्याओं से निकट से परिचित कराया। उनके पास ग्रामीण जीवन का अनुभव था। अब इसके साथ ही इलाहाबाद नगरपालिका ने जनसेवा का भी अनुभव जोड़ दिया था। लोकतंत्र की इस आधारभूत इकाई मे कार्य करने के कारण वे देश की छोटी-छोटी समस्याओं और उनके निराकरण की व्यावहारिक प्रक्रिया से अच्छी तरह परिचित हो गए थे। कार्य के प्रति निष्ठा और मेहनत करने की अदम्य क्षमता के कारण सन 1937 में वे संयुक्त प्रांतीय व्यवस्थापिका सभा के लिए निर्वाचित हुए। सही मायने में यहीं से शास्त्री जी के संसदीय जीवन की शुरूआत हुई, जिसका समापन देश के प्रधानमंत्री पद तक पहुँचने में हुआ। शास्त्री जी को भारतीय राजनीति की इतनी सही और गहरी पकड़ थी कि श्रीमती इंदिरा गांधी ने उन्हें अपना राजनीतिक गुरु मानते हुए कहा था कि, "उन्ही के मार्ग-दर्शन में मेरा राजनीतिक जीवन शुरू हुआ।"

देश की आज़ादी के बाद उत्तर प्रदेश में तथा केंद्र में शास्त्री जी भिन्न-भिन्न पदों पर रहे। उत्तर प्रदेश में उन्हें गृह-मंत्री बनाया गया। बाद में पंडित नेहरू के अनुरोध पर वे केंद्र में आ गए। केंद्र में उन्होंने रेल और परिवहन, संचार, वाणिज्य, उद्योग और गृह मंत्रालय जैसे महत्त्वपूर्ण पद सँभाले। इन पदों पर रहते हुए शास्त्री जी ने अपनी जिस प्रशासकीय दक्षता का प्रमाण दिया, वह हमारे देश के लिए एक उदाहरण है। अपने मंत्रालयों के कार्यों में उनका दृष्टिकोण अत्यंत व्यावहारिक तथा सभी प्रकार की औपचारिकताओं से परे होता था। वे अपने को कभी भी अपने पद के कारण ऊँचा नहीं मानते थे। उनकी बड़ी सीधी-सी धारणा थी कि वे जनता के शासक नही, बल्कि जनता के सेवक हैं। ऐसी भावना से कार्य करने के कारण उन्हें अपने मंत्रालय में तो लोकप्रियता मिली ही, साथ-ही-साथ सारे देश में भी लोकप्रियता मिली। इसी लोकप्रियता का परिणाम था कि पंडित नेहरू के निधन के बाद देश ने उन्हें प्रधानमंत्री के रूप में स्वीकार किया। देश के इस महत्त्वपूर्ण पद पर रहते हुए केवल 19 महीने के छोटे-से समय में उन्होंने जितनी सफलताएँ और लोकप्रियता प्राप्त की, वह एक उदाहरण है। शास्त्री जी के सामने अपना उद्देश्य बिलकुल स्पष्ट था। उसमें किसी प्रकार का धुँधलापन या भटकाव नही था। वे हमारे देश के अत्यंत महत्त्वपूर्ण पदों पर रहे और इन पदों पर रहते

हुए स्वाभाविक रूप से वे अधिकार संपन्न भी थे। लेकिन उन्होने हमेशा आत्मसंयम से काम लिया तथा अधिकारों से अधिक कर्तव्यों को तरजीह दी। शायद इसीलिए शास्त्री जी इतने अधिक लोकप्रिय भी हो सके। उन्होंने अलीगढ मुस्लिम विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह में 19 दिसंबर 1964 को छात्रों को संबोधित करते हुए कुछ इसी तरह के विचार व्यक्त किए थे, "आपके भविष्य की मंज़िल चाहे जो कुछ भी हो, आप में से प्रत्येक को यह सोचना चाहिए कि आप सबसे पहले देश के नागरिक हैं। यह आपको संविधान द्वारा प्रदत्त कुछ अधिकार देता है, लेकिन इससे कुछ कर्तव्यों का भी बोझ आता है, जिसे समझना चाहिए। हमारा देश प्रजातांत्रिक है, जो निजी स्वतंत्रता देता है, लेकिन इस स्वतंत्रता का उपयोग एक व्यवस्थित समाज के हित में स्वेच्छा से लगाए गए प्रतिबंधों के तहत होना चाहिए और इन स्वैच्छित प्रतिबंधों का उपयोग और प्रदर्शन प्रतिदिन के जीवन में होना चाहिए।" अधिकार, कर्तव्य और आत्मसंयम के बारे में यह अत्यंत महत्त्वपूर्ण बात शास्त्री जी ने कही थी, जिसे आज याद रखने की ज़रूरत है।

बोध-प्रश्न

1. लाल बहादुर शास्त्री के साथ 'कर्मयोगी' विशेषण जोड़ना क्यों उपयुक्त है?
2. शास्त्री जी के चरित्र की किन विशेषताओं के कारण देशवासी उन पर विश्वास करते थे?
3. शास्त्री जी की लोकप्रियता के कुछ कारणों पर प्रकाश डालिए।
4. संवैधानिक अधिकारों और कर्तव्यों के प्रति शास्त्री जी के विचारो को अपने शब्दो में लिखिए।
5. शास्त्री जी ने किन रूपों मे अपनी प्रशासनिक क्षमता का परिचय दिया?
6. शास्त्री जी के जीवन से 'श्रम, सेवा, सादगी और समर्पण' भावों से संबंधित कोई दो उदाहरण दीजिए।

7. दो कलाकार

❑ भगवतीचरण वर्मा

पात्र-परिचय

चूड़ामणि	:	एक कवि
मार्तंड	:	एक चित्रकार
परमानंद	:	एक प्रकाशक
रामनाथ	:	एक रईस
बुलाकीदास	:	मकान मालिक

स्थान – किसी बड़े नगर के एक बड़े मकान का एक कमरा।

समय – दिन का कोई समय।

(एक बड़ा-सा कमरा। कमरे में किसी प्रकार का कोई फर्नीचर नही है। अंदर की तरफ़ कमरे के आधे भाग में तसवीरें बिखरी पड़ी हैं और दूसरे आधे भाग में पुस्तकें बिखरी पड़ी हैं। फ़र्श पर स्टेज (मंच) के एक विंग से लेकर दूसरे विंग तक एक चटाई बिछी है। चटाई के बीचोबीच एक तकिया है जो मंच के सामने न होकर दोनों विंगों के सामने है। तकिये को अपनी पीठ पर रखकर विंग की ओर मुँह किए एक ओर पंडित चूड़ामणि बैठे हैं और दूसरी ओर मिस्टर मार्तंड बैठे हैं। चूड़ामणि के आगे एक मोटा-सा रजिस्टर है जिस पर वे फाउंटेनपेन से लिख रहे हैं। मार्तंड के आगे एक छोटा-सा स्टैंड है जिस पर एक अधबनी तसवीर लगी है। उसके हाथ में एक तूली है और वह तसबीर बना रहा है।)

चूड़ामणि : (लिखते-लिखते कलम रोककर, पर उसकी आँखें रजिस्टर पर ही लगी हैं।) सुना मार्तंड! आज मैं प्रकाशक परमानंद के यहाँ गया था। वह बोला कि किताबें बिकती ही नहीं, पैसा कहाँ से आए! एक पैसा मेरे पास नहीं। और बदमाश ने कल ही एक मोटर खरीदी है।

मार्तंड : (तूली रोककर और तसवीर की ओर ध्यान से देखते हुए) भाई, यह तो बुरी सुनाई। मैं तो सोचता था कि तुम रुपए ले आए होंगे, नहीं तो मैं ही लाला रामनाथ के हाथ सात रुपए में ही तसवीर बेच देता।

चूड़ामणि : (रजिस्टर पर आँखें गड़ाता है, मस्तक पर बल पड़ जाते हैं।) क्या कहा? तुम भी रुपए नही लाए?

मार्तंड : (चित्र पर तूली से रंग देते हुए) लाता कैसे? भला बताओ, पचास रुपए की तसवीर के अगर कोई पच्चीस तक दे, तो भी वह बेची जा सकती है। लेकिन जब कोई यह कहे कि मैं सात रुपए के ऊपर एक कौड़ी भी नहीं दे सकता, तब भला तुम्हीं बताओ मैं क्या कर सकता था।

चूड़ामणि : (लिखता हुआ) हूँ! ऐसी बात है! तुम्हारी जगह अगर मैं होता तो मैं उससे साफ़ कहता कि तुम्हारे बाप ने भी कभी तसवीर खरीदी है कि तुम्हीं खरीदोगे — और यह कह कर मैं सीधा वापस आता।

मार्तंड : (तसवीर बनाता हुआ) अच्छा होता कि तुम्हीं मेरी जगह वहाँ होते।

चूड़ामणि : (लिखता हुआ) तो क्या तुम बुद्धू की तरह चले आए?

मार्तंड : (तसवीर बनाना रोक कर तसवीर की ओर देखता है।) नहीं यार! मैंने तो उठने की तैयारी करते हुए सिर्फ़ इतना कहा — तुम चोर हो। और जब उसने सिर उठाया तब मुझसे रहा न गया और मैंने उससे कहा— तुम उठाईगीर हो! और जब उसने मेरी तरफ देखा तब मैं उससे इतना कहने का लालच न रोक सका और मैंने उससे कहा — तुम गिरहकट हो!

चूड़ामणि : (हँसते हुए रजिस्टर को देखता है) बात तो तुमने बेजा नही कही!

मार्तंड : (मुसकराते हुए तसवीर पर तूली चलाने लगता है) नही, बात तो बेजा नहीं थी, लेकिन बात कहने के जोश में मैं यह भूल गया था कि मैं उसके घर में बैठा हूँ और उसके दस-पाँच नौकर भी हैं।

चूड़ामणि : (कलम ज़मीन पर ठोंकते हुए) तो फिर तुम पिटे भी?

मार्तंड : (तूली रोक कर) अगर पिटता, तो भी अच्छा था क्योंकि इधर बहुत दिनों से पिटा नहीं हूँ, लेकिन इसकी नौबत ही न आई। उसने नौकरों को आवाज़ दी और चार आदमी कमरे में घुस आए। उसने कहा – मारो! और मैं समझा कि मुझसे कह रहा है। लिहाज़ा मैंने ताना घूँसा, और वह बैठा था सामने। सो घूँसा ठीक उसकी नाक पर पड़ा।

चूड़ामणि : (चौंक कर हाथ ऊपर उठाते हुए) वेल डेन! शाबाश! (फिर लिखने लगता है) लेकिन तुम बच कैसे आए?

मार्तंड : (तूली नीचे रखते हुए) यह बात हुई कि नौकरों ने सम्हाला उसे, और मैं तसवीर उठा कर वहाँ से भागा। लोग ले-दे करते ही रहे – और मैंने सीधे घर पहुँचकर साँस ली। (कुछ रुककर) लेकिन आएगा वह ज़रूर! गलती से मैं अपनी तसवीर की जगह उसके बाप की तसवीर, जो उसी दिन विलायत से बन कर आई थी, उठा लाया हूँ!

चूड़ामणि : (लिखते हुए) खैर, चिंता न करो। मैं परमानंद की सोने की घड़ी उठाकर यह कहता भागा कि अगर दो घंटे के अंदर रुपया न दिया तो मैं घड़ी बेच दूँगा। (जेब से घड़ी निकालकर वह देखता है। बाहर से दरवाज़ा पीटने की आवाज़ आती है। दोनों अपना-अपना काम रोककर दरवाज़े की ओर देखते हैं।)

आवाज़ : चूड़ामणि जी!

मार्तंड : नहीं है।

(मुँह फेरकर तसवीर बनाने लगता है।)

आवाज़ : मार्तंड जी!

चूड़ामणि : नहीं हैं। (मुँह फेरकर लिखने लगता है।)

आवाज़ : आप दोनों मौज़ूद हैं। किवाड़ खोलिए!

दोनों : नहीं खोलेंगे!

आवाज़ : हम दरवाज़ा तोड़ देंगे।

चूड़ामणि : बड़ी खुशी से! आपका दरवाज़ा है।

मार्तंड : और अपनी चीज़ अगर आप तोड़ें तो भला हम रोकने वाले कौन होते है।

आवाज़ : हम आपसे प्रार्थना करते हैं कि दरवाज़ा खोलिए।

चूड़ामणि : किससे? चूड़ामणि से या मार्तंड से?

आवाज़ : दोनों से!

मार्तंड : दरवाज़ा खोलने का काम सिर्फ़ एक आदमी ही कर सकता है।

आवाज़ : अगर आप लोग दरवाज़ा नहीं खोलते तो मैं बाहर से ताला बंद किए देता हूँ!

चूड़ामणि : ऐसी हालत में दरवाज़ा हमें तोड़ना पड़ेगा।

मार्तंड : और नुकसान आपका होगा!

आवाज़ : मार्तंड जी, आपसे प्रार्थना करता हूँ कि दरवाज़ा खोलिए।

मार्तंड : हॉं, अब तुमने बात ढंग से की। (मार्तंड उठकर ज़ंजीर खोलता है। बुलाकीदास का प्रवेश। मार्तंड ज़ंजीर खुली छोड़कर लौटता है और अपनी जगह बैठकर तसवीर बनाने लगता है।)

बुलाकीदास : (बीच कमरे में खड़े होकर) छह महीने हो गए! मुझे किराया चाहिए।

(दोनों चुप रहते हैं)

बुलाकीदास : आप लोग सुनते हैं?

चूड़ामणि : कृपा करके आप बात मार्तंड जी से करें! .

बुलाकीदास : क्यों? आपसे क्यों नहीं?

चूड़ामणि : इसलिए कि आपने किवाड़ खुलवाया है मार्तंड से, मेरा किवाड़ अभी तक बंद है! लिहाज़ा आप को मुझसे बात करने का कोई अधिकार नहीं!

(लिखने लगता है।)

मार्तंड : (बुलाकीदास की तरफ मुड़कर) लाला बुलाकीदास, आपने पहले आवाज़ दी चूड़ामणि को। वे यहाँ मौजूद हैं, आप उनसे बातचीत करें। (तसवीर बनाने लगता है।)

बुलाकीदास : मैं आप दोनों से कहता हूँ कि जब से आप लोग इस कमरे में आए हैं, तब से आप लोगों ने एक पैसा भी नहीं दिया। छह महीने हो गए। पच्चीस रुपए के हिसाब से डेढ़ सौ रुपए होते हैं।

चूड़ामणि : (लिखना बंद करके बुलाकीदास की ओर घूमता है।) बिलकुल झूठ! आपके नाती के मुंडन के निमंत्रण-पत्र पर मंगलाचरण की कविता मैंने लिखी थी, एक महीने का किराया वह अदा हुआ। (चूड़ामणि फिर से लिखना शुरू कर देता है, बुलाकीदास आश्चर्य से चूड़ामणि की ओर देखता है।)

मार्तंड : (तेज़ी से घूमकर) और आपको पूजा करने के लिए राधाकृष्ण की तसवीर मैंने बना कर दी थी, दूसरे महीने का किराया वह अदा हुआ। (यह कहकर तसवीर बनाने लगता है। बुलाकीदास आश्चर्य से मार्तंड को देखता है।)

चूड़ामणि : (घूमकर) आपके छोटे लड़के के विवाह पर मैंने कवि-सम्मेलन करवा दिया था, तीसरे महीने का किराया वह अदा हुआ। (कहकर लिखने लगता है। बुलाकीदास आश्चर्य से चूड़ामणि को देखता है।)

मार्तंड : (घूमकर) जन्माष्टमी में आपके मंदिर की झाँकी मैंने सजवा दी थी, चौथे महीने का किराया वह अदा हुआ। (कहकर तसवीर बनाने लगता है। बुलाकीदास आश्चर्य से मार्तंड को देखता है, फिर कुछ चुप रहकर)।

बुलाकीदास : अजी वाह! इतने ज़रा-ज़रा-से काम के रुपए! वह तो आपने अपनेपन में कर दिया था।

मार्तंड : (तसवीर बनाता हुआ) हमने काम तो किया, आप तो बिना काम किए हुए ही रुपया माँगते हैं।

चूड़ामणि : (लिखता हुआ) और आप भी अपनेपन में किराया जाने दीजिए!

बुलाकीदास : आप लोग अजीब तरह के आदमी हैं। अच्छा यह चार महीने का किराया हुआ। अब दो महीने का किराया दीजिए और मकान खाली कीजिए।

चूड़ामणि : (घूमकर) संसार का एक महाकवि आपके इस चिड़ियाखाने-नुमा मकान में रहा – पाँचवे महीने का किराया वह अदा हुआ!

मार्तंड : (घूमकर) संसार का एक श्रेष्ठ चित्रकार आपके इस जानवरों के रहने काबिल मकान में रहा, छठे महीने का किराया वह अदा हुआ! (परमानंद का प्रवेश। उन्हें देखते ही चूड़ामणि उठ खड़ा होता है।)

चूड़ामणि : आइए परमानंद जी, पधारिए, आपका स्वागत है। अभी-अभी आप की कीर्ति – गाथा पर एक पुराण आरंभ किया है। (बैठकर पढ़ता है) झूठ, दगाबाज़ी, मक्कारी, दुनिया के जितने छल-छंद नहीं बचे हैं इनसे कोई; धन्य प्रकाशक परमानंद। इसलिए हम लिखने बैठे लंबा-चौड़ा एक पुराण ....

परमानंद : (हाथ जोड़ता है) चूड़ामणि जी, अब बस कीजिए। मैं आपके रुपए लाया हूँ।

चूड़ामणि : (घूमकर) अच्छा रुपए लाए हैं? (मुसकराता हुआ रजिस्टर की कविता काटता है) तो फिर यह पुराण लिखना बंद किए देता हूँ। (परमानंद जेब से कुछ नोट निकालकर देता है। चूड़ामणि बैठे-ही-बैठे नोट लेकर बिना गिने उन्हें अपनी जेब में रख लेता है।)

परमानंद : अच्छा, अब मेरी घड़ी?

चूड़ामणि : (आश्चर्य से परमानंद को देखता है) तो आप घड़ी वापस ले जाएँगे?

परमानंद : जी हाँ!

चूड़ामणि : बहुत अच्छा! (बाएँ हाथ से घड़ी निकालकर परमानंद को देता है। दाहिने हाथ से रजिस्टर पर लिखता है) यह लीजिए अपनी घड़ी और यह शुरू हुआ परमानंद पुराण! उनकी बीवी मना रही है हो जाए वह जल्दी राँड़!

परमानंद : (हाथ जोड़ते हुए) नहीं, नही, यह घड़ी मेरी ओर से आपको भेंट है! (चूड़ामणि घड़ी वापस लेता है। इसी समय लाला रामनाथ का प्रवेश। लाला रामनाथ के हाथ में एक चित्र है! मार्तंड उठ खड़ा होता है।)

मार्तंड : आइए, पधारिए लाला रामनाथ साहेब! कैसे कष्ट करना पड़ा?

रामनाथ : मार्तंड जी, आप अपनी तसवीर की जगह मेरे पिताजी का चित्र ले आए हैं! यह लीजिए और मेरे पिताजी का चित्र वापस कीजिए।

मार्तंड : अरे हाँ, बड़ी गलती हो गई, मैं क्षमा प्रार्थी हूँ। (बगल से चित्र उठाकर रामनाथ को देता है) यह लीजिए अपने पिताजी का चित्र।

रामनाथ : (चित्र देखता है और फिर क्रोध में) यह आपने क्या किया? नाक गायब कर दी?

मार्तंड : लाला जी, नाक तो आपने अपने पिताजी की कटवा दी पचास रुपए के चित्र के दाम सात रुपए लगाकर! (मार्तंड सब लोगों की ओर घूमता है) आप लोग जानते हैं – ये हैं लाला रामनाथ! आपके पिता बड़े दानी थे, बड़े पुण्यात्मा थे, और आज,उनके सुपुत्र ने उनकी नाक कटवा दी! आपकी तारीफ़ ....

रामनाथ : (बात काटकर) अच्छा, अच्छा! यह तसवीर मैंने ले ली! यह लीजिए पचास रुपए और यह तसवीर ठीक कर दीजिए! (रामनाथ मार्तंड को नोट देता है। मार्तंड बिना गिने ही नोट अपनी जेब में रख लेता है, फिर रामनाथ के हाथ से चित्र लेकर तूली से नाक ठीक कर देता है)

मार्तंड : यह लीजिए उनकी नाक सही सलामत वापस आ गई। (रामनाथ चित्र लेकर जल्दी-जल्दी जाता है और पीछे-पीछे परमानंद जाता है।)

बुलाकीदास : अब आपके पास रुपए आ गए हैं। किराया अदा कर दीजिए।

चूड़ामणि : कह तो दिया कि किराया हम लोग दे चुके। अब जब चढ़ेगा तब ले लेना।

बुलाकीदास : किराया चढ़ने की नौबत ही न आएगी। आप लोग अभी यह मकान खाली कीजिए।

मार्तंड : बुलाकीदास, हम आपकी तसवीर बनाकर प्रदर्शनी में भेजे और आपकी उस तसवीर में आपकी नाक का होना या न होना हमारे इस मकान में रहने या इस मकान से जाने पर निर्भर है।

चूड़ामणि : ओर अगर हम इस मकान से गए तो परमानंद पुराण को हम बुलाकी पुराण बना देंगे ! समझे !

बुलाकीदास : आप दोनों बड़े बदमाश हैं – हम आप लोगों को समझ लेंगे।

(तेज़ी से जाता है। चूड़ामणि उठकर दरवाज़ा बंद करता है। फिर अपनी जगह बैठकर लिखने लगता है। मार्तंड चित्र बनाने लगता है।)

पटाक्षेप

बोध-प्रश्न

1. मार्तंड ओर चूडामणि के व्यवसाय को बताने के लिए लेखक ने मंच-सज्जा में क्या संकेत दिए हैं?
2. मार्तंड लाला रामनाथ के घर पिटने से कैसे बच गया?
3. रुपए पाने में असमर्थ रहने पर भी दोनों कलाकार क्यों आश्वस्त थे कि रुपए देने से मना करने वाले उनके पास अवश्य आएँगे?
4. बिना रुपए दिए दोनों कलाकार किराया देने से मुक्ति कैसे पा गए?
5. परमानंद पुराण क्या था? उसका क्या प्रभाव पडा?
6. 'आप दोनों बड़े बदमाश हैं' – कलाकारों के बारे में बुलाकीदास के इस कथन के पक्ष या विपक्ष में तर्क दीजिए।
7. आप कैसे कह सकते हैं कि दोनो कलाकरों में गंभीर परिस्थितियों को भी हास्यपूर्ण बना देने की अद्भुत क्षमता है?
8. यदि आप बुलाकीदास के स्थान पर होते तो स्थिति से कैसे निपटते?

5.2.3 General Data Sheet for Mentally Retarded Children

The General Data Sheet for Mentally Retarded children was meant to collect general information about the MR children under study like name, sex, name of the institution, locality, type of the institution (residential/non-residential/residential-cum-Day Centre) and level of mental retardation (mild/moderate/severe). The General Data Sheet thus prepared is given as Appendix V.

5.2.4 General Data Sheet for Parents

The General Data Sheet for Parents was meant to collect general information about the parents of the MR children under study. The data sheet contains provision for all the essential general information about the parents under study (Vide Appendix VI).

5.3 Reliability and Validity of the Tools used

The reliability and validity co-efficients calculated for the Parent Involvement Scale and BSA-Test indicate that the tests are reasonably reliable and valid instruments for the purpose of the present study. The Manuals of the tests contain the details relating to the reliability and validity of the tests.

5.4 Procedure for Data Collection

The Parent Involvement Scale was administered on the parents of the MR children under study. Home visits were made for meeting the parents to fill in the Parent

Involvement Scale and the General Data Sheets. The relevant data were obtained from both the parents (father and mother), wherever possible, and in some houses, a single parent (father or mother available) provided the information needed. For practical purposes, 'parent involvement' was considered as a single index, combining the involvement of father and mother in the education and management of their MR children. The BSA-Test was administered personally on the MR children to measure their level of attainment in the six basic skills under study. The co-operation of the class teachers were sought in the administration of the BSA-Test. General information regarding the MR children were collected using the General Data Sheet. The data thus collected were processed appropriately.

5.5 Identification of High, Average and Low Parental Involvement Groups

The High, Average and Low Parental Involvement Groups were identified using mean and sigma ($M+\sigma$), the details of which are described later in the Analysis section (Vide p.30).

5.6 Identification of High, Average and Low Basic Skills Attainment Groups

As in the previous case, the High, Average and Low Basic Skills Attainment Groups were identified using $M \pm \sigma$, the details of which as described later in the analysis section (vide p.31).

5.7. Scoring

The scoring scheme used for the Parent Involvement Scale and the BSA-Test for assessing the attainment of the six basic skills are detailed in the respective Manuals of Directions (Appendix II and Appendix IV respectively).

5.8. Data Processing

The data obtained were analysed using appropriate statistical techniques like computation of Mean (M), Sigma (σ), Percentages, Critical Ratio (two-tailed test of significance for difference between percentages) and chi-square test of significance (χ^2). The details of the analysis carried out are presented in the following sections.

6 ANALYSIS AND DISCUSSIONS

The analysis is carried out with a view to finding out specific answers to the objectives taken up in the study. The details of the analysis are presented below under the following major heads:

6.1. Identification of the level of Parental Involvement in the education and management of MR children.

6.2. Identification of the level of attainment of MR children in the following six basic skills:

6.2.1. Self-care skills
6.2.2. Reading skills
6.2.3. Writing skills
6.2.4. Arithmetic skills
6.2.5. Communication skills
6.2.6. Social skills

6.3. Comparison of male and female MR children with respect to their level of attainment in the six basic skills under study.

6.4. Determination of the association between Parental Involvement in the education and management of MR children and their attainment in each of the six basic skills under study.

6.5. Influence of Parental Involvement on the attainment of each of the six basic skills under study with respect to the three sub-groups of MR children.

The details of the analysis done with respect to each section are presented below.

6.1 Identification of the level of Parental Involvement in the education and management of MR children.

An attempt is made in this section to study the level of Parental Involvement in the education and management of the MR children in the institutions for the mentally retarded in Kerala. The details of identifying the high, average and low groups with respect to parental involvement are described below.

Identification of High, Average and Low Parental Involvement groups.

The High, Average and Low Parental Involvement groups were identified by classifying the general sample into three groups viz., high, average and low parental involvement groups, using parental involvement scores. Assuming a normal distribution of parental involvement scores, the conventional procedure of using sigma distance for dividing the sample was used, considering the base line of the normal curve representing the distribution to the extent from -3 to +3 i.e., over a range of 6, a range of 2 was allotted for each group. Thus, subjects whose parental involvement scores fell between $M \pm \sigma$ were classified as 'Average Parental Involvement Group.' Those subjects whose score was above $(M+\sigma)$ were considered as 'High Parental Involvement Group', while subjects whose scores were below $(M - \sigma)$ were classified as 'Low Parental Involvement Group'. The distribution of the sample in the three Parental Involvement groups is presented in Table 4.

Table: 4. Classification of High, Average and Low Parental Involvement Groups

Levels of Parental Involvement	Number	Percentage
High Parental Involvement Group (above $M+\sigma$)	38	12.06%
Average Parental Involvement Group (between $M+\sigma$ and $M-\sigma$)	214	67.94%
Low Parental Involvement Group (below $M-\sigma$).	63	20.00%
Total	315	100

It is evident from Table 4 that only a small proportion (12.06%) of parents under study show high level of involvement in the education and management of their MR children. The table further reveals that 20 per cent of the parents belong to the low parental involvement group, while the majority (67.94%) have average involvement in the education and management of their MR children.

6.2. Identification of the level of attainment of MR children in the six basic skills

An attempt is made here to identify the level of attainment of MR children in the following six basic skills:

6.2.1 Self-care skills   6.2.2 Reading skills

6.2.3 Writing skills   6.2.4 Arithmetic skills

6.2.5 Communication skills   6.2.6 Social skills

Identification of the High, Average, and Low attainment groups with respect to each of the six basic skills under study was done following the same procedure discussed in the earlier section in connection with the identification of Parental Involvement Groups. The details of the classification are presented in Tables 5 to 10.

Table: 5. Level of Attainment in Self-care skills of MR children under study

Level of attainment in self-care skills.	Boys No. & %	Girls No. & %	Total No. & %
High Self-care skills Attainment Group (Above M+σ).	31 (9.84%)	20 (6.35%)	51 (16.19%)
Average Self-care skills Attainment Group (between M+σ and M-σ).	131 (41.59%)	89 (28.25%)	220 (69.84%)
Low Self-care skills Attainment Group (below M-σ).	25 (7.94%)	19 (6.03%)	44 (13.97%)
Total	187 (59.37%)	128 (40.63%)	315 (100%)

Table: 6. Level of Attainment in Reading Skills of MR children under study

Level of Attainment in Reading skills	Boys No. & %	Girls No. & %	Total No. & %
High Reading Skills Attainment Group (above M+σ).	58 (18.42%)	37 (11.74%)	95 (30.16%)
Average Reading Skills Attainment Group (between M+σ and M-σ).	69 (21.90%)	59 (18.73%)	128 (40.63%)
Low Reading Skills Attainment Group (below M-σ).	60 (19.05%)	32 (10.16%)	92 (29.21%)
Total	187 (59.37%)	128 (40.63%)	315 (100%)

Table: 7. Level of Attainment in Writing Skills of MR children under study

Level of Attainment in Writing Skills	Boys No. & %	Girls No. & %	Total No. & %
High Writing Skills Attainment Group (above M+σ).	29 (9.21%)	18 (5.71%)	47 (14.92%)
Average Writing Skills Attainment Group (between M+σ and M-σ).	115 (36.51%)	84 (26.67%)	199 (63.18%)
Low Writing Skills Attainment Group (below M-σ).	43 (13.65%)	26 (8.25%)	69 (21.90%)
Total	187 (59.37%)	128 (40.63%)	315 (100%)

Table: 8. Level of Attainment in Arithmetic Skills of MR children under study

Level of Attainment in Arithmetic Skills	Boys No. & %	Girls No. & %	Total No. & %
High Arithmetic Skills Attainment Group (above M+σ).	22 (6.98%)	21 (6.67%)	43 (13.65%)
Average Arithmetic Skills Attainment Group (between M+ and M-σ).	139 (44.14%)	95 (30.15%)	234 (74.29%)
Low Arithmetic Skills Attainment Group (below M-σ).	26 (8.25%)	12 (3.81%)	38 (12.06%)
Total	187 (59.37%)	128 (40.63%)	315 (100%)

Table: 9. Level of Attainment in Communication Skills of MR children under study

Level of Attainment in Communication Skills.	Boys No. & %	Girls No. & %	Total No. & %
High Communication Skills Attainment Group (Above M+σ).	49 (15.56%)	34 (10.79%)	83 (26.35%)
Average Communication Skills Attainment Group (between M+σ and M-σ).	116 (36.83%)	82 (26.03%)	198 (62.86%)
Low Communication Skills Attainment Group (below M-σ).	22 (6.98%)	12 (3.81%)	34 (10.79%)
Total	187 (59.37%)	128 (40.63%)	315 (100%)

Table: 10. Level of Attainment in Social Skills of MR children under study

Level of Attainment in Social Skills	Boys No. & %	Girls No. & %	Total No. & %
High Social Skills Attainment Group (above M+σ).	34 (10.79%)	29 (9.21%)	63 (20.00%)
Average Social Skills Attainment Group (between M+σ and M-σ).	127 (40.33%)	87 (27.61%)	214 (67.94%)
Low Social Skills Attainment Group (below M-σ).	26 (8,25%)	12 (3.81%)	38 (12.06%)
Total	187 (59.37%)	128 (40.63%)	315 (100%)

Discussion of results:

It is clear from Table 5 that only 16.19 per cent of the MR children under study fall in the High Self-care skills attainment group. The table further shows that majority of the MR children (69.84%) fall in the average group and the remaining 13.97 per cent fall in the low group.

Table 6 shows that 30.16 per cent of MR children under study belong to the High Reading Skills Attainment Group, while others fall either in the Average Group (40.63%) or Low group (29.21%) with respect to Reading skills attainment.

Regarding Writing skills attainment, it is seen from Table 7 that only 14.92 per cent of the MR children under study have high attainment in writing skills, whereas the majority (63.18%) belong to the Average Writing Skill attainment group and the remaining 21.90 per cent of the MR children fall in the low group.

With respect to Arithmetic Skills attainment, it is found from Table 8 that, as in the previous cases, majority of the MR children under study belong to the Average Arithmetic Skills attainment group (74.29%), while others fall either in the low (12.06%) or High Arithmetic Skills attainment group (13.65%).

As far as the Communication Skills attainment is concerned, it is found that 26.35 per cent of the MR children fall in the 'High Communication Skills Attainment Group', while the majority of the MR children fall in the Average Communication Skills Attainment Group (62.86%), the remaining 10.79 per cent being obviously in the low group (vide Table 9).

It is found from Table 10 that only 20 per cent of the MR children under study fall in the High Social Skills attainment group. The table further shows that majority of the MR children belong to the average group (67.94%), while the remaining 12.06 per cent falls in the low group.

Summated form of the level of attainment of MR children in the six basic skills under study

In order to get a clear picture about the comparative position of the MR children with respect to their attainment in the six basic skills under study, a further attempt is made here to present the details in this context in a summated form as shown in Table 11.

Table: 11. Summated form of the Level of Attainment of MR children in the six basic skills under study

Basic skills	Level of Attainment High	Average	Low	Total
Self-care skills	51 (16.19%)	220 (69.84%)	44 (13.97%)	315 (100%)
Reading skills	95 (30.16%)	128 (40.63%)	92 (29.21%)	315 (100%)
Writing skills	47 (14.92%)	199 (63.18%)	69 (21.90%)	315 (100%)
Arithmetic skills	43 (13.65%)	234 (74.29%)	38 (12.06%)	315 (100%)
Communication skills	83 (26.35%)	198 (62.86%)	34 (10.79%)	315 (100%)
Social skills	63 (20.00%)	214 (67.94%)	38 (12.06%)	315 (100%)

As it is evident from Table 11, a relatively higher proportion of MR children in the 'High' and 'Low' attainment groups show that they have attainment in Reading skills, the proportions in the 'High' and 'Low' groups being 30.16 per cent and 29.21 per cent respectively. A relatively lower proportion of MR children in the High group (13.65%) and the Low group (12.06%) show attainment in Arithmetic skills. As a result of this, a reverse situation is found with respect to the average group, i.e., a relatively lower proportion (40.63%) is found for Reading skills and a relatively higher proportion (74.29%) for Arithmetic skills in the average attainment group.

6.3. Comparison of the male and female MR children with respect to their level of Attainment in the Six Basic Skills under study

The male and female MR children under study were compared to find out if there is any significant difference between them in the level of attainment with respect to each of the six basic skills under study. The comparison was done by applying the two-tailed test of significance for difference between percentages (Garrett: 1985, pp.235-236). The details regarding the data and results of the test of significance are shown in Tables 12 to 17.

Table: 12. Comparison of Male and Female MR children: Attainment in self-care skills

Level of Attainment in self-care skills	Boys N_1	Boys P_1	Girls N_1	Girls P_1	CR	Level of significance
High Self-care skills attainment.	31	60.80%	20	39.20%	1.50	$P > .05$
Average Self-care skills attainment.	131	59.50%	89	40.50%	2.76	$P < .01$
Low Self-care skills attainment.	25	56.80%	19	43.20%	0.89	$P > .05$

Table: 13. Comparison of Male and Female MR children: Attainment in Reading Skills.

Level of attainment in Reading skills.	Boys N_1	Boys P_1	Girls N_1	Girls P_1	CR	Level of significance
High Reading skills attainment.	58	61.00%	37	39.00%	2.09	$P < .05$
Average Reading skills attainment.	69	53.90%	59	46.10%	0.88	$P > .05$
Low Reading skills attainment.	60	65.20%	32	34.80%	2.79	$P < .01$

Table: 14. Comparison of Male and Female MR children: Attainment in Writing Skills.

Level of Attainment in Writing skills.	Boys N_1	Boys P_1	Girls N_1	Girls P_1	CR	Level of significance
High Writing skills attainment.	29	61.70%	18	38.30%	1.57	$P > .05$
Average Writing skills attainment.	115	57.80%	84	42.20%	2.17	$P < .05$
Low Writing skills attainment.	43	62.30%	26	37.70%	1.98	$P > .05$

Table: 15. Comparison of Male and Female MR children: Attainment in Arithmetic Skills.

Level of attainment in Arithmetic skills.	Boys N_1	Boys P_1	Girls N_1	Girls P_1	CR	Level of significance.
High Arithmetic skills attainment.	22	51.20%	21	48.80%	0.15	$P > .05$
Average Arithmetic skills attainment.	139	59.40%	95	40.60%	2.82	$P < .01$
Low Arithmetic skills attainment.	26	68.40%	12	31.60%	2.12	$P < .05$

Table: 16. Comparison of Male and Female MR Children: Attainment in Communication skills.

Level of attainment in Communication skills.	Boys N_1	Boys P_1	Girls N_1	Girls P_1	CR	Level of significance.
High Communication skills attainment.	49	59.00%	34	41.00%	1.61	$P > .05$
Average Communication skills attainment.	116	58.60%	82	41.40%	2.44	$P < .05$
Low Communication skills attainment.	22	64.70%	12	35.30%	1.65	$P > .05$

Table: 17. Comparison of Male and Female MR Children: Attainment in Social skills.

Level of attainment in Social skills	Boys N_1	Boys P_1	Girls N_1	Girls P_1	C R	Level of significance
High Social skills attainment.	34	54.00%	29	46.00%	0.63	$P > .05$
Average Social skills attainment.	127	59.30%	87	40.70%	2.67	$P < .01$
Low Social skills attainment.	26	68.40%	12	31.60%	2.12	$P < .05$

Discussion

Comparison of male and female MR children with respect to their attainment in self-care skills (vide Table 12) showed that the MR children in the average group alone differ significantly, the difference being in favour of boys (C.R=2.76; $P < .01$). In other words, the proportion of boys is higher in the Average group when compared to their female counterparts. No sex difference is noticed in the high and low self-care-attainment groups (C.R. values 1.50 and 0.89 respectively). In other words, boys and girls in the high and low groups are identifical with respect to their attainment in self-care skills.

In the case of attainment in Reading skills (vide Table 13) a significant difference between the sexes is noted with respect to the high group (C.R.=2.09; $P < .05$) and the low group (C.R.=2.79; $P < .01$), the difference being in favour of boys in both cases. To put it differently, there is a higher proportion of boys in the high and low Reading skills attainment group. No sex difference is noticed in the case of the average group (C.R.=0.88), showing that the attainment in Reading skills of male and female MR children in the average group is the same.

As far as the attainment in Writing skills is concerned, the Table 14 reveals that a sex difference is noticed in the case of the MR children in the average group (C.R.=2.17; $P < .05$) and the low group (C.R.=1.98; $P < .05$)

the difference being in favour of boys in both the cases. As noticed in the earlier cases (Reading and Writing skills attainment), here also, the proportion of boys is higher in the average and low writing skills attainment groups, when compared to their female counterparts. No sex difference is noticed in the case of the high group (C.R.=1.57).

In the case of attainment in Arithmetic skills (vide Table 15), the comparison reveals that sex difference is noticed in the case of boys and girls in the average group (C.R.=2.82; $P < .01$) and the low group (C.R.=2.12; $P < .05$), the difference being in favour of boys, as in the previous cases. The proportion of boys is higher in the high and low arithmetic skills attainment groups, as compared to girls. No sex difference is noticed in the high arithmetic skill attainment group (C.R.=0.15).

As seen in Table 16, the male and female MR children in the average group differ significantly showing a clear sex difference in Communication skills attainment (C.R.=2.44; $P < .05$). The difference noticed in this case too is in favour of the boys. No sex difference is noticed in communication skill attainment in the high and low groups (C.R. values 1.61 and 1.65 respectively).

Comparison of the male and female MR children with respect to their attainment in Social skills (vide Table 17)

showed that the sexes differ significantly both in the average group (C.R.=2.67; $P<.01$) and the low group (C.R.=2.12; $P<.05$), the difference being in favour of the boys, as in the previous cases. In other words, the proportion of boys is higher in the average and low social skills attainment group, when compared to girls. No sex difference is seen in the case of the high group (C.R.=0.63).

6.4 Determination of the association between Parental Involvement in the education and management of MR children and their Attainment in each of the six basic skills under study

In this section, an attempt is made to study the association between Parental Involvement and attainment of the MR children under study in the following six basic skills:

6.4.1 Self-care skills 6.4.2 Reading skills

6.4.3 Writing skills 6.4.4 Arithmetic skills

6.4.5 Communication skills 6.4.6 Social skills

Chi-square test of significance (X^2) was done to determine the association between Parental Involvement and attainment in each of the six basic skills under study. The details of the analysis done in this context are presented below.

6.4.1. Association between Parental Involvement and attainment in self-care skills of MR children.

Table 18 shows the details regarding the χ^2 test of significance for deciding the association between Parental Involvement and attainment in self-care skills of MR children in Kerala.

Table: 18. Association between Parental Involvement and attainment in Self-care skills of MR children: χ^2 test of significance.

Self-care skills / Parental Involvement	High	Average	Low	Total
High	8 (6.5)	27 (27.3)	5 (6.2)	40
Average	33 (35.1)	155 (148.1)	29 (33.8)	217
Low	10 (9.4)	33 (39.6)	15 (9)	58
Total	51	215	49	315

$\chi^2 = 6.845$, df = 4

Table 18 shows that the χ^2 value obtained is 6.845, which is less than the Table value for χ^2 test of significance at 0.05 level which is 9.488 (Garrett: 1985, Table E, p.462). This indicates that there is no evidence of any real association between Parental Involvement and attainment in self-care

skills, since the observed results are close to those to be expected on the hypotheses of independence.

6.4.2. Association between Parental Involvement and attainment in Reading skills of MR children.

The details regarding the χ^2 test of significance for deciding the association between Parental Involvement and attainment in Reading skills of MR children in Kerala are given in Table 19.

Table: 19. Association between Parental Involvement and attainment in Reading Skills of MR children: χ^2 test of significance

Parental Involvement \ Reading skills	High	Average	Low	Total
High	10 (10.4)	18 (17.9)	10 (9.65)	38
Average	59 (57.6)	101 (99.8)	51 (53.6)	211
Low	17 (18)	30 (31.2)	19 (16.8)	66
Total	86	149	80	315

$\chi^2 = 0.5955$, df = 4.

The χ^2 value obtained in the above table (vide Table 19 is 0.5955 which is much lower than the Table value for χ^2 test of significance at 0.05 level, revealing that there is no real association between Parental Involvement and attainment in Reading skills.

6.4.3 Association between Parental Involvement and attainment in Writing skills of MR children.

Table 20 shows the details regarding the χ^2 test of significance for deciding the association between Parental Involvement and attainment in Writing skills of MR children in Kerala.

Table: 20. Association between Parental Involvement and attainment in Writing skills of MR children: χ^2 test of significance.

Parental Involvement \ Writing skill	High	Average	Low	Total
High	4 (5.5)	24 (24)	10 (8.4)	38
Average	33 (31.3)	131 (135.2)	50 (47.5)	214
Low	9 (9.2)	44 (39.8)	10 (14)	63
Totals	46	199	70	315

$\chi^2 = 2.656$ df = 4

It is seen from Table 20 that the χ^2 value obtained is 2.656 which is lower than the Table value for χ^2 test of significance at 0.05 level, showing that there is no real association between Parental Involvement and attainment in Writing skills of MR children in Kerala.

6.4.4 Association between Parental Involvement and attainment in Arithmetic skills of MR children.

The details regarding the χ^2 test of significance for deciding the association between Parental Involvement and attainment in Arithmetic skills of MR children in Kerala are given in Table 21.

Table: 21. Association between Parental Involvement and attainment in Arithmetic skills of MR children: χ^2 test of significance

Arithmetic skills / Parental Involvement	High	Average	Low	Total
High	4 (4.9)	27 (29.3)	8 (4.7)	39
Average	27 (27)	166 (160.3)	20 (25.7)	213
Low	9 (8)	44 (47.4)	10 (7.6)	63
Total:	40	237	38	315

$\chi^2 = 5.248$ df = 4

Table 21 shows that the χ^2 value obtained is 5.248, which is lower than the Table value for χ^2 test of significance at 0.05 level. This shows that there is no evidence of any real association between Parental Involvement and attainment in Arithmetic skills, since the observed results are close to those to be expected on the hypotheses of independence.

6.4.5 Association between Parental Involvement and attainment in Communication skills of MR children.

Table 22 shows the details regarding the χ^2 test of significance for deciding the association between Parental Involvement and attainment in Communication skills of MR children in Kerala.

Table: 22. Association between Parental Involvement and attainment in Communication skills of MR children: χ^2 test of significance.

Communication skills / Parental Involvement	High	Average	Low	Total
High	9 (9.7)	26 (24.4)	3 (3.9)	38
Average	57 (54.3)	142 (137.2)	15 (22.4)	214
Low	14 (16)	34 (40.4)	15 (6.6)	63
Total	80	202	33	315

$\chi^2 = 15.05 \quad df = 4$

It is seen from Table 22 that the χ^2 value obtained is 15.05 which is higher than the Table value for χ^2 test of significance at 0.05 level, indicating that there is a real association between Parental Involvement and attainment in Communication skills, since the observed results are not close to those to be expected on the hypotheses of independence.

6.4.6 Association between Parental Involvement and attainment in Social skills of MR children.

The details regarding the tests of significance for deciding the association between Parental Involvement and attainment in Social skills of MR children in Kerala are given in Table 23.

Table: 23. Association between Parental Involvement and attainment in Social skills of MR children: χ^2 test of significance

Parental Involvement \ Social skills	High	Average	Low	Total
High	7 (7.6)	24 (26.1)	7 (4.3)	38
Average	41 (42.8)	155 (146.7)	18 (24.5)	214
Low	15 (12.6)	37 (43.2)	11 (7.2)	63
Total	63	216	36	315

$\chi^2 = 7.511$ df=4

It is seen from Table 23 that the X^2 value obtained is 7.511 which is lower than the Table value for X^2 test of signifidance at 0.05 level, indicating that there is no real association between Parental Involvement and attainment in Social skills.

6.5 Influence of Parental Involvement on the attainment of each of the six basic skills under study with respect to the three sub-groups of MR children.

The results found in the earlier sections of the analysis (vide Section 6.4) prompted a further exploration with respect to the association between Parental Involvement in the education and management of MR children and their attainment in each of the six basic skills under study. It was, therefore, decided at this stage to study the influence of Parental Involvement on the attainment of each of the six basic skills under study with respect to the following three sub-groups of mentally retarded children:

6.5.1 mildly retarded children.

6.5.2 moderately retarded children.

6.5.3 severely retarded children.

The analysis carried out in this context with respect to each of the six basic skills under study is presented below:

6.5.1 Influence of Parental Involvement on attainment in Self-care skills of the three sub-groups of MR children.

Tables 24 to 26 show the details relating to the influence of Parental Involvement on attainment of self-care skills of the three sub-groups of MR children under study.

Table: 24. Influence of Parental Involvement on attainment in Self-care skills of Mildly retarded children

Self-care skills / Parental Involvement	High	Average	Low	Total
High	(6.9) 6	(30.1) 30	(6.9) 8	44
Average	(1.9) 2	(8.2) 9	(1.9) 1	12
Low	(2) 1	(0.7) 0	(0.2) 0	1
Total	9	39	9	57

df=4 χ^2 =4.901

Table: 25. Influence of Parental Involvement on Attainment of Self-care skills of Moderately retarded children.

Parental Involvement \ Self-care skills	High	Average	Low	Total
High	(0.66) 1	(4.1) 3	(1.2) 2	6
Average	(21.9) 23	(136.8) 143	(39.5) 34	199
Low	(2.2) 1	(13.7) 10	(3.9) 9	20
Total	25	156	45	227

$\chi^2 = 10.326$ df = 4

Table: 26. Influence of Parental Involvement on Attainment in Self-care skills of Severely retarded children.

Parental Involvement \ Self-care skills	High	Average	Low	Total
High	0	0	0	0
Average	(1.5) 2	(4.6) 4	(1.8) 2	8
Low	(4.5) 4	(13.4) 14	(5.2) 5	23
Total	6	18	7	31

$\chi^2 = 0.349$ df = 4

Discussions

It is clear from the above three tables (vide Tables 24 to 26) that when the sub groups of MR children were treated differently, a significant association is noticed between Parental Involvement and Self-care skills of Moderately retarded children (X^2=10.326 significant at 0.05 level). This implies that parental involvement influences the attainment in self-care skills of moderately retarded children. In the case of the other two sub-groups viz., midly retarded and severely retarded groups, parental involvement does not seem to have any significant influence on the attainment in self-care skills. The above finding is not consistent with popular expectations. One would naturally expect an association between Parental Involvement and attainment in self-care skills of mildly retarded children also. A satisfactory explanation for this is rather difficult. A possible explanation for not finding an association between the variables of the study may be that the mildly retarded children can more or less manage to develop self-care skills without much parental support. This finding throws light on the popular belief that too much parental involvement would make the children to become more dependent on parents and thus negatively affect their attainment in self-care skills (Felix, 1989).

6.5.2 Influence of Parental Involvement on attainment in Reading skills of the three sub-groups of mentally retarded children

Tables 27 to 29 show the details relating to the influence of Parental Involvement on attainment of Reading skills of the three sub-groups of MR children under study.

Table: 27. Influence of Parental Involvement on attainment in Reading skills of Mildly retarded children

Parental Involvement \ Reading skills	High	Average	Low	Total
High	(4.8) 4	(1.7) 2	(1.3) 2	8
Average	(23.3) 24	(9.6) 10	(6.2) 5	39
Low	(5.9) 6	(2.5) 2	(1.6) 2	10
Total	34	14	9	57

$\chi^2 = 0.962$, df = 4

Table: 28. Influence of Parental Involvement on attainment in Reading skills of Moderately retarded children

Parental Involvement \ Reading skills	High	Average	Low	Total
High	(6) 7	(11.8) 11	(6.1) 6	24
Average	(39.4) 40	(77.5) 77	(40.1) 40	157
Low	(11.6) 10	(22.7) 24	(11.8) 12	46
Total	57	112	58	227

$\chi^2 = 0.5591$, df $= 4$

Table: 29. Influence of Parental Involvement on attainment in Reading skills of severely retarded children

Parental Involvement \ Reading skills	High	Average	Low	Total
High	(.2) 0	(1.2) 2	(4.6) 4	6
Average	(.6) 0	(3.3) 3	(13.2) 14	17
Low	(0.3) 1	(1.5) 1	(6.2) 6	8
Total	1	6	24	31

$\chi^2 = 2.639$, df $= 4$

Discussion

It is seen from Tables 27 to 29 that no significant association is noticed between Parental Involvement and attainment in Reading skills of all the three sub-groups of MR children. This finding supports the earlier finding with respect to the total group of MR children showing that parental involvement does not have any significant influence on the attainment of Reading skills of MR children. This may be due to the fact that teachers play a major role in developing the reading skills of MR children.

6.5.3. Influence of Parental Involvement on attainment in Writing skills of the three sub-groups of MR children

Tables 30 to 32 show the details relating to the influence of Parental Involvement on attainment of writing skills of the three sub-groups of MR children under study.

Table: 30. Influence of Parental Involvement on attainment in Writing skills of Mildly retarded children

Parental Involvement \ Writing skills	High	Average	Low	Total
High	(3.1) 3	(4.1) 5	(0.8) 0	8
Average	(14.7) 15	(19.3) 18	(4) 5	38
Low	(4.2) 4	(5.6) 6	(1.2) 1	11
Total	22	29	6	57

χ^2 =1.383, df =4

Table: 31. Influence of Parental Involvement on attainment in writing skills of Moderately retarded children

Parental Involvement \ Writing skills	High	Average	Low	Total
High	(2.4) 1	(16.2) 17	(4.4) 5	23
Average	(16.8) 17	(112.1) 109	(30.1) 33	159
Low	(4.8) 6	(31.7) 34	(8.5) 5	45
Total	24	160	43	227

χ^2 =3.208, df = 4.

Table: 32. Influence of Parental Involvement on attainment in Writing skills of severely retarded children

Parental Involvement \ Writing skills	High	Average	Low	Total
High	0	(2.3) 2	(3.7) 4	6
Average	0	(6.9) 6	(11) 12	18
Low	0	(2.7) 4	(4.3) 3	7
Total	0	12	19	31

$\chi^2 = 1.289$, df $= 4$

Discussion

As it is evident from Tables 30 to 32 no association is found between Parental Involvement and attainment in writing skills of all the three sub-groups of MR children under study. This finding supports the earlier finding with respect to the Total group of MR children. The reason that can be cited for this situation may be that of the major role played by the teachers in developing the writing skills, as compared to their parents.

6.5.4 Influence of Parental Involvement on attainment in Arithmetic skills of the three sub-groups of MR children

Tables 33 to 35 show the details relating to the influence of Parental Involvement on attainment in Arithmetic skills of the three sub-groups of MR children under study.

Table: 33. Influence of Parental Involvement on attainment in Arithmetic skills of Mildly retarded children

Parental Involvement \ Arithmetic skills	High	Average	Low	Total
High	(3.9) 3	(3.9) 5	(.1) 0	8
Average	(18.7) 17	(18.7) 21	(.7) 0	38
Low	(5.4) 8	(5.4) 2	(.2) 1	11
Total	28	28	1	57

χ^2 =8.285, df = 4

Table: 34. Influence of Parental Involvement on attainment in Arithmetic skills of Moderately retarded children.

Parental Involvement \ Arithmetic skills	High	Average	Low	Total
High	(1.3) 0	(20.3) 22	(1.4) 1	23
Average	(9.1) 11	(140.1) 140	(9.8) 9	159
Low	(2.6) 2	(39.6) 38	(2.8) 5	45
Total	13	200	14	227

χ^2 =6.786, df =4

Table: 35. Influence of Parental Involvement on attainment in Arithmetic skills of severely retarded children

Parental Involvement \ Arithmetic skills	High	Average	Low	Total
High	0	(1.6) 1	(4.5) 5	6
Average	0	(4.7) 4	(13.4) 14	18
Low	0	(1.8) 3	(5.2) 4	7
Total	0	8	23	31

χ^2 =1.504, df =4

Discussion

As seen in Tables 33 to 35, in the case of Arithmetic skills also, no association is noticed with Parental Involvement with respect to the three sub-groups of MR children under study. This finding confirms the earlier finding with respect to the total group of MR children under study.

6.5.5. Influence of Parental Involvement on attainment in Communication skills of the three sub-groups of MR children.

Tables 36 to 38 show the details relating to the influence of Parental Involvement on attainment in communication skills of the three sub-groups of MR children under study.

Table: 36. Influence of Parental Involvement on attainment in Communication skills of mildly retarded children

Parental Involvement \ Communication skills	High	Average	Low	Total
High	(5.3) 5	(1.6) 2	(0.1) 0	7
Average	(30.2) 30	(9.1) 9	(0.7) 1	40
Low	(7.5) 8	(2.2) 2	(0.2) 0	10
Total	43	13	1	57

χ^2 =0.481, df =4

Table: 37. Influence of Parental Involvement on attainment in communication skills of Moderately retarded children

Parental Involvement \ Communication skills	High	Average	Low	Total
High	(4) 3	(17.9) 20	(2.1) 1	24
Average	(26.3) 30	(116.9) 118	(13.83) 9	157
Low	(7.7) 5	(34.2) 31	(4.1) 10	46
Total	38	169	20	227

χ^2 =13.023, df =4

Table: 38. Influence of Parental Involvement on attainment in Communication skills of severely retarded children

Parental Involvement \ Communication skills	High	Average	Low	Total
High	0	(3.7) 4	(2.3) 2	6
Average	0	(11.0) 12	(6.9) 6	18
Low	0	(4.3) 3	(2.7) 4	7
Total	0	19	12	31

$\chi^2 = 1.288$, df =4

Discussion

Regarding the association between Parental Involvement and Communication skills (vide Tables 36 to 38) it is found that only in the case of the moderately retarded group a significant association is seen between the variables (χ^2=13.02 significant at 0.05 level). It should be pointed out that in the earlier treatment also (total group of MR children), an association is noticed between Parental Involvement and Communication skills. The above finding is noteworthy in the sense that it highlights the need and importance of parental involvement in developing communication skills in the case of the mildly and severely retarded groups.

6.5.6 Influence of Parental Involvement on attainment in Social skills of the three sub-groups of MR children

Tables 39 to 41 show the details relating to the influence of Parental Involvement on attainment in Social skills of the three sub-groups of MR children under study.

Table: 39. Influence of Parental Involvement on attainment in Social skills of mildly retarded children

Parental Involvement \ Social skills	High	Average	Low	Total
High	(4.1) 2	(3.4) 5	(0.6) 1	8
Average	(19.8) 21	(16.4) 18	(2.7) 0	39
Low	(5.1) 6	(4.2) 1	(0.7) 3	10
Total	29	24	4	57

χ^2 =15.175, df = 4

Table: 40. Influence of Parental Involvement on attainment in Social skills of Moderately retarded children

Parental Involvement \ Social skills	High	Average	Low	Total
High	(3.9) 5	(18.1) 14	(2) 5	24
Average	(25.6) 23	(118.3) 125	(13.1) 9	157
Low	(7.5) 9	(34.7) 32	(3.9) 5	46
Total	37	171	19	227

χ^2 =8.634, df = 4

Table: 41. Influence of Parental Involvement on attainment in Social skills of Severely retarded children

Parental Involvement \ Social skills	High	Average	Low	Total
High	(0) 0	(2.9) 4	(2.1) 1	5
Average	0	(11.0) 10	(7.9) 9	19
Low	0	(4.1) 4	(2.9) 3	7
Total	0	18	13	31

χ^2 =1.241, df = 4.

Discussion

As it is seen from Tables 39 to 41 a significant relation (at 0.01 level) is noticed between Parental Involvement and attainment in social skills of mildly retarded children (X^2=15.175, significant at 0.01 level). It should be pointed out that no association was found between the variables when the MR children under study were treated as a total group. The possible reason for noting an association between the variables may be that in the case of the mildly retarded children, most of the parents do not hesitate to show a marked involvement in developing the social skills as compared to that of their counterparts in the moderate and severe retarded groups.

6.6 Identification of the level of Education of the Parents of the MR children under study

An attempt is made in this section to study the level of Education of the parents of the MR children in the institutions for mentally retarded in Kerala. Identification of the high, average and low parental education groups was done following the same procedure adopted for the identification of the high, average and low level of parental involvement groups (vide p.30). The details relating to the high, average and low education groups are shown in Table 42.

Table:42. Classification of Parents into High, Average and Low Parental Education Groups

Levels of Parental Education	Number	Percentage
High Parental Education Group (above $M+\sigma$)	107	33.97%
Average Parental Education Group (between $M+\sigma$ and $M-\sigma$)	42	13.33%
Low Parental Education Group (below $M-\sigma$)	166	52.70%
Total	315	100

As seen from Table 42 majority of the parents of the MR children belong to the 'low' parental education group (52.70%). The remaining proportion of parents fall in the high parental education group (33.97%) or average parental education group (13.33%).

6.7 Comparison of the level of attainment of MR children of High and Low Parental Education groups with respect to each of the six basic skills under study

The level of attainment of MR children of parents belonging to the 'high' and 'low' parental education groups were compared to find out if there is any significant relation between the level of education of parents and the attainment

of MR children in each of the six basic skills under study. The comparison was done, by applying the two-tailed test of significance between means (Garrett: 1985, pp. 213-216). The details regarding the data and results of the test of significance are shown in Table 43.

Table: 43 Comparison of the level of attainment of MR children of High and Low Parental education groups: Data and Results of the test of significance

Basic Skills	High group M_1	σ_1	N_1	Low group M_2	σ_2	N_2	CR	Level of significance
1. Self-care skills	13.74	2.98	107	14.05	3.06	166	0.84	$P > .05$
2. Reading skills	8.97	2.63	107	8.14	2.61	166	0.81	$P > .05$
3. Writing skills	9.66	3.62	107	10.34	3.82	166	1.49	$P > .05$
4. Arithmetic skills	16.54	5.05	107	16.61	4.36	166	0.47	$P > .05$
5. Communication skills	11.59	3.55	107	11.97	3.89	166	0.84	$P > .05$
6. Social skills	10.76	3.39	107	10.89	3.32	166	0.68	$P > .05$

Discussion

Comparison of the skills attainment of the MR children of high and low parental education groups showed that no significant difference exists between the groups under comparison with respect to the different skills studied. In other words skill attainment of MR children in the high and low parental education groups is more or less the same. This means that 'level of parental education' as a variable has not made any profound influence on the skill attainment of MR children.

6.8 Information about the training given to the parents in handling their MR children

An attempt is made in this section to study the details regarding the nature of the training given, if any, to parents for handling the MR children. The information collected in this context shows that certain steps are, indeed, taken by the institution under study for training the parents in the education and management of their mentally retarded children.

Periodical meeting (once in a month in most of the institutions) are arranged for providing opportunities to parents to interact with each other and share their experiences. Such exchange of views help in parents to

develop fresh insight into the problems of MR children and get opportunities for gaining practical knowledge regarding the various forms of difficulties. Parents are helped to provide home-training to children to rectify the common defect found in children with respect to Self-management skills, Reading skills, Writing skills, Arithmetic skills, Social skills and Communication skills. But it is generally noticed that parents show high interest in participating such meetings during the initial period only. After some-time they tend to loose interest in attending such meetings and therefore show low level of involvement in gaining parental training. However, all possible steps are taken by the institutions under study to do their level best in offering help to parents in educating and managing their MR children. It is observed that all the institutions under study offer help to parents in self-management skills like toilet training, tooth brushing, meal-time behaviour, dressing and grooming. In the case of the development of other skills (Reading, Writing, Arithmetic, Social and Communication skills) the institution vary with respect to the extent of training provided. Attempts are made by the institution for providing training to parents to help their MR children in developing skills essential for daily living. While some of the

institutions give more emphasis for development of social skills, others give more emphasis for the development of academic skills. The information collected with respect to the training provided to the parents of MR children by the different institutions under study are summarized in Table 44.

Table: 44 Information about the training given to the parents in handling their MR children

Areas of training provided to parents of MR children	Mode of training	Extent of training provided by the institution		
		To a great extent	To some extent	Not at all
		No. & %	No. & %	No. & %
1	2	3		
1. Toilet training	Simple advice and verbal direction.	14 100%	.. ..	.. ..
2. Tooth brushing	Verbal direction and demonstration.	14 100%	.. ..	.. ..
3. Meal-time behaviour	Simple advice and verbal direction.	14 100%	.. ..	.. ..
4. Grooming	Verbal direction and demonstration.	14 100%	.. ..	.. ..
5. Dressing	Verbal direction and demonstration.	14 100%	.. ..	.. ..
6. Eliminating self injurious behaviour	Simple advice and verbal direction.	14 100%	.. ..	.. ..
7. Reading ability	Demonstration and practice sessions	10 71.43%	4 28.57%	..

1	2	3					
8. Language training	Demonstration and practice sessions.	11	78.57%	3	21.43%	..	..
9. Identifying shapes and colour	Demonstration and practice sessions.	12	85.71%	2	14.29%	.	..
10. Picture naming	Demonstration and practice sessions.	12	85.71%	2	14.29%	..	..
11. Object matching	Demonstration and practice sessions.	12	85.71%	2	14.29%	..	..
12. Counting	Concept development using concrete objects like coloured round balls, pebbles and blocks.	12	85.71%	2	14.29%	.	..
13. Addition and subtraction	Concept development using concrete objects like stones and wooden blocks.	10	71.43%	4	28.57%	.	..
14. Monetary skills	Concept development using concrete objects like coins and currencies.	10	71.43%	4	28.57%	.	..
15. Social responses	Providing situations for development of social skills.	11	78.57%	3	21.43%	.	..
16. Pedestrian skills	Verbal directions and demonstration	11	78.57%	3	21.43%	.	..

6.9 Major Findings

The major findings that emerged from the present study are noted below:

1. Identification of the Level of Parental Involvement in the education and management of the Mentally Retarded (abbreviated as MR) children in the institutions for the Mentally Retarded in Kerala showed that only a small proportion of parents under study (12.06%) have high level of involvement in the education and management of their MR children. Majority of the parents (67.94%) belong to the average involvement group and the remaining proportion (20%) fall in the low parental involvement group.

2. Identification of the Level of Attainment of MR children in the six basic skills under study brought out the following findings:

2.1. Regarding Self-care-skills, it was found that only 16.19 per cent of the MR children under study belong to the High Self-care-skills Attainment Group, whereas the remaining proportion falls in the Average (69.84%) or low (13.97%) Self-care-skills Attainment Groups.

2.2. With respect to Reading Skills, the study found that 30.16 per cent of MR children belong to the High Reading Skills Attainment Group. The proportion of children in the Average and Low Reading Skills Attainment Groups were found to be 40.63 and 29.21 respectively.

2.3. In the case of Writing Skills, it was noted that only 14.92 per cent of the MR children under study come under the High Writing Skills Attainment Group, while the remaining proportion falls in the Average (63.18%) or Low (21.90%) Writing Skills Attainment Groups.

2.4. Regarding Arithmetic Skills, it was found that 13.65 per cent of the MR children belong to the High Arithmetic Skills Attainment Group. The proportion of children in the Average and Low Arithmetic Skills Attainment Group were found to be 74.29 and 12.06 respectively.

2.5. With respect to Communication Skills, the study found that only 26.35 per cent of the MR children fall in the High Communication Skills Attainment Group, whereas the remaining proportion fall in the Average (62.86%) or Low group (10.79%).

2.6. In the case of Social Skills, the study showed that 20 per cent of the MR children under study fall in the High Social Skills Attainment Group. The proportion of children in the Average and Low Social Skills Attainment Group were found to be 67.94 and 12.06 respectively.

3. Comparison of male and female MR children with respect to their level of attainment in the six basic skills under study revealed the following:

3.1. Comparison of the sex groups with respect to the level of attainment in Self-care Skills showed that a significant difference between the groups exist in the case of the average group only (CR=2.76; $P < .01$), the difference being in favour of the boys i.e., a sex difference in favour of boys exists only in the Average Self-care attainment group.

3.2. Comparison of the sex groups with respect to level of attainment in <u>Reading Skills</u> showed that a significant difference is noticed in the case of High Group (CR=2.09; $P < .05$) and Low Group (CR=2.79; $P < .01$), the difference being in favour of boys in both the cases, i.e., a sex difference in favour of boys exists in the High and Low Reading Skills Attainment Group.

3.3. Comparison of male and female MR children with respect to their level of attainment in <u>Writing Skills</u> showed that a significant difference exist in the case of the MR children in the average group (C.R.=2.17; $P < .05$) and the low group (C.R.=1.98; $P < .05$), the difference being in favour of boys in both the cases i.e., a sex difference in favour of boys exists in the Average and Low Writing Skills Attainment Group.

3.4. Comparison of the sex groups with respect to level of attainment in <u>Arithmetic Skills</u> showed that a significant difference was noted in the case of boys and girls in the average (CR=2.82; $P < .01$) and the low group (CR =2.12; $P < .05$), the difference being in favour of boys, as in the previous cases, i.e., a sex difference in favour of boys exists in Average and Low Arithmetic Skills Attainment Group.

3.5. Comparison of male and female MR children with respect to level of attainment in Communication Skills showed that the male and female MR children in the average group differ significantly showing a clear sex difference in Communication Skills Attainment (CR=2.44; P$<$.05). The difference noticed in this case too is in favour of boys i.e., a sex difference (in favour of boys) exists only in Average Communication Skills Attainment Group.

3.6. Comparison of the sex groups with respect to their level of attainment in Social Skills showed that the sexes differ significantly both in the Average Group (CR =2.67; P$<$.01) and the Low Group (CR=2.12; P$<$.05), the difference being in favour of boys as in the previous cases i.e., a sex difference in favour of boys exists only in the Average and Low Social Skills Attainment Group.

4. Determination of the association between Parental Involvement in the education and management of MR children and their attainment in the six basic skills under study showed that a real association between

the variables exists only in one case viz., Communication Skills, the details of the relationship (X^2 values) being as follows:

4.1. No real association was found between Parental Involvement and Self-care-skills (X^2=6.845).

4.2. No real association was found between Parental Involvement and Reading Skills (X^2=0.5955).

4.3. No real association was found between Parental Involvement and Writing Skills (X^2=2.656).

4.4. No real association was found between Parental Involvement and Arithmetic Skills (X^2=5.248).

4.5. A real association was found between Parental Involvement and Communication Skills (X^2=15.05; $P < .05$).

4.6. No real association was found between Parental Involvement and Social Skills (X^2=7.511).

5. Determination of the influence of Parental Involvement on the attainment of the six basic skills under study with respect to the mildly retarded children showed that,

5.1. Parental Involvement influences the attainment in Self-care-skills of moderately retarded children only (X^2=10.326; $P < .05$).

5.2. Parental Involvement does not show any influence on the reading, writing and arithmetic skills of all the three sub-groups of MR children under study.

5.3. Parental Involvement influences the attainment in communication skills of moderately retarded children only (X^2=13.023; $P < .05$).

5.4. Parental Involvement influences the attainment in social skills of mildly retarded children only (X^2=15.175; $P < .01$).

6. Identification of the level of Education of the parents of the MR children showed that majority of the parents under study (52.70%) belong to the low parental education group. The remaining proportion of parents fall in the high parental education group (33.97%) or average parental education group (13.33%).

7. Comparison of the level of attainment of MR children of high and low Parental Education groups with respect to each of the six basic skills under study showed that no significant difference exists between the groups under comparison with respect to the different skills studied, the details of the result of the test of significance being as follows:

7.1. No significant relation was found between the level of education of parents and the attainment in self-care skills (CR=0.84; P >.05).

7.2. No significant relation was found between the level of education of parents and the attainment in Reading skills (CR=0.81; P >.05).

7.3. No significant relation was found between the level of education of parents and the attainment in Writing skills (CR=0.49; P >.05).

7.4. No significant relation was found between the level of education of parents and the attainment in Arithmetic skills (CR=0.47; P >.05).

7.5. No significant relation was found between the level of education of parents and the attainment in Communication skills (CR=0.84; P >.05).

7.6. No significant relation was found between the level of education of parents and the attainment in Social skills (CR=0.84; P >.05).

8. Information collected about the training given to the parents in handling their MR children under study brought out the following findings:

8.1. Regarding Self-management skills, like Toilet training, Tooth brushing, Meal-time behaviour, Grooming, Dressing, Eliminating Self-injurious

behaviour, it was found that all institution (100 per cent) under study offer training to the parents in handling their MR children.

8.2. With respect to Reading ability, the study found that 71.43 per cent of the institution offer training, 'To a great extent' to the parents and 28.57 per cent of the institution offer training, 'To some extent' to the parents under study.

8.3. In the case of Language training, it was noted that 78.57 per cent of the institution provide training to the parents 'to a great extent' and 21.43 per cent of institution provide training 'To some extent' to the parents under study.

8.4. Regarding Arithmetic skills, like Identifying shapes and colour, object matching, counting, it was found that 85.71 per cent of the institution provide training to the parents 'To a great extent' and 14.29 per cent of the institution provide training to the parents 'To some extent'.

8.5. With respect to higher Arithmetic skills, like Addition and subtraction, Monetary skill, the study found that 71.43 per cent of the institution provide training to the parents 'To a great extent' and 28.57 per cent of the institution provide training to the parents 'To some extent'.

8.6. In the case of Communication skills, like picture naming, the study showed that 85.71 per cent of the institution provide training to the parents 'To a great extent' and 14.29 per cent of the institution provide training to the parents 'To some extent'.

8.7. Regarding Social skills, like Social responses and pedestrian skills, the study showed that 78.57 per cent of the institution provide training to the parents 'To a great extent' and 21.43 per cent of the institution provide training to the parents 'To some extent'.

CONCLUSIONS AND SUGGESTIONS

The major conclusions that are arrived at in the study and the suggestions made for improvement are the following:

1. The present study found that only a small proportion (12.06%) of parents under study have high involvement in the education and management of their MR children. This implies that imminent steps should be taken for getting the parents involved in the education and management of their MR children. If parents are given sufficient information regarding the possible ways of getting themselves involved in the education and management of their retarded children, they would obviously do the needful in this respect. Parents

should be made aware of the principles and objectives of the education of the mentally handicapped. They should be well informed as to how they can help their MR children in education and management related aspects. Steps may, therefore, be taken for organizing parental education programmes, which would be helpful in getting maximum parental involvement.

2. Another major finding of the study is that only a small proportion of the MR children under study have high attainment in the six basic skills under study. This finding is not totally contrary to our expectations. One would naturally expect the MR children to perform at a level par below their normal counterparts. However, this does not mean that their performance cannot be improved by all means. One has reasons to believe that higher the level of parental involvement, the better will be the level of skill attainment of MR children. This situation highlights the imperative need for getting maximum parental involvement in the education and management of MR children. All possible steps should, therefore, be taken to help the parents to enable better involvement in the education and management of MR children. Organising adeuate parent training programmes is the imminent need of the hour.

3. Sex differences, in favour of boys, were noted in some of the comparisons made relating to the High, Average and Low groups with respect to the six basic skills under study. In other words, the proportion of boys were higher in some of the skill attainment groups. This situation implies that more care should be taken in making the girls attain the six basic skills discussed earlier. All possible measures should be taken by the authorities concerned for ensuring maximum involvement of parents as well as teachers in the education and management of mentally retarded girls. Adequate programmes should be organized for making parents aware of the crucial need for improving the educational and management conditions of their MR children, particularly girls.

4. Another revealing finding of the study is that a real association is found between Parental Involvement in the education and management of MR children and attainment in only one basic skill viz., communication skills. No real association is found with respect to the other five basic skills under study and parental involvement. One would naturally expect a positive relation between parental involvement and attainment in all the six basic skills under study. A satisfactory explanation for the above finding is

rather difficult. However it should be borne in mind that only a small proportion of the parents under study (12.06%) were found to have high level of involvement in the education and management of their MR children. Moreover it is generally observed that whatever little done for the MR children by way of developing skills is done mainly by the teachers of these children. This situation also highlights the need for taking speedy steps for organising good programmes for the parents of MR children. This also highlights the need for parent counselling which would go a long way in equipping the parents for managing their MR children.

5. The study also found that when the association between parental involvement and attainment in the six basic skills explored further with respect to the three sub-groups of MR children independently, an association was noticed between the variables in two more cases as against the earlier findings with respect to the total group of MR children. A significant association was noticed between Parental Involvement and Self-care-skills of moderately retarded children; Parental Involvement and Communication skills of moderately retarded children; Parental Involvement and Social skills of mildly retarded children.

No significant relationship was noticed between parental involvement and development of the other basic skills under study. This situation suggests that steps should be taken for involving the parents of all the groups of mentally retarded children in the education and management of MR children.

6. The study found that majority of parents of MR children under study (52.70%) belong to the low parental education group. It is further found that no significant difference exists between the MR children of high and low groups with respect to their attainment in the six basic skills under study. This may probably be the result of the fact that the involvement of the parents, whether high educated group or low educated group, in the education and management of MR children is low. This situation warrants the need for taking effective steps for involving parents in the education and management of their MR children. Effective steps, should, therefore, be taken for making the parents involved in the education and management of their MR children. Organising parental awareness education programmes which would be helpful in concentialising the parents about their duties and responsibilities towards their MR children would go a long way in meeting this objective in view.

7. The information collected regarding the training given to the parents in handling their MR children showed that all the institutions under study offer help to parents in self management skills like toilet training, tooth brushing, meal-time behaviour, dressing and grooming. In the case of the development of other skills (Reading, Writing, Arithmetic, Social and Communication skills) the institution vary with respect to the extent of training provided. Attempts are made by the institution for providing training to parents to help their MR children in developing skills essential for daily living. While some of the institution give more emphasis for the development of social skills others give more emphasis for the development of academic skills. However it is generally observed that parents show high interest in participating 'parent training' programmes during the initial period only and loosing interest in it after some time. Steps should, therefore, be taken to motivate the parents to participate in the 'parent training' programmes. Some of the educated parents can be motivated to observe the classroom practices with respect to the development of the different skills in MR children and they can be encouraged to co-operate with the teachers in

handling the classes. These steps would lead to the meaningful realisation of the concept 'Parents are Teachers'.

Educational Implications and Limitations of the Study

The findings of the study would provide a realistic picture about the level of involvement of parents in the education and management of the MR children in Kerala. The study would also help us to decide the association between the level of parental involvement and attainment of MR children in certain basic skills such as self-care, reading, writing, arithmetic, communication and social management. It is hoped that the results of the study would enable us to formulate guidelines for effective parent training programmes for the parents of MR children so that their involvement in the education and management of their MR children can be ensured. The policy makers in the field of special education can also benefit to a great extent from the study.

The study, however, has its own limitations, despite the fact that all possible steps were taken to make the study as reliable and valid as possible. The following

are some of the major limitations that have to be pointed out in this context:

1. A detailed study using separate parental involvement scores for mother and father could not be tried for reasons beyond the control of the investigator. How-ever the data obtained from the parents available were sufficient to provide a true index of the level of involvement of both the parents in the education and management of their MR children.

2. The tools used in the study - The Parent Involvement scale and the Basic skills Attainment Test (BSA-Test) for MR children may have their own limitations. It should be pointed out here that the tests are prepared following the guidelines prepared by experts in the field of special education including the NCERT. All the steps to be followed in tests development of this sort were followed meticulously. As such, it is hoped, that the tools thus prepared were valid instrument for collecting data for the study.

Despite the above limitations it is hoped that the outcomes of the study are valid and generalisable to a great extent and provide fresh insights for further researches.

Suggestions for further research

In the light of the experiences gained from the study, the following are some of the studies suggested for further research:

1. A comparative study of the father and mother involvement in the education and management of the MR children.

2. Relation between parental education and parental involvement in the education and management of the MR children.

3. Influence of socio-economic status on parental involvement in the education and management of MR children.

4. Effect of counselling on parents of MR children.

5. Role of parent training in equipping the parent to manage their MR children.

BIBLIOGRAPHY

Abraham, Mercy (1984). A Study of the Psycho-social Correlates of Mental Health Status of University entrants of Kerala. Ph.D. (Psychology) Thesis, University of Kerala.

Alford, A. (1955). Mental Health despite mental retardation. Lancet, 1, p.1234.

Anderson, S., Mc Gill, C., King, M., Pogue, D., & Taylor, J. (1984). Education for the Trainable Mentally Handicapped Adolescent. Tasa, Vol. 13, No:1.

Anastai, Anne (1955). Psychological Testing. New York: The Mac-Millian Company.

Arjunan, N.K. (1994). A Study of Certain Negative Emotional Experiences of Higher Secondary School Students in relation to their Mental Health Status. M.Ed. Thesis, University of Kerala.

Baig, K. (1983). Home Training of Parents and their TMR Children. Special Education in Canada, Vol. 1. No.1.

Baker, B.L. & Heifetz, L.J. (1976). The Read Project: Teaching manuals for parents of retarded children. In T.D. Tjossem (Ed.). Intervention strategies for high risk infants and young children. Baltimore: University Park press.

Balker, B.L., Brightman, A.J., Heifetz, L.J., & Murphy, D.M. (1976), Peterknoblock (1983). Understanding Exceptional Children and Youth. Little Brown and Co., Boston, Toronto, p.377.

Barlett, K., and Smith, P. (1978). Family Counselling for the handicapped child. Paper presented at the World Congress on Future Special Education, Sterling, Scotland.

Barr, Martin (1904). The Mental Defectives: Their History, Treatment and Training. Philadelphia: Blakiston.

Barsch, R.H. (1968). The parent of the handicapped child: A study of child-rearing practices. In Peterknoblock (1983). Understanding Exceptional Children and Youth. Little Brown & Co., Boston, Toronto, p.370.

Baum, M.H. (1962). Some dynamic factors affecting family adjustment to the handicapped child. Exceptional children, 28: 387.

Beenakumar, S. (1991). Guidance Needs of the parents for the effective management of their mentally retarded children. M.Ed. Thesis, University of Kerala.

Benassi, V.A. & Benassi, B. (1973). An approach to teaching behaviour modification principles to parents. Rehabilitation Literature, 34: 134.

Bereiter, C. & Englemann, S. (1966). Teaching disadvantaged children in the pre-school. Englewood Cliffs, N.J: Prentice-Hall.

Berkowitz, B.P. & Grazrano, A.M. (1972). Training parents as behaviour therapist: a review. Behaviour Research Therapy, 10: 297.

Bernal, M.E. & North, J.A. (1978). A Survey of parent training manuals. Journal of Applied behaviour analysis, 11: 533-544.

Best, John, W. (1977). Research in Education. New Delhi: Prentice-Hall, Pvt., Ltd.

Blatt, A. (1957). Group therapy with parents of severely retarded children: a preliminary report. Group Psychotherapy, 10: 133-140.

Bower, Eli M. (1958). A Process for early Identification of Emotionally Disturbed Children. Sacramento: California State Department of Education.

Bowlby, J. (1951). Child Care and Growth of Love. Geneva: Penguine Books Ltd.

Bowlby, J. (1968). Effects on Behaviour Disruption of an Affectional Bond. In Thoday, J.M. & Parkes, A.S. (Eds.). Genetic and Environmental Influences on Behaviour. Edinburgh: Oliver and Boyd.

Bradshaw, J. & Lawton, D. (1978). Training the causes of stress in families with Handicapped Children, British Journal of Social Work, 8 (1).

Bricker, W.A. (1970). Identifying and modifying behavioural deficits. American Journal of Mental Deficiency, 75: 16.

Bristol, M.M. & Gallagher, J.J. (1982). A Family Focus of Intervention, Finding and Educating the High-Risk and Handicapped Infant (ed). Ramcy and P. Trohanes Baltimore: University Park Press.

Brophy, J.E. (1970). Mothers as teachers of their own pre-school children: The influence of socio-economic status and task structure on teaching capacity. Child development, 41: 79-94.

Brophy, J.E., Good, T.L., Nedler, S.E. (1975). Teaching in the Pre-school. New York: Harper and Row Publishers.

Casto, G. et. al. (1984). Parent involvement in Infant and Pre-school Programmes. Journal of the Division of Early Childhood, 9 (1): 49-56.

Chamberlain, N.H., N.H., and Moss, D.H. (1953). The Three R's concept for the Retarded. New York: National Association for Retarded Children, p.6.

Childs, R.E. (1979). A drastic change in curriculum for the educable mentally retarded child. Mental Retardation, 17: 299-301.

Collie, M. (1943). Parent's reaction to diagnosis of mental retardation in their children. Smith Coll. Stud. Soc. Wk, 14: 243-245.

Coughlin, Ellen, W. (1941). Parental attitudes toward handicapped children. Children, 6: 41-45.

Cruick, William, M. (1975). Psychology of Exceptional Children and Youth. New York: Prentice-Hall, INC.

Dalton, Juantia and Epstein, Helene (1963). Counselling parents of mildly retarded children. Soc. Casework, 44: 523-530.

Deb, A.K. (1968). Subnormal Mind. Calcutta: Chakraworthy, Chatterjee and Co. Ltd.

Decker, C.A. & Decker, J.A. (1976). Planning and Administering Early Childhood Programmes, Ohio: C.E. Merrill Publishing Co.

Denhoff, E. & Hyman, I. (1976). Parent Programmes for developmental management. In T.D. Tjossem (Ed.), Intervention Strategies for highrisk infants and young children, Baltimore: University Park Press.

Dharap, N.Y. (1986). An investigation into the problems of the education of the mentally retarded children. Ph.D. (Education) Thesis. Poona University. In M.B. Buch (1991). Fourth Survey of research in education (1983-1988), Vol.2nd Sri Aurobindo Marg, New Delhi: NCERT, p.1329.

Dimicheal, Salvatre, G. (1962). Social and economic effect of mental retardation. Jerome H. and Rothstein. M.R. Reading and Resources. New York: Rinehart and Winston. pp.105-106.

Doll, Edgard, A. (1941). "The Essentials of an Inclusive Concept of Mental Deficiency". American Journal of Mental Deficiency, 46: 214.

Farber, B. (1968). Mental retardation: Its social context and consequences. Boston: Houghton Mifflin. p.27.

Felix, Thomas (1989). The Three C's Concept of Special Education for Mentally Retarded Persons - Approaches, Aspects and Applications. Trivandrum: Central Institute on Mental Retardation.

Fenichel, O. (1945). The psychoanalytic theory of neurosis. New York: W.W.Norton and Co., INC.

Fried, Antoinette (1955). Report of four years of work at the Guidance Clinic for Retarded Children, Essex Country, N.J. American Journal of Mental Deficiency, 60: 83-89.

Gallagher, J. (1956). Rejecting Parents? Exceptional Children, 22, 273-276.

Garrett, Henry, E. (1985). Statistics in Psychology and Education. Bombay: Vakils, Feffer and Simons Pvt. Ltd.

Good, Carter V., & Scates, Douglas E. (1954). The Methods of Educational Research. New York: Appleton Century Crofts, INC.

Grebler, Anne Marie (1952). Parental attitudes towards MR Children. American Journal of Mental Deficiency. 56: 475-483.

Gupta, S.C. and Kapoor, V.K. (1977). Fundamentals of Applied Statistics. New Delhi: Sultan Chand and Son.

Hawkes, Thomas (1992). A Study of Emotions and Social Adjustment of Mentally Retarded Adults. Dissertation Abstracts International, 53 (1): 110-A.

Haynes, V.B. (1976). The national collaborative infant project. In T.D. TJossem (Ed.), Intervention Strategies for high risk infants and young children. Baltimore: University Park Press.

Heifetz, L.J. & Baker, B.L. (1975). Man power and Methodology in behaviour modification: Instructional manuals for the paraprofessional parent. In Manpower and Methodology in behaviour Modification. Symposium presented at the Ninth Annual Convention of the Association for Advancement of Behaviour Therapy, San Francisco.

Hersh, A. (1961). Case-work with parents of retarded children. Social Case work, 6: 61-66.

Hieronymus, A.N., Hoover, H.D. and Lindquist, E.F. (1986). IOWA Test of Basic Skills (Level 6. Form G). Chicago: Riverside Publishing Company.

Hirsch, I. and Walder, L. (1969). Training mothers in groups as reinforcement therapists for their own children. Proceedings of the 77th Annual Convention of American Psychological Association, 4: 561.

Honig, A. and Brill, S. (1970). A Comparative Analysis of the Piagetian Development of Twelve Month old Disadvantaged Infants in an Enrichment Centre with others not in such a Centre. Syracouse University Childrens Centre.

Jangira, N.K. et al. (1990). Functional Assessment Guide: A Handbook for primary teachers. Central Resource Centre, NCERT, New Delhi.

Justice, R.S. et al. (1971). Problems Reported by parents of MR children - who helps? American Journal of Mental Deficiency, 75: 685.

Kanner, Leo A. (1946). Miniature Text Book of Feeble Mindedness. Child Care Monograph, No.1, New York: Child care Publications, pp.8-9.

Kanner, L. (1952). The emotional quandaries of exceptional Children. In Woods School Proceedings, Langhorne, Pa, p.48.

Karnes, M.B., Wollersheim, J.P., Stoneburner, R.L., Hodgins, A.S. & Teska, J.A. (1968). An Evaluation of two pre-school programs for disadvantaged children: A traditional and a highly experimental school. Exceptional Children, 34: 667-676.

Kaushik, Sandhya Singh (1988). Parents are Teachers: A Study in Behaviour Modification of Mentally Subnormals. New Delhi: Northern Book Centre.

Kazdin, A.E. (1973). Issues in behaviour modification with mentally retarded persons. American Journal of Mental Deficiency, 78: 134.

Kean, J. (1975). Successful integration: The Parent's role. Exceptional Parent.

Kirk, S. (1962). Educating Exceptional Children. Boston: Houghton Mifflin Co.

Kirk, S. & Johnson, G.O. (1951). Educating the retarded child. Boston: Houghton-Mifflin.

Klebanoff, L.B. (1959). Parental attitudes of mothers of Schizophrenic, brain-injured and retarded and normal children. American Journal of Ortho-psychiat, 29: 445-454.

Kolstoe, O.P. (1976). Teaching educable mentally retarded children. New York: Holt, Rinehart & Winston.

Komala Kumari, T. (1985). A Study of the Organization and Administration of the Institutions for the Mentally Retarded Children in Kerala, M.Ed. Thesis, University of Kerala.

Kozier, Ada (1957). Casework with parents of children born with severe brain defects. Social case work, 38: 183-189.

Knonick, D. (1977). A Parent's Thoughts for Parent and Teachers. In Haring, N.G. & Bateman, B. Teaching the Hearing Disabled Child, Englewood Cliff, N.J: Prentice Hall.

Kramm, Elizabeth, R. (1963). Families of Mongoloid children. Washington: U.S. Government Printing Office, p.48.

Kroth, R.L. (1975). Communicating with Parents of Exceptional children: Improving Parent-Teacher Relationships, Denver: Love.

Latha, K. (1985). Impact of parental attitude on social, emotional and educational adjustment of normal and handicapped students. Ph.D. (Psychology) Thesis. Agra University, cited in M.B. Buch (Ed.) (1991). Fourth Survey of Research in Education (1983-1988). Vol. 2nd. Sri Aurobindo Marg, New Delhi: NCERT, p.1329.

Levinson, Abraham (1955). The MR child. London: George Allen and Unwin Ltd.

Levison, Beatrice (1962). Understanding the child with school phobia. Journal of Exceptional children, 28: 394.

Love, L.R. & Kaswan, J.W. (1974). Troubled Children: Their Families, Schools and Treatments. New York: Wiley.

Lugo, James, O., & Hershey, Gerald, L. (1981). Living Psychology (3rd edn.). New York: Macmillan Publishing Co., Inc.

Lunt, I. & Sheppard, J. (1986). Participating Parents. Leicester: British Psychological Society.

Mac Millan, D.L. (1977). Mental retardation in school and society. Boston: Little, Brown & Company.

Mahoney, S.C. (1958). "Observations Concerning Counselling with Parents of Mentally Retarded Children". American Journal of Mental Deficiency, 63: 81-86.

Mark, Tonsing (1985). Factors in family decision making about placement of developmentally disabled individuals. American Journal of mental deficiency, 89: 352.

Mattson, B. (1977). Involving parents in special education. Did you really reach them? Education and Training of the mentally retarded, 12 (2): 358-360.

Mc Andrew, I. (1976). "Children with a handicap and their families". Child-care health and development, 2: 213-238.

Mc Keith, R. (1973). Parental reaction and responses to a handicapped child. In F. Richardson (ed.) Brain and intelligence. Hyattsville, MD: National Education Consultants, pp.131-141.

Merachnik, D.A. and Quattlebaum, B. (1963). Adaptations and Usage of programmed instruction in arithmetic with mentally retarded. Res. Bull (New Jersy), Sch. Development Council, B. No.2.

Merlene, A.M. (1985). Strategies adopted for teaching the Mentally Retarded Children in the Institutions for the Mentally Retarded in Kerala. M.Ed. Thesis, University of Kerala.

Meyer, D.L., and Perkins, A.L. (1962). The dynamics of genetic counselling. Eugen. Quart. 9: 237-40.

Narayan, Suma (1993). Knowledge, Attitude and Perception of parents of Mentally Handicapped children. The Indian Journal of Social Work, 54 (3): 437-438.

O'Dell, S. (1974). Training parents in behaviour modification: A Review. Psychological Bulletin, 81, 418.

Olshansky, S. (1962). Chronic sorrow: A response to having a mentally defective child. Social case work, 43: 191-194.

Parmelee, A.H. (1959). Attitude study of parents of MR children. Pediatrics, 24: 819-821.

Pascal, C.E. (1973). Application of behaviour modification by parents for treatment of a brain-damaged child. In Asher, B.A. & Poser, E.G. (Eds.). In adaptive learning: Behaviour modification with children. New York: Pergamon Press.

Peck, J.R., & Stephens, W.B. (1960). A Study of the relationship between the attitudes and behaviour of parents and that of their mentally defective child. American Journal of Mental Deficiency, 64: 839-844.

Pinkerton (1970). Parental acceptance of a handicapped child. Developmental medicine and child. Neurology, 12: 207-212.

Preetha, Rajam, R.V. (1987). A Study of the Problems of the Parents of the Mentally Retarded Children in the Institutions in Kerala. M.Ed. Thesis, University of Kerala.

Rinn, R.C. and A. Marble (1977). "Parents Effectiveness Training: A Review", Psychological Reports, 41: 95-109.

Robinson, Halbert B. & Robinson, Nancy H. (1965). The Mentally Retarded Child. New York: Mc Graw Hill Book Company.

Roith, A.I. (1963). The myth of parental attitudes. Journal of mentally subnormal, 9: 51-54.

Ronade, Meena (1977). Parents' role in social integration. IIIrd Asian Conference on Mental Retardation. Bangalore, p.15.

Salzinger, K., Feldman, R.S. & Portnoy, S. (1970). Training parents of Brain-injured children in the use of operant conditioning procedures. Behaviour therapy, 1:4.

Sarason, S. B. (1959). Psychological Problem in Mental Deficiency (3rd edn.). New York: Harper and Bros.

Schild, Sylvia (1964). Counselling with parents of MR Children living at home. Social Work.9: 87.

Solnit, A.J. & Stark, M.H. (1961). Mourning and the Interpretation of Mental Retardation. Paper presented to the American Orthopsychiatrist Association Meeting. Journal of Exceptional Children. 28: 388 & 536.

Spitz, R.A. (1945). Hospitalism: Inquiry into the genesis of psychiatric conditions in early childhood. Psychoanalytic study of the child, 1: 53-74.

Sukumaran, P.S. (1986). A Study of the family environment of the MR children. M.Ed. Thesis, University of Kerala.

Suresh, B. (1989). A Study of the facilities for learning provided to Mentally retarded children at their home. M.Ed. Thesis, University of Kerala.

Thurston, J.R. (1960). Counselling the parents of the severely handicapped. Journal of Exceptional children, 26: 351-354.

Tips, R.L. & Lynch, H.T. (1962). The impact of genetic counselling upon the family milieu. JAMA, 1984, pp.183-186.

Tizard, B. & Hughes, M. (1984). Young Children learning. London: Fontana.

Tredgold, A.F. (1937). A Text-Book on Mental Deficiency. Baltimore: William Wood and Co.

Udayshankar, M.A. (1976). Exceptional children. London: Sterling Publishers Pvt. Ltd.

Vimala, D.M. (1978). An Exploratory study of Exceptional children in the schools of Kerala. M.Ed. Thesis, University of Kerala.

Weber, Elmer, W. (Ed.) (1963). Mental Retarded children and their education. Springfield, Illinois, USA: Charles Thomas Publisher.

Wiegerink, R. & Parish, V.A. (1976). Parent-implemented school program. In D.L. Lillie & P.L. Trohanis (Eds.) (1976). Teaching parents to teach. New York: Walker.

Wikler, L. (1981). Chronic sorrow re-visited: Parents Vs Professional depiction of the adjustment of parents of MR children. American Journal of Orthopsychiatry, 51; 63-70.

Wolfensberger, W. (1983). Normalization - based guidance, education and supports for families of handicapped people. Downsview, Ontario: National Institute on Mental retardation.

Yoshida et al. (1978). Parental involvement in the special education pupil planning process: The schools' perspective. Exceptional children, 44: 531-534.

Zeaman, David & House, Betty, J. (1963). The role of attention in retardate discrimination learning. Norman Ellis (Ed.). Handbook on mental deficiency. New York: New York: Mc Graw-Hill, p.248.

. . . . .

APPENDIX I

PARENT INVOLVEMENT SCALE

By

Dr. (Prof) MERCY ABRAHAM

Department of Education
University of Kerala
Trivandrum

1992

PARENT INVOLVEMENT SCALE

INSTRUCTIONS'

Given below are certain statements which are meant to study the level of parental involvement in the Education and Management of mentally retarded children. Read them carefully and indicate the extent of your involvement as a parent with respect to each of the statements mentioned by putting a tick (√) mark in the appropriate column against the respective statements Please respond to all the statements

Statement	Father's Mother's Involvement		
	often	some times	never
1) Encouraging the child to brush his/her teeth daily.			
2) Taking care to see that the child washes his/her face when ever necessary.			
3) Seeing that the child washes well after going to the latrine.			
4) Seeing that the child takes his/her bath regularly.			
5) Instructing the child to put on clean clothes after his/her bath.			
6) Developing in the child the ability to differentiate between the right and wrong sides of his/her garments.			
7) Developing in the child the ability to button and unbutton his/her dress			
8) Encouraging the child to comb and keep his/her hair neat.			
9) Making the child wash his hands and mouth before meals.			
10) Training the child to wait till the food is served.			
11) Training the child not to make noise with the vessels while at the dining table.			

Statement	Father's Mother's Involvement		
	often	some times	never
12) Preventing the child from snatching another person's food.			
13) Training the child not to talk while taking food			
14) Training the child not to over eat			
15) Discouraging the child from eating food that had fallen out of his/her plate.			
16) Training the child to wash his vessels clean after each meal			
17) Training the child to clean the table after meals			
18) Training the child to wear his chappals properly.			
19) Seeing that the child keeps his/her nails clean.			
20) Instructing the child to cover his/her mouth while sneezing and coughing			
21) Finding time to make the child familiar with the object in the environment.			
22) Developing the communication skills of the child by making him talk about familiar objects.			
23) Encouraging the child to say the names of his siblings.			
24) Teaching the child to name the numerals in the proper order			
25) Training the child to use his fingers for counting			
26) Training the child to use concrete object for counting			
27) Training the child to deal with the money appropriately.			

Statement	Father's / Mother's Involvement		
	often	some times	never
28) Entrusting some money with the child and making him buy things			
29) Training the child to save money			
30) Helping the child to develop the concept of time.			
31) Training the child to differentiate clearly the different timings of the day (day and night)			
32) Developing in the child the ability to say correctly the month, week, day, date etc			
33) Training the child to use the calendar appropriately			
34) Helping the child to write properly by holding his hand while writing			
35) Encouraging the child to write on his own			
36) Providing congenial atmosphere for facilitating the learning of the child			
37) Finding time to correct immediately the errors made by the child while learning			
38) Making a conscious attempt to correct the child's mistakes without hurting his feelings.			
39) Finding time to teach again at home the lessons taught at school.			
40) Participating in the meetings held to discuss matters relating to the education of mentally retarded children.			
41) Putting into practise the instructions and decisions from the schools for the mentally retarded children.			

Statement	Father's / Mother's Involvement		
	often	some times	never
42) Involving in the activities of Parent Teacher Association of the institution for the mentally retarded children.			
43) Giving opportunities for the child to speak independently on topics that are interesting to him			
44) Informing the teachers concerned about the child's behaviour at home.			
45) Trying to gather information from the teachers concerned regarding the behaviour of the child in the class room			
46) Trying to gain knowledge from teachers regarding the measures to be adopted for solving the behavioural problems of the child.			
47) Holding discussion with teachers concerned, so as to evaluate correctly the potentials of the child			
48) Discussing with the teachers the learning difficulties of the child			
49) Trying to train the child according to the suggestions made by the teachers concerned			
50) Encouraging the child to take part in the cultural and sports competitions held at the schools.			
51) Taking interest in organising the cultural and sports competitions in the schools for the mentally retarded children.			
52) Taking initiative to make the child participate in the cultural and sports competiton held by organisations other than the schools for the mentally retaded children.			
53) Congratulating the child on every success in his studies.			

Statement	Father's / Mother's Involvement		
	often	some times	never
54) Taking initiative to collect periodically all the information relating to the progress of the child			
55) Training the child to do certain excercise in order to over come his physical disabilities			
56) Making the child carryout activities that would help him to attain better hand and legs co-ordination and control.			
57) Finding time to play with the child outside the home in the evening			
58) Consulti ng a doctor even for the minor ailments of the child			
59 Subjecting the child regularly for medical checkup			
60) Seeing that the child is immunised and vaccinated timely			
61) Seeing that the child's eyesight is tested peri odically.			
62 Subjecting the child for a timely check up for assesing hearing ability and any disabilit y associated with it and providing appropriate treatment			
63) Taking care not to talk about the child's disability in his presence.			
64) Discouraging others when they tease the child as 'useless'			
65) Reacting against the other members of the family when they scold the mentally retarded child unnecessarily			
66) Patiently tolerating the mistakes of the child considering the fact that he is disabled			
67) Considering sympathetically the behavioural abnormality of the child			

APPENDIX II

PARENT INVOLVEMENT SCALE (Malayalam Version

നിർദ്ദേശങ്ങൾ:

മന്ദബുദ്ധിയായ കുട്ടികളുടെ പഠനകാര്യങ്ങളിലും ജീവിതചര്യകളിലും മാതാപിതാക്കൾക്ക് എത്രമാത്രം പങ്ക് വഹിക്കാൻ കഴിയുന്നു എന്നതു മനസ്സിലാക്കുന്നതിനു വേണ്ടിയുള്ള ചില പ്രസ്താവനകളാണ് ചുവടെ കൊടുത്തിരിക്കുന്നത്, ഇവ ശ്രദ്ധാപൂർവ്വം വായിച്ച്, ഇതിൽ ഓരോന്നിനും അച്ഛൻ/അമ്മ എന്ന നിലയിൽ നിങ്ങൾക്ക് എത്രമാത്രം പങ്ക് വഹിക്കാൻ കഴിയുന്നുവെന്നത് സൂചിപ്പിക്കുന്നതിനായി എതിരെ കൊടുത്തിരിക്കുന്ന കോളങ്ങളിൽ ഉചിതമായതിൽ ✓ അടയാളം ഇടുക ദയവുചെയ്ത് എല്ലാ പ്രസ്താവനകൾക്കും ഉത്തരമെഴുതുക.

	പ്രസ്താവന	അച്ഛൻ/അമ്മ എത്രമാത്രം പങ്ക് വഹിക്കുന്നു		
		വളരെയേറെ പങ്ക് വഹിക്കുന്നു	കുറച്ചുമാത്രം പങ്ക് വഹിക്കുന്നു	ഒരുപങ്കും വഹിക്കുന്നില്ല
1	ദിവസവും പല്ലുതേയ്ക്കാൻ കുട്ടിയെ പ്രേരിപ്പിക്കുക			
2	കുട്ടി വേണ്ടപ്പോഴൊക്കെ മുഖം കഴുകുന്നുണ്ടോയെന്ന് ശ്രദ്ധിക്കുക			
3	കക്കൂസിൽ പോകുമ്പോൾ വെള്ളം ഉപയോഗിച്ച് വൃത്തിയാക്കുവാൻ നിഷ്കർഷിക്കുക			
4	കുട്ടി പതിവായി കുളിക്കുന്നുണ്ടോയെന്ന് ശ്രദ്ധിക്കുക.			
5	കുളിച്ചുകഴിഞ്ഞ് വൃത്തിയുള്ള വസ്ത്രം ധരിക്കാൻ കുട്ടിയോട് നിഷ്കർഷിക്കുക			
6	വസ്ത്രത്തിന്റെ അകവും പുറവും സ്വയം തിരിച്ചറിയുന്നതിനുള്ള കഴിവ് കുട്ടിയിൽ വളർത്തിയെടുക്കുക.			
7	ഉടുപ്പിലെ ബട്ടൺ ഇടാനും ഊരാനും ഉള്ള കഴിവ് കുട്ടിയിൽ വികസിപ്പിച്ചെടുക്കുക			
8	മുടിചീകി ഒതുക്കി വയ്ക്കുന്നതിന് കുട്ടിയെ പ്രേരിപ്പിക്കുക			
9	ഭക്ഷണം കഴിക്കുന്നതിന് മുമ്പ് കുട്ടിയുടെ കയ്യും വായയും കഴുകിക്കുക			
10	ആഹാരം വിളമ്പിത്തീരുന്നതുവരെ കാത്തിരിക്കാൻ കുട്ടിയെ പരിശീലിപ്പിക്കുക.			

	പ്രസ്താവന	അച്ഛൻ/അമ്മ എത്രമാത്രം പങ്ക് വഹിക്കുന്നു.		
		വളരെയേറെ പങ്ക് വഹിക്കുന്നു	കുറച്ചുമാത്രം പങ്ക് വഹിക്കുന്നു	ഒരുപങ്കും വഹിക്കുന്നില്ല
11	ഭക്ഷണമേശയിൽ പാത്രങ്ങൾ ഉപയോഗിച്ച് ശബ്ദമുണ്ടാകാതിരിക്കുവാൻ കുട്ടിയെ പരിശീലിപ്പിക്കുക.			
12	മററുള്ളവരുടെ ആഹാരം തട്ടിപറിക്കുന്നതിൽ നിന്നും കുട്ടിയെ പിൻതിരിപ്പിക്കുക			
13	ഭക്ഷണം കഴിക്കുമ്പോൾ സംസാരിക്കാതിരിക്കുവാൻ നിഷ്കർഷിക്കുക			
14	അമിതമായി ഭക്ഷണം കഴിക്കുന്നതിൽനിന്നു കുട്ടിയെ നിയന്ത്രിക്കുക			
15	പാത്രത്തിൽ നിന്ന് പുറത്ത് വീണുകിടക്കുന്ന ആഹാരസാധനങ്ങൾ കഴിക്കുന്നതിൽ നിന്നും കുട്ടിയെ നിരുൽസാഹപ്പെടുത്തുക			
16	ഭക്ഷണം കഴിച്ചുകഴിഞ്ഞ് പാത്രങ്ങൾ വൃത്തിയാക്കി വയ്ക്കുവാൻ കുട്ടിയോട് നിഷ്കർഷിക്കുക.			
17	ആഹാരത്തിനുശേഷം മേശ വൃത്തിയാക്കി വയ്ക്കുവാൻ കുട്ടിയെ പരിശീലിപ്പിക്കുക.			
18	ശരിയായ രീതിയിൽ ചെരുപ്പ് ഇടുവാൻ കുട്ടിയെ പരിശീലിപ്പിക്കുക			
19	കുട്ടി നഖം വൃത്തിയാക്കി സൂക്ഷിക്കുന്നുണ്ടോയെന്ന് ശ്രദ്ധിക്കുക.			
20	തുമ്മുകയോ, ചുമയ്ക്കുകയോ ചെയ്യുമ്പോൾ വായ് മൂടി വയ്ക്കുവാൻ കുട്ടിയോട് നിഷ്കർഷിക്കുക.			
21	ചുററുപാടുമുള്ള വസ്തുക്കളെ കുട്ടിയ്ക്ക് പരിചയപ്പെടുത്തുവാൻ സമയം കണ്ടെത്തുക,			
22	പരിചയമുള്ള വസ്തുക്കളെ കുറിച്ച് കുട്ടിയെകൊണ്ട് സംസാരിപ്പിക്കുന്നതിലൂടെ കുട്ടിയുടെ ആശയ വിനിമയത്തിനുള്ള കഴിവ് വളർത്തിയെടുക്കുക.			

പ്രസ്താവന	അച്ഛൻ/അമ്മ എത്രമാത്രം പങ്ക് വഹിക്കുന്നു		
	വളരെയേറെ പങ്ക് വഹിക്കുന്നു.	കുറച്ചുമാത്രം പങ്ക് വഹിക്കുന്നു	ഒരുപങ്കും വഹിക്കുന്നില്ല
23 സഹോദരങ്ങളുടെ പേരുകൾ പറയുവാൻ കുട്ടിയെ പ്രേരിപ്പിക്കുക.			
24 എണ്ണൽ സംഖ്യകൾ ക്രമത്തിൽ പറയാൻ കുട്ടിയെ പഠിപ്പിക്കുക			
25 കൈവിരലുകൾ ഉപയോഗിച്ച് എണ്ണാൻ കുട്ടിയ്ക്ക് പരിശീലനം നൽകുക			
26 വസ്തുക്കൾ ഉപയോഗിച്ച് എണ്ണാൻ കുട്ടിയെ പരിശീലിപ്പിക്കുക.			
27 നാണയങ്ങൾ ശരിയായി കൈകാര്യം ചെയ്യുവാൻ കുട്ടിയ്ക്ക്പരിശീലനംനൽകുക.			
28 കുട്ടിയുടെ കയ്യിൽ പൈസകൊടുത്ത് സാധനങ്ങൾ വാങ്ങിപ്പിക്കുക.			
29 രൂപ മിച്ചം വയ്ക്കാൻ കുട്ടിയെ പരിശീലിപ്പിക്കുക.			
30 കുട്ടിയെ സമയംനോക്കാൻ പഠിപ്പിക്കുക.			
31 ദിവസത്തിലെ സമയവ്യത്യാസം (രാത്രി/പകൽ) വ്യക്തമായി തിരിച്ചറിയുന്നതിനുള്ള പരിശീലനം നൽകുക.			
32 മാസം, ആഴ്ച, ദിവസം, തീയതി എന്നിവ തെററാതെ പറയുന്നതിനുള്ള കഴിവ് കുട്ടിയിൽ വളർത്തിയെടുക്കുക.			
33 കലണ്ടർ ഉപയോഗിക്കുവാൻ കുട്ടിയെ പരിശീലിപ്പിക്കുക.			
34 കുട്ടിയുടെ കൈപിടിച്ച് ശരിയായ രീതിയിൽ എഴുതാൻ സഹായിക്കുക			
35 സ്വയമായി എഴുതാൻ കുട്ടിയെ പ്രേരിപ്പിക്കുക.			
36 കുട്ടിയുടെ പഠനം സുഗമമാക്കാൻ ആവശ്യമായ സാഹചര്യങ്ങൾ നൽകുക.			

പ്രസ്താവന	അച്ഛൻ/അമ്മ എത്രമാത്രം പങ്ക് വഹിക്കുന്നു		
	വളരെയേറെ പങ്ക് വഹിക്കുന്നു	കുറച്ചുമാത്രം പങ്ക് വഹിക്കുന്നു	ഒരുപങ്കും വഹിക്കുന്നില്ല
37 പഠനസമയത്ത് കുട്ടി വരുത്തുന്ന തെററുകൾ അപ്പോൾതന്നെ തിരുത്തികൊടുക്കുവാൻ സമയം കണ്ടെത്തുക			
38 കുട്ടിയുടെ മനസ്സിന് വിഷമം ഉണ്ടാക്കാതെ അവൻെറ തെററുകൾ മനസ്സിലാക്കി കൊടുക്കുവാൻ ബോധപൂർവ്വം ശ്രമിക്കുക.			
39 സ്ക്കൂളിൽ പഠിപ്പിക്കുന്ന പാഠഭാഗങ്ങൾ വീട്ടിൽ വച്ചും പഠിപ്പിക്കുവാൻ സമയം കണ്ടെത്തുക			
40 മന്ദബുദ്ധികളായ കുട്ടികളുടെ വിദ്യാഭ്യാസപരമായ കാര്യങ്ങൾ ചർച്ച ചെയ്യുന്ന യോഗങ്ങളിൽ സംബന്ധിക്കുക.			
41 മന്ദബുദ്ധികളായ കുട്ടികളുടെ സ്ക്കൂളിൽനിന്നും ലഭിക്കുന്ന നിർദേശങ്ങളും തീരുമാനങ്ങളും പ്രാവർത്തികമാക്കുക.			
42 മന്ദബുദ്ധികളായ കുട്ടികൾക്കുവേണ്ടിയുള്ള സ്ഥാപനങ്ങളിലെ അദ്ധ്യാപകരക്ഷാകർത്തൃ സമിതിയുടെ പ്രവർത്തനങ്ങളിൽ പങ്കെടുക്കുക.			
43 കുട്ടിയ്ക്ക് താൽപര്യമുള്ള വിഷയങ്ങളെ കുറിച്ച് സ്വതന്ത്രമായി സംസാരിക്കാനുള്ള അവസരം കൊടുക്കുക			
44 കുട്ടിയുടെ വീട്ടിലുള്ള പെരുമാററത്തെ പററി അദ്ധ്യാപകർക്ക് അറിവ് കൊടുക്കുക.			
45 കുട്ടിയുടെ ക്ലാസ്സ്മുറിയിലുള്ള പെരുമാററ രീതി അദ്ധ്യാപകരോട് ചോദിച്ച് മനസ്സിലാക്കാൻ ശ്രമിക്കുക			
46 കുട്ടിയുടെ സ്വഭാവ വൈകല്യങ്ങൾ മാററി എടുക്കാനുള്ള മാർഗത്തെക്കുറിച്ച് അദ്ധ്യാപകരിൽ നിന്ന് അറിവ് നേടിയെടുക്കാൻ ശ്രമിക്കുക.			

പ്രസ്താവന	അച്ഛൻ/അമ്മ എത്രമാത്രം പങ്ക് വഹിക്കുന്നു		
	വളരെയേറെ പങ്ക് വഹിക്കുന്നു.	കുറച്ചുമാത്രം പങ്ക് വഹിക്കുന്നു	ഒരുപങ്കും വഹിക്കുന്നില്ല
47 കുട്ടിയുടെ കഴിവുകളെപ്പററി അദ്ധ്യാപകരുമായി സംസാരിച്ച് ശരിയായി വിലയിരുത്തുക.			
48 കുട്ടിയുടെ പഠനത്തിലുള്ള പ്രയാസങ്ങൾ അദ്ധ്യാപകരുമായി ചർച്ചചെയ്യുക			
49 അദ്ധ്യാപകരുടെ അഭിപ്രായം അനുസരിച്ചുള്ള പരിശീലനം കുട്ടിയ്ക്ക് നൽകാൻ ശ്രമിക്കുക			
50 മന്ദബുദ്ധികളായകുട്ടികളുടെ സ്ക്കൂളിൽ നടക്കുന്ന കലാകായിക മത്സരത്തിൽ പങ്കെടുക്കാൻ കുട്ടിയെ പ്രോത്സാഹിപ്പിക്കുക			
51 മന്ദബുദ്ധികളായ കുട്ടികളുടെ സ്ക്കൂളിൽ നടക്കുന്ന കലാകായിക മത്സരത്തിൽ സംഘാടകരായിരിക്കാൻ താൽപര്യം കാണിക്കുക			
52 മന്ദബുദ്ധികളായ കുട്ടികളുടെ സ്ക്കൂളിനു പുറമേ, മററു സംഘടനകൾ നടത്താറുള്ള കലാകായികമത്സരങ്ങളിൽകുട്ടിയെ പങ്കെടുപ്പിക്കാൻ മുൻകൈ എടുക്കുക			
53 കുട്ടിയുടെ പഠനത്തിൽ ഉണ്ടാകുന്ന ഓരോ വിജയത്തിനും കുട്ടിയെ അഭിനന്ദിക്കുക.			
54 കുട്ടിയുടെ പുരോഗതിയെക്കുറിച്ചുള്ള വിവരങ്ങൾ കാലാകാലം ശേഖരിച്ച് വയ്ക്കുക.			
55 കുട്ടിയുടെ ശാരീരിക വൈകല്യങ്ങൾ തരണം ചെയ്യാൻ സഹായിക്കുന്ന തരത്തിലുള്ള വ്യായാമങ്ങൾ പരിശീലിപ്പിക്കുക			
56 കുട്ടിയുടെ കൈകാലുകളുടെ ശരിയായ ചലനവും നിയന്ത്രണവും ത്വരിതപ്പെടുത്തുന്നതിന് സഹായിക്കുന്ന കളികൾ അവനെകൊണ്ടു ചെയ്യിപ്പിക്കുക.			

പ്രസ്താവന	അച്ഛൻ/അമ്മ എത്രമാത്രം പങ്ക് വഹിക്കുന്നു.		
	വളരെയേറെ പങ്ക് വഹിക്കുന്നു	കുറച്ചുമാത്രം പങ്ക് വഹിക്കുന്നു	ഒരുപങ്കും വഹിക്കുന്നില്ല
57 വൈകുന്നേരം കുട്ടിയോടൊപ്പം വീട്ടിനു പുറത്ത് കളിക്കുവാൻ സമയം കണ്ടെത്തുക			
58 കുട്ടിയുടെ ചെറിയ ശാരീരികാസ്വാസ്ഥ്യങ്ങൾക്ക് പോലും ഡോക്ടറെ കാണിക്കുക			
59 കുട്ടിയെ പതിവായി വൈദ്യപരിശോധനക്ക് വിധേയരാക്കുക			
60 കുട്ടിയ്ക്ക് വേണ്ട രോഗപ്രതിരോധ കുത്തിവയ്പുകൾ യഥാസമയം നടത്താൻ താൽപര്യം കാണിക്കുക			
61 കുട്ടിയുടെ കാഴ്ചശക്തി ഇടയ്ക്കിടെ പരിശോധിപ്പിക്കാൻ കൊണ്ടു പോകുക.			
62 കുട്ടിയുടെ ശ്രവണശക്തിയും അതിനോട് അനുബന്ധിച്ച വൈകല്യങ്ങളും യഥാസമയം കണ്ടുപിടിച്ച് ചികിത്സിപ്പിക്കുക.			
63 മന്ദബുദ്ധിയായ കുട്ടിയുടെമുമ്പിൽവച്ച് അവന്റെ അസുഖത്തെപററി സംസാരിക്കാതിരിക്കുവാൻ ശ്രദ്ധിക്കുക.			
64 കുട്ടിയെ ഒന്നിനും കൊള്ളാത്തവനായി മററുള്ളവർ ആക്ഷേപിക്കുമ്പോൾ അത് നിരുത്സാഹപ്പെടുത്തുക.			
65 വീട്ടിലെ മററംഗങ്ങൾ മന്ദബുദ്ധിയായ കുട്ടിയെ അനാവശ്യമായി വഴക്കുപറയുമ്പോൾ അതിന് എതിരായി പ്രതികരിക്കുക.			
66 കുട്ടിയുടെ വൈകല്യം പരിഗണിച്ച് അവൻ എന്ത് തെററുചെയ്താലും ക്ഷമയോടെ സഹിക്കുക			
67 കുട്ടിയുടെ ഭാഗത്തുനിന്നുള്ള പെരുമാററവൈകല്യങ്ങൾ അനുഭാവപൂർവ്വം പരിഗണിക്കുക.			

	പ്രസ്താവന	അച്ഛൻ/അമ്മ എത്രമാത്രം പങ്ക് വഹിക്കുന്നു		
		വളരെയേറെ പങ്ക് വഹിക്കുന്നു	കുറച്ചുമാത്രം പങ്ക് വഹിക്കുന്നു	ഒരുപങ്കും വഹിക്കുന്നില്ല
68	കുട്ടിയുടെ പെരുമാററത്തിൽ പ്രകടമാക്കുന്ന നിസ്സാരമായ പുരോഗതിപോലും മനസ്സിലാക്കി അത് അഭിനന്ദിക്കുക.			
69	കുട്ടി ചെയ്യുന്ന നല്ല പ്രവർത്തികൾക്ക് അപ്പോഴപ്പോൾ അംഗീകാരം നൽകാൻ ശ്രദ്ധിക്കുക.			
70	കുട്ടി എന്തെങ്കിലും നേട്ടങ്ങൾ കൈവരിക്കുമ്പോൾ ചെറിയ സമ്മാനങ്ങൾ നൽകി അവനെ/അവളെ സംതൃപ്തനാകാൻ ശ്രമിക്കുക.			
71	കുട്ടിയുടെ വിവിധ വൈകാരിക പ്രശ്നങ്ങൾ അദ്ധ്യാപകരുമായിസംസാരിക്കുക			
72	കുട്ടി എന്തു ചോദിച്ചാലും ക്ഷമയോടെ കേട്ട് ഉത്തരം പറയുക.			
73	കുട്ടിയുടെ ക്രിയാത്മകമായ കഴിവുകൾ കണ്ടുപിടിക്കാൻ ആത്മാർത്ഥമായി പരിശ്രമിക്കുക.			
74	കുട്ടിയിൽ പ്രകടമാകുന്ന കഴിവുകൾ വികസിപ്പിച്ചെടുക്കാൻ വേണ്ട നല്ല സാഹചര്യങ്ങൾ സൃഷ്ടിക്കുക			
75	കുട്ടിയുടെ അഭിരുചിക്ക് അനുസരിച്ചുള്ള വർണ്ണകടലാസുകൾ, ചായപെൻസിലുകൾ മുതലായവ വാങ്ങി കൊടുക്കുവാൻ ശ്രദ്ധിക്കുക.			
76	മന്ദബുദ്ധിയായ കുട്ടിക്ക് ഉചിതമായ കളിക്കോപ്പുകൾ വാങ്ങികൊടുക്കാൻ ശ്രദ്ധിക്കുക.			
77	കുട്ടിയുണ്ടാക്കുന്ന വസ്തുക്കൾ എന്തുതന്നെയായാലും അവ വീട്ടിൽ മററുള്ളവർ കാണുന്ന സ്ഥലത്ത് പ്രദർശിപ്പിക്കാൻ ശ്രദ്ധിക്കുക.			
78	ചെറിയ വീട്ടുജോലികൾ ചെയ്യുവാൻ കുട്ടിയ്ക്ക് അവസരങ്ങൾ സൃഷ്ടിക്കുക.			

പ്രസ്താവന	അച്ഛൻ/അമ്മ എത്രമാത്രം പങ്ക് വഹിക്കുന്നു.		
	വളരെയേറെ പങ്ക് വഹിക്കുന്നു	കുറച്ചുമാത്രം പങ്ക് വഹിക്കുന്നു	ഒരുപങ്കും വഹിക്കുന്നില്ല
79 കുട്ടിയ്ക്ക് കൊടുക്കുന്ന വാഗ്ദാനങ്ങൾ പാലിക്കുവാൻ ശ്രദ്ധിക്കുക			
80 ചെറിയ തെററുകൾക്ക് മന്ദബുദ്ധിയായ കുട്ടിയെ മററുള്ളവർ അമിതമായി ശിക്ഷിക്കുമ്പോൾ, അത് നിരുത്സാഹപ്പെടുത്തുക.			
81 മുതിർന്നവരുടെ സാന്നിദ്ധ്യത്തിൽ തന്നെക്കാൾ പ്രായം കുറഞ്ഞ കുട്ടികളുമായി കളിക്കുവാൻ മന്ദബുദ്ധിയായ കുട്ടിയ്ക്ക് അവസരം നൽകുക			
82 സഹോദരങ്ങളുമായി ഇടപെടാൻ കുട്ടിയ്ക്ക് കൂടുതൽ അവസരങ്ങൾ സൃഷ്ടിക്കുക			
83 കുട്ടി അയൽക്കാരുമായി കൂടുതൽ ഇടപെടാനുള്ള അവസരങ്ങൾ സൃഷ്ടിക്കുക			
84 വീട്ടിൽ ആദ്യമായി വരുന്ന സന്ദർശകരുമായി ഇടപെടാൻ കുട്ടിയെ അനുവദിക്കുക			
85 സ്വന്തക്കാരുടെ ഭവനം സന്ദർശിക്കുമ്പോൾ മന്ദബുദ്ധിയായ കുട്ടിയെ കൂടി കൊണ്ടുപോകുക.			
86 കുട്ടിയെ പൊതുസ്ഥലങ്ങളിൽ കൊണ്ടുപോകുവാൻ താല്പര്യം കാണിക്കുക			
87 കുട്ടിയെ പിറന്നാൾ ദിവസം ആരാധനാലയങ്ങളിൽ കൊണ്ടുപോകുവാൻ ശ്രമിക്കുക			
88 വീട്ടിലെ വിശേഷദിവസങ്ങളിൽ മററുകുട്ടികളെപോലെ സ്വതന്ത്രമായികളിക്കുവാൻ കുട്ടിയെ അനുവദിക്കുക			
89 കുട്ടിയെ ഉല്ലാസയാത്രയ്ക്ക് കൊണ്ടുപോകുക.			
90 കുടുംബത്തിലെ മററ് അംഗങ്ങൾക്ക് അസ്വസ്ഥത സൃഷ്ടിക്കുന്ന പ്രവർത്തികൾ കുട്ടി ചെയ്യുമ്പോൾ അവനെ/അവളെ ശിക്ഷിക്കുക.			

APPENDIX II

MANUAL OF DIRECTIONS FOR PARENT INVOLVEMENT SCALE

by

Dr. (Prof) MERCY ABRAHAM

Department of Education

University of Kerala

Trivandrum

1992

MANUAL OF DIRECTIONS FOR PARENT INVOLVEMENT SCALE

The Parent Involvement scale is a device for measuring the level of parental involvement in the education and management of mentally retarded children. As to its form, the scale consists of 90 statements intended to measure the three components identified as aspects indicating parental involvement viz, Personal care, Educational Care, and Health care (Physical, Mental & Social dimensions).

A three-point response (often, sometimes, never) is possible for the statements, and the responses may be marked on the scale by using tick (√) mark.

The Parent Involvement Score provide us with valuable information regarding the possible ways in which parents can intervene in the matters of their mentally retarded child's development By all the means, the results will serve as a valuable aid in the Guidance and Counselling of parents of mentally retarded children and others who are involved with such children.

DEVELOPMENT OF THE SCALE

The scale was developed following the conventional procedures of test development. The items included in the pretest were 109, the number of items in the three components being 25 (personal care), 38 (Educational care) and 46 (Health care).

The draft scale was administered on a representative sample of 200 parents of mentally retarded Childrenin the institution for the mentally retarded in Kerala. Out of these, 185 response sheets (Just half of the conventional number 370 for item analysis) were used for item analysis. Harper's chart * was used for estimating item descrimination. The items thus selected were used for the final scale.

DIRECTIONS FOR ADMINISTERING THE SCALE

The conditions under which the scale should be administered are, more or less, the same as those which should be observed in giving any test. However, the following points should specifically be borne in mind, while administering the scale.

(i) THE INVESTIGATOR'S PREPARATION.

The investigator should thoroughly familiarize himself with the scale and the Manual of Directions. He should, preferably, try to take the scale himself in a bona-fide manner, so that he can anticipate many of the doubts that can be raised during

---

* A. Edwin Harper, B. Dass Gupta and S. P. Sanyal, Item Analysis chart and Instructions, Delhi. Manasayan. 1962.

the administration of the scale This might help the investigator in foreseeing the problems of administration and prepare himself better for the conduct of the test.

(ii) APPROPRIATE RAPPORT WITH PARENTS BEFORE TEST ADMINISTRATION

The Investigator should make a conscious attempt to establish a proper rapport with the parents, so that the parents, can give their responses without any hesitation or bias

(iii) ENSURE CONFIDENTIALITY

The investigator should explain the purpose of the test to the parents, encourage them to have a positive and co-operative attitude towards the test, stimulate them to put forth genuine responses, and guarantee the confidential treatment of the findings

RELIABILITY AND VALIDITY OF THE SCALE

The scale is found to be reasonably valid and reliable, the details being as follows :

RELIABILITY

The reliability of the final scale was assessed, using the split-half technique. Corrected split-half coefficient calculated for the whole scale was 0.76, which shows that the scale developed is a reliable instrument for measuring parental involvement.

VALIDITY

The different procedure adopted in developing the parent involvement scale, especially the procedure of item selection, could be cited as evidence of the validity of the scale. But these procedures tell us only about the 'construct and 'internal, validity of the scale The external validity of the scale was assessed using 'teacher rating' as external criterion For this, the names of 100 parents of mentally retarded children under study, at random were listed out and given to their class teachers. The teachers were asked to rate the parents on a three point scale with respect to 'parental involvement' (High, Average or Low) and these teacher ratings were converted into scores, using the arbitrary scoring scheme, as shown below:

TEACHER-RATINGS OF THE PARENTAL INVOLVEMENT SCALE

High Parental Involvement	Average Parental Involvement	Low Parental Involvement
3	2	1

The teacher ratings were correlated with the scores on the Parent Involvement Scale, using product moment co-efficient of correlation (r) The correlation between teacher rating and test scores was 0.52, which indicates that the scale developed is a reasonably valid instrument for measuring parental involvement.

DIRECTIONS FOR SCORING

Hand scoring can be done by assigning the appropriate scores for the respective column as shown below

SCORING KEY

High Parental Involvement	Average Parental Involvement	Low Parental Involvement
3	2	1

The total parental involvement score can be obtained by totalling the individual scores assigned for all the 90 items Thus, the minimum and maximum score for the parent involvement scale will be 90 and 270 respectively.

REPORTING AND INTERPRETING THE SCORE

The totalling of the different items in the parent involvement scale yield a total score which is a fairly reliable index of the parental involvement in the education and management of mentally retarded children The High, Average or Low level of involement were interpreted as per the norms given below.

NORMS OF THE SCALE

Norms for the whole scale were determined following the conventional methods* adopted by researchers in the field of psychology and education.

---

* Carl R Rogers, A Test of Personality Adjustment - Manual of Directions, New York Association Press, 1981, p, 11.

The norms for the present scale are based upon a study of parents of 200 mentally retarded children in the institution for mentally retarded in Kerala. The score obtained by an individual can be interpreted with the help of the table of norms provided below

TABLE OF NORMS - CLASSIFICATION OF SCORES ON THE PARENT INVOLVEMENT SCALE

Low Parental Involvement	Average Parental Involvement	High Parental Involvement	Mean N=200
Below 184	184-249	250 or above	216-84

APPENDIX III

BASIC SKILLS ATTAINMENT TEST (BSA-TEST) FOR MENTALLY RETARDED CHILDREN
(Parts A, B, C, D, E & F)

By

Dr. (Prof.) MERCY ABRAHAM

Department of Education
University of Kerala
Trivandrum

1992

INSTRUCTIONS

Below given are some items for assessing the basic skills of mentally retarded children The 'method' and 'evaluation' to be followed for assessing each of the six basic skills is noted against the respective skills Kindly read the method and observe the child carefully before making final assessment with respect to each of the skills to be assessed Mark your answer in the appropriate column against each item.

SKILL	METHOD	EVALUATION	
PART A			
Self - Care Skills			
1	You may see if the child brushes teeth himself / herself.	Yes	No
2	You may see if the child washes hands and face independently	Yes	No
3	You may see if the child asks to go to the toilet	Yes	No
4	You may see if the child goes to toilet independently	Yes	No
5	You may see if the child washes self and dresses	Yes	No
6	You may see if the child washes self and dresses unaided after toileting	Yes	No
7	You may see if the child is able to name items used for personal hygiene such ae soap, deodorant	Yes	No
8	You may see if the child bathes self independently	Yes	No
9	You may see if the child faces problems in undressing himself / herself	Yes	No
10	You may see if the child can button / un button his / her clothes	Yes	No
11	You may see if the child combs his / her hair	Yes	No
12	You may see if the child is able to drink by himself / herself	Yes	No

SKILL	METHOD	EVALUATION
13 You may see if the child is able to eat by himself / herself	Yes	No
14 You may see if the child has incidents of wetting or soiling his / her clothes	Yes	No
15 You may see if the child is able to walk independently	Yes	No
16 You may see if the child is able to walk upstairs independently	Yes	No
17 You may see if the child avoids dangers such as obstacles while walking	Yes	No
18 You may see if the child goes to the neighbouring house and comes back (unsupervised)	Yes	No
19 You may see if the child crosses streets (unsupervised)	Yes	No
20 You may see if the child uses public transport independently	Yes	No

PART B

Reading Skills

1 You may ask children to match letters from the BSA-kit as shown below :	Yes	No

A A
C C
D D
E E

2 You may ask children to match letters from the BSA-kit as shown below .	Yes	No

ആ ആ
വ വ
പ പ
ത ത

SKILL	METHOD	EVALUATION	
	3 You may ask children to match figures from the BSA-kit as shown below.	Yes	No
	1 1 3 3 5 5 7 7		
	4 You may see if the child is able to identify and guess the complete form from the given suggestive incomplete clues	Yes	No
	A D F G		
	5 You may see if the child is able to identify and guess the complete form from the given suggestive incomplete clues	Yes	No·
	ആ വ ന ദ		
	6 You may see if the child is able to identify and guess the complete form from the given suggestive incomplete clues	Yes	No
	3 8 4 7		
	7 You may ask children to match words from the BSA - Kit as shown below :	Yes	No
	പാവ പാവ പറവ പറവ വര വര വാര വാര		

SKILL — METHOD — EVALUATION

8 You can see if the child is able to read the words shown below . — Yes — No

പാവ, പറവ, വര, വാര

9 You may ask children to read the numbers up to 20 — Yes — No

10 You may ask children to read the alphabet from A to Z — Yes — No

11 You can see if the child is able to read the words shown below . — Yes — No

STOP, DANGER, POISON

12 You may ask children to read his / her name — Yes — No

13 You may see if the child can read his / her own address — Yes — No

14 You may see if the child can read the names of family members — Yes — No

15 You may see if the child can read the names of class mates — Yes — No

PART C

Writing Skills

1 You may see if the child is able to copy the illustration given below — Yes — No



2 You may ask the child to draw a line as shown below : — Yes — No

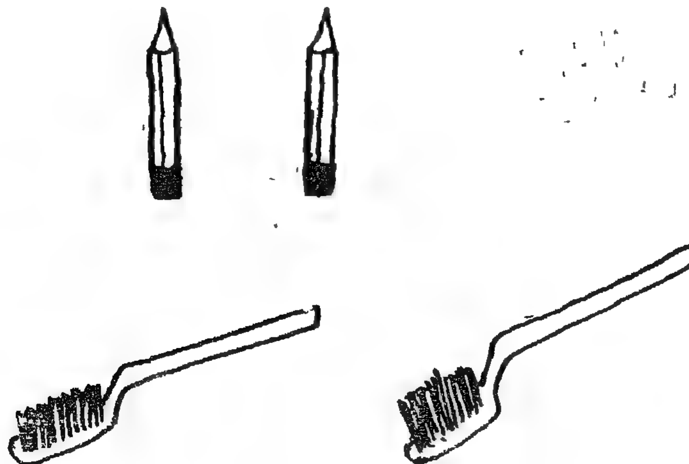
SKILL	METHOD	EVALUATION	
3	You may ask the child to copy a circle as shown below.	Yes	No
4	You may see if the child can copy the following illustration	Yes	No
5	You may ask the child to draw the illustration given below:	Yes	No
	∩ ɔ U C		
6	You may see if the child is able to copy the illustration given below:	Yes	No
7	You may ask the child to copy the figure given below:	Yes	No
8	You may see if the child is able to copy as shown below:	Yes	No
9	You may ask the child to copy the figure shown below:	Yes	No

SKILL	METHOD	EVALUATION	
10	You may ask the child to copy the following alphabet റ ന ത ട ഗ ശ	Yes	No
11	You may see if the child can write his / her name	Yes	No
12	You may see if the child can write his / her address	Yes	No
13	You may see if the child can write the names of his / her family members	Yes	No
14	You may see if the child can write the names of his / her friends	Yes	No
15	You may see if the child can write numbers up to twenty five when dictated	Yes	No

PART D

Arithmetic Skills

1	You may see if the child is able to match similar objects as shown below :	Yes	No

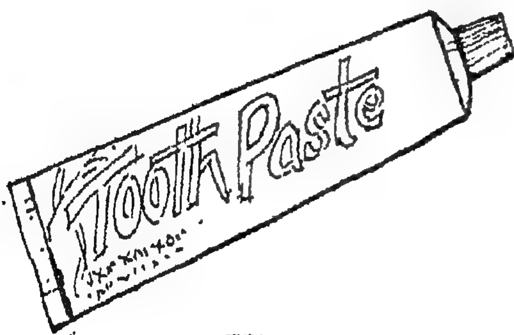


SKILL	METHOD	EVALUATION	
	2 You may see if the child is able to identify familiar objects as shown below	Yes	No





	3 You can see if the child is able to match objects with picture of same objects as shown below ·	Yes	No









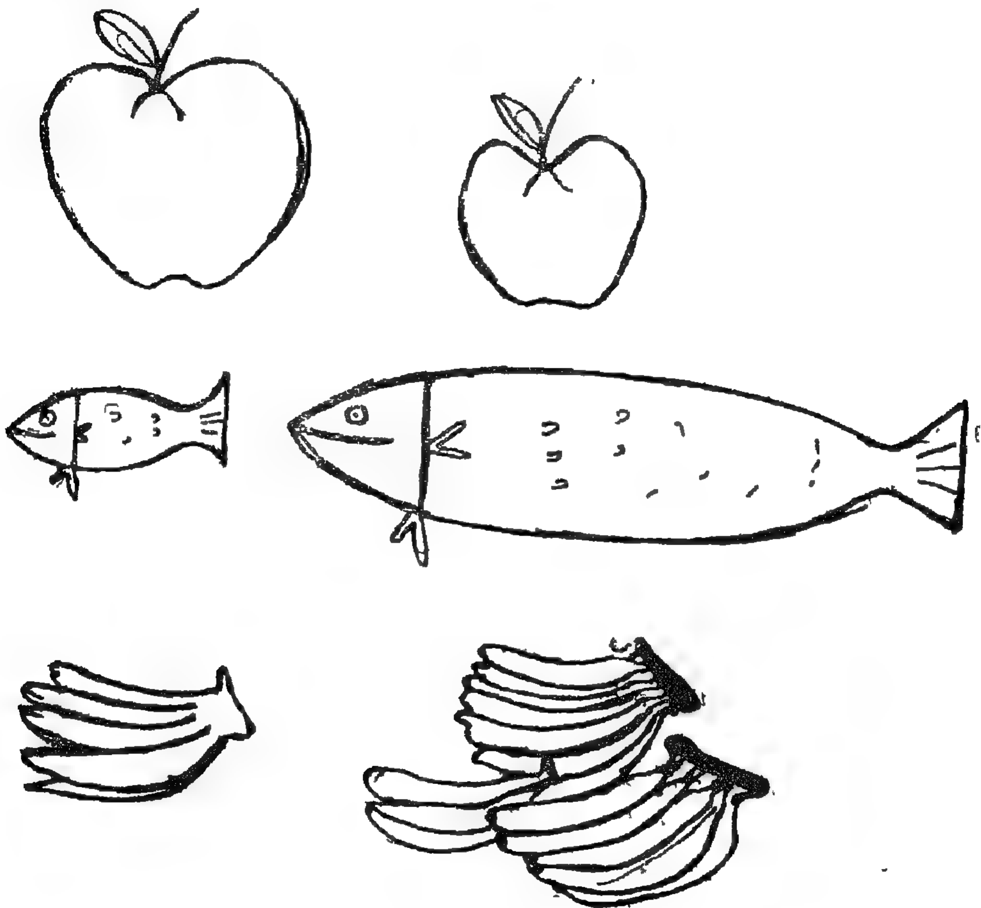
SKILL	METHOD	EVALUATION	
	4 You can see if the child is able to match identical figure from figures provided in the BSA-kit which are similar to the illustration given below	Yes	No
	5 You may see if the child is able to match colours	Yes	No
	6 You may see if the child is able to see relationship between the part so that they form a complete, meaningful whole For example, children can be asked to fit in the pieces of a puzzle The figures below illustrates such puzzles	Yes	No
	7 You may see if the child is able to identify colours. You may point to different colours and ask the child to name them	Yes	No

SKILL	METHOD	EVALUTION
8 You can see if the child is able identify and name the basic shapes for example, circle, square, triangle and rectangle as shown below ·	Yes	No
9 You may ask children to match equal numbers with the help of objects as shown below	Yes	No
★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★		
10 You may ask children to match numbers	Yes	No
11 Children may be asked to pick up specified numbers of objects	Yes	No
12 Ask children to count by rote 1 to 10	Yes	No
13 Ask children to name the numerals 1 to 10	Yes	No
14 Place object s of same shape serially and ask children to identify the position of objects (second, third, fifth)	Yes	No



15 You may see if the child under stands concepts of big and small, long and short, few or many. In the following illustration you may ask the child to point to big or small, long or short, few or many

Yes No

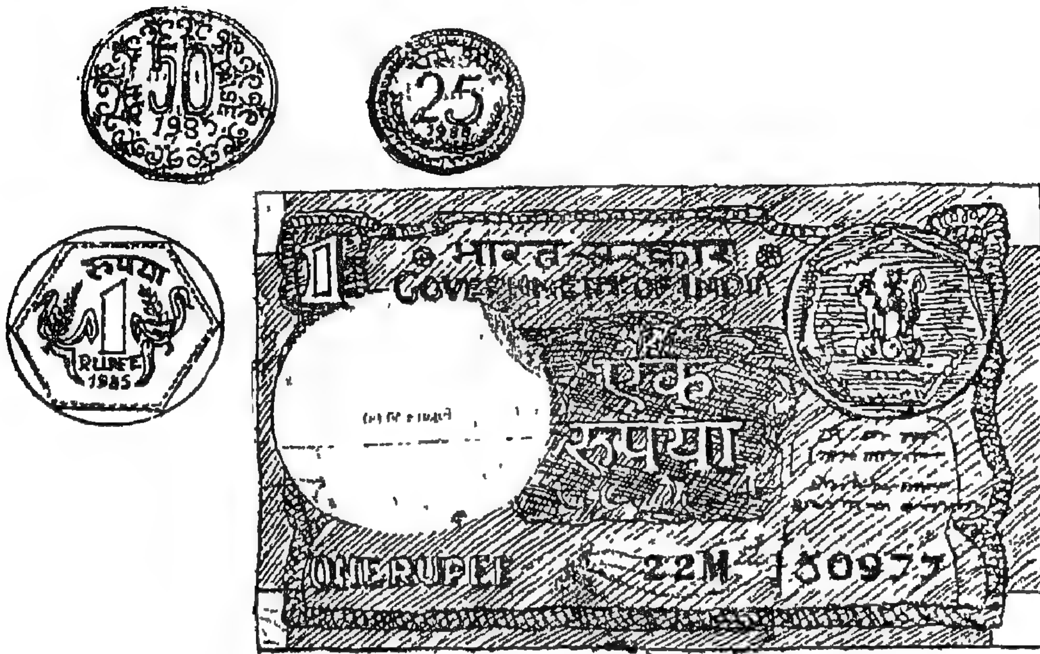


16 You may ask children to grade objects according to size

Yes No

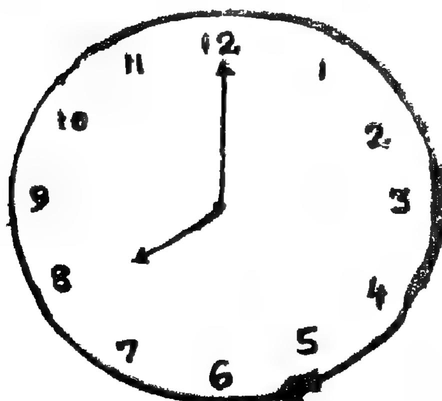


17 You may see if the child is able to name coins and currency notes as shown below — Yes — No



18 You may see if the child under stands the value of money — Yes — No

19 You can ask children to tell the position of long and short arms in a clock The clock provided in the BSA - Kit can be used for this purpose — Yes — No



SKILL	METHOD	EVALUATION	
	20 You can see if the child can tell his / her daily schedule of activities in a proper sequence and name the time of the day	Yes	No
	PART E		
	Communication skills		
	1 You may see if the child responds to sounds	Yes	No
	2 You may see if the child responds to gestures	Yes	No
	3 You may see if the child follows instructions such as 'go and get me a chalk box'	Yes	No
	4 You may see if the child can name objects in her / his immediate environment such as chair, table, board etc when asked	Yes	No
	5 You may see if the child is able to tell her / his name correctly	Yes	No
	6 You may ask children to name common objects when shown	Yes	No
	7 You may see if the child is able to points familiar objects when asked	Yes	No
	8 You may see if the child is able to name his / her body parts	Yes	No
	9 You may see if the child is able to identify the action of people, shown below, by using verbs.	Yes	No



SKILL	METHOD		EVALUATION
10	You may see if the child is able to identify his / her belongings	Yes	No
11	You may see if the child is able to indicates food items	Yes	No
12	You may see if the child is able to use appropriate word for toileting	Yes	No
13	You may present to the child some objects and ask his / her 'what is this'	Yes	No
14	You may present picture of common objects, see if the child is able to recognize the picture when described by its use	Yes	No
15	You may see if the child is able to identify his / her sex	Yes	No

PART F

Socialskills

You may observe whether the child exhibits the following behaviours :

1	Respond to smile / laughter with similar behaviour	Yes	No
2	Responds to own name	Yes	No
3	Takes part in a game with another child	Yes	No
4	Plays co-operatively with others	yes	No
5	Follow rules in a group game	Yes	No
6	Chooses own friends	Yes	No
7	Shares object when requested with another child.	Yes	No
8	Greet others	Yes	No
9	Makes a choice when asked (favourite toy / food / dress)	Yes	No
10	Helps in domestic tasks	Yes	No
11	Takes on minor responsibilities	Yes	No
12	Carries out routine tasks by himself	Yes	No
13	Repeat rhymes, songs and dances with others	Yes	No
14	Goes on simple errands out side the house and school	Yes	No
15	Makes minor purchases	Yes	No

NATURE AND PURPOSE OF THE TEST

The Basic Skills Attainment Test (BSA-Test) for mentally retarded children is a device to assess the level of attainment of mentally retarded children in six basic skills viz , self-care skills Reading skills, Writing skills, Arithmetic skills, Communication skills and Social skills As to its form, the test consists of 100 items in six parts (Parts A, B, C, D, E & F) which are meant to measure the six basic skills mentioned above, the number of items in the different sections being as shown below:

Part A :	Self-care skills	- 20 items
Part B :	Reading skills	- 15 items
Part C :	Writing skills	- 15 items
Part D :	Arithmetic skills	- 20 items
Part E :	Communication skills	- 15 items
Part F	Social skills	- 15 items

A Basic skills Attainment Kit (BSA-Kit) consisting of blocks, pictures, photos, flash cards, real objects like pen, pencil, coins, notes, chalk, brush and comb is used for facilitating assessment of the different skills mentioned.

The test scores provide us with valuable information regarding the level of attainment of the mentally retardeded children in the basic skills to be attained By all means, the test results will serve as a valuable aid in the field of Special Education.

DEVELOPMENT OF THE BSA-TEST

The test was developed, following mainly the guidelines provided in the 'Functional Assessment Guide' developed by the National Council of Educational Research & Training (NCERT), New Delhi (Jangira et al , 1990)[1] and the guidelines prepared by the National Institute for the Mentally Handicapped (NIMH), Hyderabad IOWA Test of Basic Skills prepared at the University of IOWA was also helpful in this context (Hieronymus et al, 1986).[2]

The draft items were shown to teachers and experts in the field of special education and their suggestions were considered for selecting, revising and editing of items. The draft test consisting of 145 items was administered on a representative sample of 200 mentally retarded children in the institutions for the mentally retarded in Kerala to decide the suitability of items for measuringthe different skills

---

1 Jangira, N K. et al, (1990) **Functional Assessment Guide : A Hand book for Primary Teachers.** Central Resource Centre, NCERT, New Delhi.

2 Hieronymus, A N , Hoover, H D. and Lindquist, E F. (1986). **IOWA Test of Basic Skills (Level 6 Form G).** Chicago: Riverside Publishing Company.

The test scores were used for determining the item discrimination. For the final test, 100 items representing the six basic skills were selected, the details being as shown earlier.

DIRECTIONS FOR ADMINISTERING THE TEST

While administering the test, the following points should be borne in mind :

1 The test administrator should thoroughly familiarize himself/herself with the test and the Manual of Instructions. He should, preferably try to administer the test on one or two children, so that he can anticipate any problem that may arise during the administration of the test.

2 Proper rapport should be made with the mentally retarded children so as to develop in them a co-operative attitude towards taking the test.

3 Disturbances are to be avoided at all cost, since the span of attention of mentally retarded children is low

4 The co-operation of the class teachers should be sought in the administration of the tests, so that test administration would be easier in the presence of the class teachers, who are more familiar to the mentally retarded children.

5 There is no time-limit for the test The test should be administered individually to each child and assessment should be made on the spot in the appropriate coloumns provided for each item

RELIABILITY AND VALIDITY OF THE BSA-TEST

RELIABILITY

The reliability of the BSA-Test was assessed using the Test Retest method (Anastasi · 1955, pp 105-106) [1] The test was administered twice on fifty mentally retarded children with an interval of one month in between The test scores were used for calculating the reliability co-efficient The reliability co-efficient in this case is simply the correlation of the scores obtained by the same subjects on two administrations of the test The reliability of the test was calculated by using the formula suggested by Garrett (1985, pp. 138-139) [2]. The 'r' values obtained for the whole test and for the component tests are given below .

---

1 Anne Anastasi (1955). **Psychological Testing**. New York · The Mac-Millian Company, pp 105-106

2 Henry E. Garrett (1985) **Statistics in Psychology and** Education. Bombay : Vakils, feffer and Simons, pp 138-139.

TEST-RETEST RELIABILITY COEFFICIENTS FOR THE BSA-TEST

BSA-Test Components	Corrected Value of reliability co-efficients
Whole test	0.64
PART A: Self-care skills	0.69
PART B: Reading skills	0 67
PART C: Writing skills	0 61
PART D: Arithmetic skills	0.64
PART E: Communication skills	0 65
PART F: Social skills	0 63

The values quoted above show that the test developed is a reasonably reliable instrument for assessing the attainment of basic skills in mentally retarded children.

VALIDITY OF THE BSA-TEST

The different procedures adopted in developing the BSA-Test, particularly the procedure of item selection, could be cited as evidence of the 'internal' validity of the test The 'external' validity of the test was established by using 'teacher rating' as an 'external' criterion The teachers were asked to rate the mentally retarded children on a three point scale (High, Average, Low), with respect to each of the basic skills mentioned earlier and the ratings were converted into scores using an arbitrary scoring scheme The scores thus obtained by teacher rating were correlated with the scores obtained by the children in the administration of the BSA-Test. The correlation co-efficients obtained between teacher rating and the test scores are presented below.

CORRELATION CO-EFFICIENTS BETWEEN TEACHER RATING AND THE SCORES ON BSA-TEST

Test Components	Correlation Co-efficients
Whole test	0 52
PART A. Self-care skills	0 54
PART B: Reading skills	0 52
PART C: Writing skills	0 50
PART D: Arithmetic skills	0 51
PART E: Communication skills	0 53
PART F: Social skills	0 54

The above values show that the test developed is a reasonably valid instrument for assessing the basic skills of mentally retarded children.

DIRECTIONS FOR SCORING

Hand scoring can be done accurately, assigning one point credit to each 'Yes' answer The score for each sub-test is the number of 'Yes' answers for that particular sub-test. The sum of the scores on the sub-tests yield the total score for the whole test.

REPORTING AND INTERPRETING THE SCORE

Analysis of the test scores yield six different scores as the following '

1 Self-care skills score-indicates the level of attainment of mentally retarded children in Self-care skills.

2 Reading skills score - indicates the level of attainment of mentally retarded children in Reading skills.

3 Writing skills score - indicates the level of attainment of mentally retarded children in Writing skills

4 Arithmetic skills score - indicates the level of attainment of mentally retarded children in Arithmetic skills.

5 Communication skills score - indicates the level of attainment of mentally retarded children in Communication skills

6 Social skills score - indicates the level of attainment of mentally retarded children in Social Skills.

NORMS OF THE SCALE

The table provides the details to be observed in following the norms and interpreting the scores.

TABLE OF NORMS-CLASSIFICATION OF SCORES BASED ON BSA-TEST

	Low	Average	High	Mean (N=200)
Self-care skills	Below 11	11-16	17 or above	14 25
Reading skills	Below 6	6-11	12 or above	9.06
Writing skills	Below 7	7-12	13 or above	10.37
Arithmetic skills	Below 9	9-15	16 or above	13 26
Communication skills	Below 8	8-13	14 or above	11.26
Social skills	Below 7	7-13	14 or above	10.72

APPENDIX V

General Data Sheet for Mentally Retarded Children

1. Name of the child : Male/Female

2. Name of the institution :

3. Locality : Urban/Rural

4. Type of institution : Residential / Non-residential/ Residential-cum-Day-centre

5. Level of mental retardation : Mild / Moderate / Severe

APPENDIX VI

GENERAL DATA SHEET FOR PARENTS

1. Name and address of the parent : Male/female

2. Name of the child and the institution :

3. Locality : Rural/Urban

4. Educational Qualifications :

5. Occupation :

6. Monthly income : Rs.

INTERVIEW SCHEDULE (for teachers)

1. Name Male/Female

2. Age Religion: Caste:

3. Educational Qualifications:

4. Details of special training in teaching the mentally retarded, if any (give details)

5. Total teaching experience:

   a. in institution for mentally retarded

   b. in other institution (if any)

6. Name and other details of the school working at present:

7. Reasons for choosing the present occupation:

8. Extent of interest in the present job: To a great extent/ To some extent/ Not at all

9. Opinion regarding the level of parental involvement in the education and management of mentally retarded children (Please express your opinion with respect to each of the student in your class in the additional sheet provided, giving the names of students) High/Average/Low

10. Opinion regarding the level of attainment of mentally retarded children in the following six basic skills (using the list of students provided separately, indicate the level of attainment of each student in your class).

Basic skills	Level of attainment High/Average/Low
1. Self-care skills	
2. Reading skills	
3. Writing skills	
4. Arithmetic skills	
5. Communication skills	
6. Social skills	